काश्मीर संघर्ष-पथ पर

लेखक

श्री ठाकुर राजदेव जमवाल

प्रकाशक

मास्टर डी० आर० लिल्ला

पुस्तक विक्रेता

लालबाज़ार, त्रिमलगिरी, सिकन्दराबाद

आंध्र-प्रदेश

समर्पण

उन शहीदों के चरण कमलों में सादर समर्पित, जिन्होंने 'काश्मीर रक्षा महायज्ञ' में हँसते-हँसते अपने प्राणों की आहुति दे दी और अमरपद प्राप्त किया। जो भारत-काश्मीर मिलाप के हेतु अपनी उठती जवानी भेंट कर, सदैव के लिए भारतीय इतिहास की गौरव-गाथा बन कर रह गये।

लेखक की ओर से विनम्र निवेदन

भारत के शिरोमुकुट काश्मीर को धरती का स्वर्ग होने के अतिरिक्त, करोड़ों भारतीयों के हृदय की धड़कन भी कहा जा सकता है। जिस प्रकार किसी प्राणी का जीवन, उसकी हृदय-गति से संबद्ध होता है, ठीक उसी प्रकार भारत रूपी शरीर के अन्दर उसके काश्मीर रूपी हृदय की धड़कन को भी समझना चाहिए। आज यदि कोई जम्मूँ-काश्मीर निवासी भारत के किसी भी नगर अथवा ग्राम में पहुँच जाता है, तो वहाँ के सर्वसाधारण उस पर काश्मीर के प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और विशेषतः राजनीतिक विषयों के सम्बन्ध में प्रश्नों की एक बौछार-सी लगा देते हैं। केवल इसी एक उदाहरण से यह अनुमान लगाया जा सकता है, कि आज 'काश्मीर' शब्द का कितना महत्त्व, इससे सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने की कितनी प्रबल उत्कंठा तथा अभिरुचि जन-साधारण में है। स्वयं काश्मीर-निवासी होने के नाते, मेरा इस छोटी-सी पुस्तक के लिखने का केवल यही उद्देश्य है कि प्रत्येक काश्मीर-प्रेमी को भूत तथा वर्तमान काश्मीर के संघर्ष की एक निष्पक्ष, संक्षिप्त तथा सर्वतोमुखी झाँकी दिखायी जाए। तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करने के बजाए, उन्हें यथा-सम्भव उसी प्रकार संकलित करने का भरसक प्रयत्न किया गया है जिस प्रकार वे पूर्वरचित अनेक पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों में प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त पुस्तक में वर्णित अन्य बातें,

लेखक की निजी जानकारी तथा विश्वासपूर्ण खोज के फल-स्वरूप प्रकाशित की जा रही हैं।

यद्यपि मेरा राजनीति से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है तथापि पुस्तक को अधिकाधिक सम्पूर्ण बनाने के लिए मैंने विभिन्न विचार रखने वाले, काश्मीर के प्रसिद्ध नेताओं तथा उनसे संबद्ध राजनीतिक दलों का यथास्थान संक्षिप्त परिचय देने का प्रयत्न भी किया है।

पुस्तक आपके कर-कमलों तक पहुँच रही है, मैं अपने इस उद्देश्य में कहाँ तक सफल हुआ हूँ, इसका निर्णय प्रिय पाठकगण स्वयं ही करेंगे। पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने तथा इसकी त्रुटियों को दूर करने के लिए जो महानुभाव अपने सुझाव भेजने की कृपा करेंगे उन्हें साभार स्वीकार किया जाएगा और दूसरे संस्करण में यथोचित संशोधन कर दिये जाएँगे।

इस पुस्तक की तैयारी में बहुत से महानुभावों तथा इष्ट मित्रों ने किसी न किसी रूप में सहयोग दे कर मुझे प्रोत्साहित किया है। अन्ततः मैं उनके प्रति आभार प्रकट करता हुआ उन सब का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

विनीत

'जमवाल'

भौगोलिक तथा सांस्कृतिक झाँकी

सृष्टि के शृंगार काश्मीर को यदि नन्दनवन कहा जाए तो यह कोई अतिशयोक्ति न होगी । इसके अंग-प्रत्यंग सौन्दर्य का भंडार हैं । इसके हिमाच्छादित, गगनचुम्बी पर्वत, कल-कल ध्वनि करती हुई तीव्रगामिनी नदियाँ, झर-झर करते हुए जल-प्रपात तथा अमृत-सा मीठा जल पिलाने वाले झरनों को देख कर प्रत्येक दर्शक मन्त्र-मुग्ध-सा रह जाता है ।

चारों ओर धान के लहलहाते हुए खेत, हरे भरे सब्ज़ाजार, रंग-रंग की पुष्प वाटिकाएँ, देवदार, चील व चिनारों की ठण्डी-ठण्डी सुगन्धित हवाएँ रोगियों को भी नव-जीवन प्रदान करती हैं । वह अथाह जल भण्डार, झील डल, भी इसी घाटी में है, जिसमें खिले हुए सुर्ख़ रंग के सुन्दर कमल, तथा रंग-बिरंगे फूलों के तैरते हुए उद्यानों की मनोहर शोभा देखते ही बनती है । चाँदनी रात में, जल के अन्दर दिखाई देने वाली वे रजत-चन्द्र-कलाएँ इसकी अनुपम छटा को चार चाँद लगा देती हैं । इस दृश्य को देखने से तो ऐसा प्रतीत होता है, मानो प्रकृति चारों ओर चाँदी छिटका-छिटका कर एक खिलवाड़ ही कर रही हो । ऋतुराज बसन्त में, घाटी की अगणित झीलों व वाटिकाओं में व अन्य पुष्पों की अनन्त सौंदर्य-राशि लहराने लगती है और काश्मीर का गुलाबी यौवन जैसे मधु निखार पर आ जाता है । बहार में यदि यह

घाटी फूलों से लद जाती है तो पतझड़ में पेड़ों के पत्ते लाल हो उठते हैं और चिनार आग-से दहक उठते हैं। सम्राट जहाँगीर काश्मीर से वापस आ रहा था कि वह मार्ग में ही सख्त बीमार हो गया। इस दशा में जब उसके मन्त्रियों ने उसकी अन्तिम इच्छा पूछी तो उसके होठों से निकला... "सिर्फ़ काश्मीर।" फ़ारसी के कवि ने लिखा है :

अज शाहे जहाँगीर दमे नज़ा चूँ जुस्तबन्द
बा ख़्वाहिशे दिल गुफ्त कि कश्मीर दिगर हैच।

अर्थात् मरने के बाद स्वर्ग किसने देखा है, पर जीते जी जिसने काश्मीर की स्वर्गिक झाँकी देखी है, वह बार-बार वहाँ क्यों न जाना चाहेगा। इसके विचित्र पशु-पक्षी तथा उनकी भाँति-भाँति की रसीली बोलियाँ बलात् ही हर व्यक्ति को अपनी ओर खींच लेती हैं और उसी मस्ती में वह किसी कवि की ये पक्तियाँ मन ही मन में गुनगुनाने लगता है :

अगर फिरदोस बर रूए जमीं अस्त,
हमी अस्तो, हमी अस्तो, हमी अस्त ।।

अर्थात् स्वर्ग नाम का यदि कोई स्थान इस धरती पर है, तो वह यही है, यही है और यही है। एक अन्य कवि ने भी काश्मीर-सुषमा को इन शब्दों में वर्णित किया है, "जिसने काश्मीर नहीं जाना, उसने प्रकाश नहीं पहचाना।"

पुण्य तथा देवभूमि

काश्मीर के प्राचीन भवन, उनके खँडहर, यहाँ के निवासियों के रीति-रिवाज तथा अन्य बातों का अध्ययन करने से

यह बात स्पष्ट रूप में कही जा सकती है कि आज भी इस प्रदेश में तीनों संस्कृतियों (बौद्ध, हिन्दू तथा मुस्लिम) का एक दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित ह। जिस प्रकार एक ईसाई के लिए यरोशलम, तथा मुसलमान के लिए अरब के मक्का, मदीना आदि स्थान पवित्र तथा श्रद्धास्पद हैं, ठीक उसी प्रकार प्रत्येक भारतीय के लिए देव-भूमि काश्मीर की महत्ता है। आज भी इसके कटड़ा-स्थित, प्रसिद्ध तीर्थ वैष्णुदेवी, और काश्मीर के श्री अमरनाथ जी की यात्रा के लिए प्रतिवर्ष भारत के कोने-कोने से हज़ारों ही श्रद्धालु जयघोष करते हुए जम्मूँ-काश्मीर राज्य में प्रवेश करते हैं। यहाँ ही हज़रत-बल श्रीनगर की वह प्रसिद्ध मस्जिद है, जिस के बारे में हमारे मुसलमान बंधुओं की यह धारणा है कि इसकी चहारदीवारी के अन्दर इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद साहब के सिर का पवित्र बाल रखा गया है। इसी कारण वे इस स्थान को अत्यन्त श्रद्धा तथा आदर की दृष्टि से देखते हैं।

एक समय था, जब कि भारत पर अशोक तथा कनिष्क जैसे महान्, प्रतापी सम्राट राज्य कर रहे थे। उस समय काश्मीर बौद्ध धर्म के ज्ञान-प्रसार का एक मुख्य केन्द्र बना हुआ था। लद्दाख प्रान्त के कर्गिल नामक स्थान पर पत्थर से काट कर बनायी गयी, महात्मा बुद्ध की पच्चीस फीट ऊँची मूर्ति आज भी इस ऐतिहासिक सत्य की साक्षी दे रही है। लद्दाख की राजधानी लेह से लगभग ३० मील दक्षिण-पूर्व की ओर हेमिस नामक स्थान पर एक अत्यन्त प्राचीन बौद्ध गोम्पा

(धर्म स्थान) है, जहाँ महात्मा बुद्ध की स्वर्ण-मूर्ति के दर्शनार्थ हज़ारों श्रद्धालु दूर-दूर से आया करते हैं। यहाँ तक कि भारत के प्रधानमन्त्री पंडित नेहरू भी अपनी लद्दाख-यात्रा के समय इस गोम्पा के दर्शन कर आये थे। यह भी कहा जाता है कि श्री गुरु नानक देव जी अपनी तिब्बत-यात्रा के समय यहाँ पधारे थे। आज भी मटन में उनका एक गुरुद्वारा मौजूद है। स्थान-स्थान पर पाये जाने वाली अनेक बावलियों तथा जीर्ण मन्दिरों के विषय में आज भी ये कथाएँ प्रचलित हैं कि इन सब का निर्माण पाण्डवों द्वारा उस समय किया गया था, जब कि वे बनवास में थे।

इस पुण्य स्थल के प्रत्येक कण को हज़ारों ही शहीदों ने अपने बेक़रार ख़ून से सींचा है। उन्हीं देशभक्तों की पवित्र अस्थियों की खाद पा कर, आधुनिक जम्मूँ-काश्मीर बड़ी ही तीव्र गति से उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है। आज काश्मीर का बच्चा-बच्चा संसार को चेतावनी दे रहा है कि तीर्थ रूपी इस पावन धरती पर किसी भी विध्वंसक शक्ति के अपवित्र पग नहीं रखने दिये जाएँगे। आज संसार में ऐसी कोई भी शक्ति नहीं है, जो भारत-रूपी शरीर से उसकी काश्मीर-रूपी अमर आत्मा को पृथक् कर सके और यदि किसी साम्राज्यवादी गुट ने ऐसी मूर्खता करने का दुस्साहस किया भी तो उसके साथ कैसे निपटा जाएगा —— कवि 'निर्भीक' के इन शब्दों में सुनिए :

जो नज़रे बद से देखे वह आँख निकल जाए,
यह अज़म हैं कर बैठे, कश्मीर तेरी ख़ातिर ।
हम तेरे पसीने पर खूँ अपना बहा देंगे,
चूमेंगे मौत को भी कश्मीर तेरी ख़ातिर ।।

हमारी यह पुण्य भूमि तथा भारतमाता का रत्न-जटित शिरोमुकुट, शताब्दियों से भारत का एक अटूट अंग चला आ रहा है और भविष्य में भी रहेगा । इसके प्रत्येक प्रेमी की जानकारी के लिए निम्नलिखित भौगोलिक तथा ऐतिहासिक बातों का संक्षिप्त ज्ञान अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगा । इसलिए आइए, अगले कुछ पृष्ठों में आपको काश्मीर की एक झाँकी दिखलायी जाए ।

भौगोलिक नाम तथा स्थिति

इस राज्य का पूरा नाम जम्मूँ-काश्मीर राज्य है । यह भारत के सीमान्त उत्तरी भाग में स्थित है । इसके उत्तर तथा उत्तर-पूरब में रूस (यू० एस० एस० आर०), चीन, तिब्बत आदि देश हैं और पश्चिम तथा दक्षिण पश्चिम में पाकिस्तान है । दक्षिण में पंजाब के पूर्वी भाग की सीमाएँ आ मिलती हैं ।

प्राकृतिक विभाजन

पाकिस्तान-अधिकृत गिलगित्त एजेन्सी को छोड़, इस समय राज्य के तीन मुख्य भाग हैं । उत्तर में सिन्ध नदी की घाटी, (लद्दाख प्रान्त) मध्य में जेहलम नदी की घाटी (काश्मीर प्रान्त) और दक्षिण में जम्मूँ प्रान्त । लद्दाख प्रान्त,

यह कर्राकरम पर्वत-शृंखला का निचला भू-भाग है, जो पूरब की ओर से तिब्बत तथा काश्मीर (लद्दाख) को एक-दूसरे से अलग करता है। इस पर्वत-माला की कई चोटियाँ पच्चीस हज़ार फीट तथा इससे भी अधिक ऊँची हैं। लद्दाख क्षेत्र की ऊँचाई दस से बारह हज़ार फीट तक है, जहाँ लोग ग्रामों में बसे हुए हैं। इसी प्रकार हिमालय पर्वत की एक और शृंखला, जो ऊँचाई में कर्राकरम पर्वत-शृंखला से थोड़ी ही कम होगी, काश्मीर घाटी को सिन्ध नदी की घाटी लद्दाख से अलग करती है। यह घाटी लगभग १२० मील लम्बी, और ७० से ७५ मील तक चौड़ी है। इस भाग में काश्मीर घाटी का वह पूरा भाग भी आ जाता है, जो ८० मील लम्बा और २० मील चौड़ा है। इसी भाग में जेहलम नदी नागिन की भाँति बल-खाती हुई बह रही है। इससे आगे दक्षिण में डुग्गर प्रदेश अर्थात् जम्मूँ प्रान्त का विस्तृत क्षेत्र आ जाता है। यह भी अधिकांश पर्वतीय भाग है, केवल दक्षिण का कुछ भाग मैदानी है। ज़िला डोडा, (रामबन, डोडा, भद्रवाह तथा किश्तवाड़ आदि तहसीलें) रियासी, तथा ऊधमपुर का अधिक भाग बड़े ऊँचे पर्वतों से घिरा हुआ है। पीर पंजाल पर्वत-माला का नौ हज़ार फीट ऊँचा बानिहाल पर्वत जम्मूँ प्रान्त को काश्मीर प्रान्त से अलग करता है।

दरिया, झीलें और नहरें

लद्दाख प्रान्त में सिन्ध और शयोक, काश्मीर प्रान्त में जेहलम और किशनगंगा, जम्मूँ प्रान्त में चनाब, रावी और

तवी प्रसिद्ध नदियाँ हैं । जम्मूँ प्रान्त में मानसर, सूहीसर, कपलाश कुंड और काश्मीर प्रान्त में डल, वुलर, मानसबल, कौंसरनाग, शीश्रमनाग और गंगाबल की सुन्दर झीलें हैं । वुलर झील एशिया भर की सब से बड़ी प्राकृतिक झीलों में से एक कही गयी है । ऊपर वर्णन की गयी नदियों और झीलों के अतिरिक्त रंबीर नहर, प्रताप नहर, बसन्तपुर नहर व उज्झ नहर इस राज्य की प्रसिद्ध नहरें हैं जो सिंचाई सम्बन्धी मामलों में पर्याप्त लाभ पहुँचा रही हैं ।

प्रशासन तथा प्रबन्ध

प्रशासन की दृष्टि से पूरे राज्य को निम्नलिखित ज़िलों में बाँटा गया है ।

जम्मूँ प्रान्त : ज़िला, जम्मूँ, ऊधमपुर, डोडा, कठूआ, पुंछ

काश्मीर प्रान्त : ज़िला, श्रीनगर, अनन्तनाग, बारामूला

लद्दाख प्रान्त : ज़िला लद्दाख

क्षेत्रफल तथा जनसंख्या

इस राज्य का क्षेत्रफल ९२,७८० वर्ग मील है । जम्मूँ प्रान्त का क्षेत्र फल, १२,३७८ वर्ग मील, काश्मीर प्रान्त का ८५०० वर्ग मील तथा लद्दाख प्रान्त का (तहसील कर्गिल और लद्दाख़ को मिला कर) लगभग ३७,३९२ वर्ग मील है। क्षेत्रफल की दृष्टि से लद्दाख, जम्मूँ-काश्मीर राज्य का सबसे बड़ा प्रान्त है । अक्तूबर १९४७ के कबायली आक्रमण के पश्चात् से इस राज्य का लगभग $\frac{2}{3}$ भाग भारत

में और एक तिहाई पाकिस्तान के अधिकार में चला आ रहा है। (तथाकथित आज़ाद काश्मीर, जिसमें गिलगित्त एजेन्सी चित्राल, लद्दाख प्रान्त की तहसील अस्कर्दू, काश्मीर प्रान्त का ज़िला मुजफ़राबाद, जम्मूँ प्रान्त का ज़िला मीरपुर भिम्बर, पुंछ की बाग तथा प्लन्दरी तहसीलें शामिल हैं) राज्य की कुल जनसंख्या ४४,००,००० है। जम्मूँ प्रान्त में बीस लाख के लगभग, और काश्मीर प्रान्त में १७ लाख से कुछ अधिक लोग बसे हुए हैं। लद्दाख प्रान्त की जनसंख्या एक लाख के लगभग है। तहसील लद्दाख की ३६,००० जनसंख्या में प्रायः सभी लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। जम्मूँ प्रान्त में हिन्दू व काश्मीर प्रान्त में मुसलमान अधिक संख्या में हैं। काश्मीर प्रान्त की पूरी आबादी में लगभग ८४ प्रतिशत लोग मुसलमान हैं। पाकिस्तान-अधिकृत आज़ाद काश्मीर क्षेत्र में लगभग १४,००,००० लोग संकटमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। समूचे राज्य में ४१ नगर, उपनगर तथा ९ हज़ार ग्राम हैं: आकृति (शकलोशुबाहत) प्रायः आर्य जाति से सम्बन्धित है इन में डोगरे प्रायः गन्दुमी रंग व काश्मीरी (विशेषतः काश्मीरी ब्राह्मण) गोरे रंग के होते हैं। लद्दाख प्रान्त के लोग मंगोल जाति से हैं। इनकी आकृति तिब्बती लोगों से ही अधिक मिलती-जुलती है जो कि स्वयं भी मंगोल जाति से सम्बन्धित हैं।

वेशभूषा तथा सामाजिक जीवन

लद्दाख प्रान्त जम्मूँ काश्मीर राज्य के अन्तर्गत है। यही एक ऐसा प्रदेश है, जिसके निवासियों की वेशभूषा, रहन-सहन

रीति-रिवाज तथा अन्य सभी बातों में बड़ी विचित्रता पायी जाती है। यहाँ के लोग ऊनी चुग्गे, (प्रायः लामा लोग लाल रंग के) तंग-सा पायजामा और ऊपर की ओर उठे हुए टोप-से पहनते हैं । पाँव में 'पप्पू' नाम की खाल या ऊन से बने हुए लम्बे-लम्बे जुराबनुमा जूते पहनते हैं । गले में लम्बी मालाएँ लटकाये रहते हैं। प्रार्थना के समय उन्हीं मालाओं से वे अपने प्रसिद्ध मन्त्र "ओ३म् नमो पद्मने नम :" का जाप भी किया करते हैं। गाँव में प्रवेश करते ही आपको कई मठ दिखाई पड़ेंगे, जिनमें अनेक 'लामा' (धर्म गुरु) बैठे रहते हैं। अनेक लामा गुफाओं में रह कर उपासना एवं तपस्या का जीवन व्यतीत करते हैं । स्त्री लामाओं को 'चाऊ' कहा जाता है । यहाँ के धार्मिक स्थानों में राम, कृष्ण, शंकर की मूर्तियों के बजाए गौतम बुद्ध की मूर्तियाँ तथा पाली भाषा के सैकड़ों ग्रन्थ सुरक्षित रखे गये हैं । इनके वेश को देख कर स्त्री तथा पुरुष की पहचान करना कोई सरल काम नहीं है । यहाँ स्त्रियों में एक ही समय में बहुपति-प्रथा प्रचलित थी, परन्तु धीरे-धीरे अब यह कुप्रथा बन्द होती जा रही है । लद्दाखी लोगों पर बौद्ध धर्म की गहरी छाप होने के कारण इनमें बड़ी सहनशीलता पायी जाती है । लोग आपस में बड़े प्रेम भाव से रहते हैं । उत्सव त्यौहार आदि गाँव के मठों में ही मनाये जाते हैं, जिनमें संगीत के साथ-साथ नृत्य द्वारा मनो-रंजन भी किया जाता है । विवाह आदि अवसरों पर एक विशेष प्रकार की सुरा का पान भी किया जाता है, जिसे

'छंग' कहा जाता है। विवाह-सम्बन्ध में भी कोई प्रतिबन्ध नहीं है, अनेक ग्रामों में मुसलमान बौद्ध कन्याओं से और बौद्ध मुस्लिम कन्याओं से विवाह कर लेते हैं। भोज आदि में भी छुआछूत को कोई स्थान नहीं है। इसके अतिरिक्त भारत का केवल यही एक भाग है, जिसमें अभी तक चोरी-चकारी का नाम नहीं है। लोग बड़े ही सत्यनिष्ठ, सरल-स्वभाव तथा ईमानदार हैं। पाकिस्तान के आक्रमण के कारण अब ये लोग भी हर प्रकार से सचेत हो गये हैं। इसी कारण सेना की ओर भी उनका ध्यान आकृष्ट हुआ है। इस समय उनकी एक अच्छी संख्या काश्मीर मिलिशिया में भी भरती हो चुकी है। भारत तथा काश्मीर सरकार की ओर से अब इस पिछड़े हुए प्रदेश की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। अभी हाल ही में लेह में एक हाई स्कूल तथा अन्य ग्रामों में कुछ प्राथमिक पाठशालाएँ भी खोल दी गयी हैं। सिंचाई के लिए नहरों की भी व्यवस्था की जा रही है। यहाँ के प्रमुख लामा 'कुशक बकौला', काश्मीर सरकार में एक मंत्री होने के नाते लद्दाख-सम्बन्धी मामलों में विशेष देख-रेख कर रहे हैं। अब यहाँ भी चारों ओर जागृति तथा प्रगति के चिह्न दिखाई दे रहे हैं।

काश्मीर प्रान्त

इस प्रान्त के लोगों को काश्मीरी कहा जाता है। ये बड़े मधुरभाषी तथा चतुर होते हैं। हिमपात व अधिक सर्दी के कारण लोग गोरे तथा कोमलांग हैं। अपने आपको सर्दी से

बचाने के लिए ये टखनों तक लम्बा, खुली आस्तीनों वाला एक ढीला ढाला कुर्ता-सा पहनते हैं, जिसे 'फिरन' कहा जाता है। इसके अन्दर जलते कोयलों की एक छोटी-सी अँगीठी थामे रहते हैं जो काँगड़ी कहलाती है। हिन्दू ब्राह्मणों और मुसलमानों का लिबास दूर से ही पहचाना जा सकता है। ब्राह्मण प्राय: पगड़ी बाँधते हैं और माथे पर एक तिलक (कश्का) सा खींच लेते हैं। महिलाएँ अधिकतर साड़ी बाँधती हैं। मुसलमान प्राय: एक गुंबदनुमा टोपी पहनते हैं। औरतें सिर पर ओढ़नी के नीचे एक किश्तीनुमा टोपी (जिसे कसाब कहते हैं) पहनती थीं, पर अब यह रिवाज़ कहीं-कहीं ग्रामों में ही रह गया है। शिक्षा का पर्याप्त प्रचार होने के कारण लोग बड़े व्यवहार कुशल तथा सभ्य हैं। सब बड़े प्रेम भाव से रहते हुए अपने त्यौहारों को ख़ूब उत्साहपूर्वक मनाते हैं। धान लगाते समय तथा विवाह-शादियों के अवसर पर नृत्य तथा मधुर संगीत का बड़ा सुन्दर आयोजन होता है। ढोलक के स्थान पर मिट्टी का घड़ा व 'तोम्बक नाड़' बजा कर ख़ूब मनोरंजन किया जाता है। शीत तथा आर्थिक-हीनता के कारण शरीर तथा वस्त्रों की स्वच्छता की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रचार तथा आर्थिक अवस्था के सुधरने के कारण अब काश्मीरियों की वेशभूषा तथा अन्य बहुत-सी प्रथाओं में भारी परिवर्तन आता जा रहा है। पढ़े-लिखे लोगों में कोट-पैंट, अब्दुल्ला कैप, बख्शी कैप तथा गाँधी टोपी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। यहाँ महिलाओं में

पर्दा की प्रथा नहीं है। अब धीरे-धीरे उनमें शिक्षा-प्रचार भी बढ़ रहा है। अतिथि-सत्कार में चाय का विशेष स्थान है।

जम्मूँ प्रान्त

इस प्रदेश के लोगों में जम्मूँ, कठूआ, उधमपुर आदि गरम भाग तथा भद्रवाह, किश्तवाड़, रामबन, डोडा, रामनगर आदि पर्वतीय ठंडे क्षेत्र के लोग आ जाते हैं। यहाँ की वेशभूषा पंजाब से अधिक मिलती-जुलती है। पहनावे में डोगरा पगड़ी व चूड़ीदार पायजामा बहुत प्रसिद्ध हैं। ठंडे प्रदेशों में ऊनी कपड़ों का अधिक प्रयोग किया जाता है। समय-समय पर नाच, राग-रंग की व्यवस्था की जाती है जिसे 'जातर' कहा जाता है। लोग ऐसे आयोजनों में बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। जम्मूँ व इसके नज़दीक वाले गाँवों का भाँगड़ा नाच बड़ा प्रसिद्ध है। भद्रवाह, किश्तवाड़, रामनगर, चनैहनी, डोडा तथा अन्य पर्वतीय स्थानों में भादों से ले कर मग्घर मास तक कई मेले, जिन्हें कोड्ड कहा जाता है, आयोजित किये जाते हैं, जिनमें रंगदार वस्त्रों में सुशोभित हज़ारों ही स्त्री-पुरुष सोत्साह भाग लेते हैं। ढोल, बाँसुरी तथा शहनाइयों की मधुर राग-ध्वनि पर किये गये संगीत तथा नृत्य कला को देख कर दर्शक मस्ती में झूम उठते हैं। शिक्षा-प्रचार की कमी के कारण यहाँ छुआछूत का रोग बड़े ज़ोरों पर था। जम्मूँ से लगभग सोलह मील दूर बटाड़ा नामक स्थान पर हीरा नगर के रहने वाले एक नवयुवक महाशय रामचन्द्र जी को अपने ही जातीय भाइयों द्वारा बेदर्दी से लाठियाँ मार-

मार कर शहीद कर दिया गया था। उनका अपराध केवल यह था कि वह हिन्दुओं में छुआछूत के विरुद्ध प्रचार किया करते थे। आज उस स्थान पर, जहाँ वीर रामचन्द्र को शहीद किया गया था, वीर मेला के नाम से तीन दिन तक एक भारी मेला लगता है, जिसमें हरिजनों के उत्थान तथा छुआ-छूत के विरुद्ध खूब प्रचार किया जाता है। शिक्षा-प्रचार के कारण इस बुराई का दिन पर दिन खातमा हो रहा है। भारतीय सेना में जम्मूँ प्रान्त के डोगरों की एक अच्छी संख्या है। ये बड़े परिश्रमी, आज्ञाकारी तथा निडर हुआ करते हैं। कुछ वर्ष पूर्व यहाँ के जमवाल कहे जाने वाले राजपूतों में कन्या-बध की कुप्रथा प्रचलित थी, परन्तु अब यह एक दण्डनीय अपराध है और लोग भी सचेत हो गये हैं, जिसके कारण यह हत्याकांड समाप्त हो गया है।

भाषा, बोलियाँ तथा साहित्य

राज्य के नये संविधान के अनुसार उर्दू को राजभाषा का स्थान दिया गया है। इसके अतिरिक्त जम्मूँ प्रान्त में डोगरी, पंजाबी, भद्रवाही, किश्तवाड़ी (काश्मीरी से मिलती जुलती) तथा लद्दाख में लद्दाखी बोली प्रचलित हैं। इनमें से डोगरी, पंजाबी, लद्दाखी तथा काश्मीरी की अपनी-अपनी लिपियाँ हैं, जो प्राय: देवनागरी लिपि से ही मिलती-जुलती हैं। आजकल डोगरी, देवनागरी लिपि और काश्मीरी शार्दा लिपि के बजाए फ़ारसी लिपि में लिखी जा रही हैं। शिक्षण संस्थाओं में अंग्रेजी व हिन्दी का भी प्रबन्ध है। काश्मीर के

प्राचीन इतिहास को देखने से पता चलता है कि किसी समय यहाँ संस्कृत भाषा का खूब बोल-बाला था। यहाँ आज भी अधिकतर बोली जाने वाली काश्मीरी तथा डोगरी भाषा में संस्कृत के अनेक शब्द विकृत रूप से पाये जाते हैं। किसी समय यहाँ संस्कृत के बड़े-बड़े प्रकांड पंडित हो चुके हैं। प्राचीन साहित्य में भी इस भाषा में ही लिखी गयी पुस्तकें अधिक संख्या में पायी जाती हैं। इनमें 'काव्य-प्रकाश', कल्हण की 'राज-तरंगिणी' श्री जैनराज की 'राजावली पटक', श्री अभिनव गुप्त पादाचार्य का 'ध्वन्यालोक' नामक ग्रन्थ विशेष प्रसिद्ध हैं। मुस्लिम काल में फ़ारसी यहाँ की राजभाषा रही। काश्मीरी भाषा में रचित पुस्तकों में सब से प्राचीन तथा प्रसिद्ध पुस्तक 'लल्ल देदि' या लल्ला देवी एक विदुषी महिला द्वारा लिखित मिलती है। इसमें शिव मत से सम्बन्ध रखने वाली कविताओं का संग्रह है। आजकल काश्मीरी भाषा में अच्छे-अच्छे लेखक पदार्पण कर रहे हैं। प्रसिद्ध कवि 'महजूर' काश्मीरी तथा अब्दुसस्तार 'आसी' की काश्मीरी भाषा में लिखी गयी कविताएँ बड़ी ही लोकप्रिय हो चुकी हैं। इन कविताओं में काश्मीर की प्राकृतिक शोभा तथा सौन्दर्य का बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। 'बागे निशात के गुलो, नाज़ करन-करन वलो' की मस्त कूक को सुन कर श्रोतागण आनन्द-विभोर हो जाते हैं। जम्मूँ प्रान्त में अधिकांश बोली जाने वाली डोगरी बोली भी अब दिन-प्रतिदिन प्रगति कर रही है। जम्मूँ की डोगरी संस्था इस ओर विशेष ध्यान दे

रही है । इस भाषा के कलाकारों में पंडित हरदत्त जी शास्त्री का नाम सर्वप्रथम आता है । इन्होंने लगभग तीस वर्ष पूर्व, अपनी कविताओं द्वारा डुग्गर के सामाजिक जीवन में एक विशेष क्रान्ति लाने का प्रयत्न किया । इनके डोगरी में लिखे गये लोकगीत, डुग्गर के बच्चे-बच्चे की ज़बान पर हैं । "लक्खे दा बनी गया कक्ख लोको, देश परमेसरा पार लाना" (अर्थात् हमारा देश जो कभी धन-धान्य, विद्या-कला से पूर्ण था । आज उस देश का भारी पतन हो गया है, हे परमेश्वर, हमारी इस डूबती नैया को आप ही पार लगाना) के सुन्दर गीत द्वारा, उन्होंने डुग्गर के नवयुवकों की सोती आत्मा को झंझोड़ के रख दिया है । दूसरे प्रसिद्ध कवि दीनू भाई पन्त हैं । इनकी लिखी कविताओं में 'गुत्तलूं' तथा 'मंगू दी छबील' आदि हँसोड़ कविताएँ पढ़ कर पाठक हँस-हँस कर लौटन कबूतर बन जाते हैं । पंडित रामनाथ जी शास्त्री, ठाकुर रघुनाथ सिंह जी सम्याल, मधुकर, यश आदि अनेक कलाकार इस भाषा की उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न कर रहे हैं । हिन्दुओं के प्रसिद्ध धर्म ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता का डोगरी अनुवाद भी छप चुका है । अब जम्मूँ प्रान्त की प्राथमिक पाठशालाओं में डोगरी भाषा का पढ़ना अनिवार्य कर दिया गया है । निम्नलिखित शब्दावली को देखने से पाठकों को यह भली प्रकार ज्ञात हो जाएगा कि जम्मूँ-काश्मीर राज्य में अधिकांश बोली जाने वाली तीन प्रसिद्ध भाषाओं का देववाणी तथा हमारी राष्ट्र-भाषा हिन्दी से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है :

हिन्दी/उर्दू	संस्कृत	काश्मीरी	डोगरी	भद्रवाही
आँख	अक्ष	ओच्छ	अक्ख	अच्छ
नाम	नाम	नाव	नाँ	नऊँ
लहू, खून	रक्त	रथ	रत्त	रत्त
सोलह	षोड़श	शुड़ा	सोड़ाँ	शोढ़े
हवा, वायु	वात	वाव	बात, वा	बात
सोंठ	शुण्ठी	शोण्ठ	सुण्ढ	शुण्ठ
साँप	सर्प	सर्फ	सर्प, सप	सर्प
जंगल, बन	वन	वन	बन	बन
साँस	श्वास	शाह	साह	शाह
हाथ	हस्त	अथ	हत्थ	हत्थ
आयु में बड़ा	ज्येष्ठ	ज़्युठ	जेठा	ज़ेठो
काँटा	कण्टक	कोंड	कंडा	कंटो
क़ीमत	मूल्य	मोल्लू	मुल्ल्	मुल्ल्
साठ	षष्टि	शोठ	शट्ठ	शट्ठ
ज़बान	जिह्वा	ज़ेव	जीभ	ज़िब्भ
पेशाब	मूत्र	मुथर	मूत्तर	मुटल
नमक	लवण	नून	लून	लून
कान	कर्ण	कन	कन्न	कन्न
गाँव	ग्राम	गाम	ग्राँ	ग्रऊँ
इन्सान	मानव	मह्यनू	मान्हूँ, मनुक्ख	मैन्हू
लाख़	लक्ष	लछ	लक्ख	लक्ख
नहाना, गुसल	स्नान	स्नान	श्नान	इश्नान
शेर	सिंह	सुह	सीह	सीह
सोना	स्वर्ण	सोन्न्	सुन्ना	सोन्नू
नींद	निद्रा	निन्दर	नींदर	निड्ल
नौ	नव	नौं	नौ	नउ
नया	नव	नव	नमाँ, नवाँ	नवुँ

जलवायु

लद्दाख प्रान्त की जलवायु गर्मियों में सख़्त गरम, व सर्दियों में प्रायः सर्द खुश्क है। काश्मीर प्रान्त गर्मियों में सुहावना (मोतदिल) और सर्दियों में सख्त सर्द खुश्क है। जम्मूँ प्रान्त (पर्वतीय क्षेत्र को छोड़) की जलवायु गरम है। लद्दाख प्रान्त में वर्षा लगभग तीन इंच सालाना तक होती है। पश्चिम तथा दक्षिण की ओर यह ३० इंच से ६५ इंच वार्षिक तक है। लद्दाख, काश्मीर प्रान्त, व जम्मूँ प्रान्त के ज़िला डोडा, पुंछ तथा रियासी के कुछ भागों में सर्दियों में भारी हिमपात होता है।

प्रसिद्ध वनस्पतियाँ, पशु, पक्षी तथा उपज

काश्मीर प्रान्त तथा जम्मूँ प्रान्त के पर्वतीय क्षेत्र, तहसील, भद्रवाह, किश्तवाड़, रामबन, रियासी में बड़े घने वन पाये जाते हैं। इन वनो में चील, देवदार, काइल, पड़तल, ओक आदि वृक्ष बहुतायत में पाये जाते हैं। कहीं-कहीं ग्रामों तथा नगरों के निकट सफ़ेदा और चिनार के सुन्दर वृक्ष भी दिखाई पड़ते हैं। काश्मीर के इन वनों में चीता, रीछ, बारहसिगा, हिरण आदि वन्य पशु बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। लद्दाख प्रान्त में वनों का पूर्ण अभाव है, जिसके कारण वहाँ ईंधन की प्राप्ति में भारी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। यहाँ पाये जाने वाले पशुओं में, एक जंगली बैल की शक्ल का पशु बड़ा उपयोगी है। इसे 'झों' कहते हैं। जम्मूँ प्रदेश के गरम क्षेत्र में मोर और पर्वतीय क्षेत्र (काश्मीर घाटी सहित)

में जंगली मुर्ग, नील, चकोर, कोयल, बुलबुल तथा अन्य अनेक सुन्दर पक्षी पाये जाते हैं। प्रायः सर्दियों में यहाँ खूब शिकार खेला जाता है :

धान (चावल) काश्मीर घाटी, जम्मूँ प्रान्त की रणबीर सिंह पुरा व भद्रवाह तहसील की मुख्य उपज है। इसके अतिरिक्त गेहूँ, मक्की, जौ, सरसों, अफ्यून, तम्बाकू, अनारदाना और केसर भी यहाँ की मुख्य उपज हैं। लद्दाख वर्षा के अभाव, तथा विकट पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण लगभग पूरा ही एक बंजर प्रदेश है। कहीं-कहीं गेहूँ, जौ तथा सब्ज़ियों की काश्त की जाती है। इसी कारण मक्खन तथा चाय के साथ गेहूँ या जौ का सत्तू लद्दाखी लोगों का मुख्य तथा मन-भाता आहार है।

प्रसिद्ध फल

काश्मीर प्रान्त में अखरोट, बादाम, खुर्मानी, नाश्पाती, नाख, बही, बग्गूगोशा, ग्लास, आलू-बुखारा तथा अनेक प्रकार के खट्टे–मीठे सेब बहुतायत से पाये जाते हैं। इन सब में प्रसिद्ध तथा स्वादिष्ट फलों का राजा 'अम्बरी सेब' माना गया है। जम्मूँ प्रान्त के फलों में आम तथा माल्टा बहुत प्रसिद्ध हैं। तहसील भद्रवाह के सेब तथा नाख तथा लद्दाख के अंगूर तथा खुर्मानी अत्यन्त स्वादिष्ट फल हैं।

खनिज़ पदार्थ

इस राज्य के भू-गर्भ में हर प्रकार के खनिज पदार्थ मौजूद हैं, परन्तु रेल–यातायात तथा मशीनरी के अभाव के

कारण अभी तक बहुत ही कम निकाले जा सके हैं। कुछ एक स्थानों पर कोयला (जंगल गली रियासी) नीलम. (पाडर जम्मूँ प्रान्त) तथा जिप्सियम की खानें निकाली गयी हैं। किश्तवाड़ से लगभग १८ मील दूर गल्हार नामक स्थान पर सुरमे की खान पायी गयी है। इलाका मर्मत गल्हयान के देधनि गाँव में भी सुरमे की खान पायी गयी थी, जो आजकल बन्द है। किश्तवाड़ में अभ्रक के पाये जाने की भी बड़ी संभावना है। लद्दाख में झील साँभर से नमक भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। जम्मूं प्रान्त के भद्रवाह नगर से लगभग पाँच मील की दूरी पर थनाहिला नाम का एक छोटा-सा ग्राम है। इस गाँव की पूरी आबादी मुस्लिम लोहारों की है। कहा जाता है कि कई वर्ष पूर्व यहाँ लोहा निकाला जाता था। आज भी इस ग्राम के आसपास के ग्रामों में उसी लोहे से बनाये गये औज़ार (कुल्हाड़े कुदाली, फ़ाल इत्यादि) कई घरों में पाये जाते हैं। किन्तु अब कुछ दिनों से इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया है। इस सम्बन्ध में एक और घटना उल्लेखनीय है। आज से लगभग ३० वर्ष पूर्व, संवत् १८८५ विक्रमी के भादों मास की सत्रह तारीख़ को भद्रवाह नगर में एक भारी बाढ़ आयी, जिस में नगरनिवासियों को जन तथा धन की भारी क्षति उठानी पड़ी थी। उस समय यह देखा गया था कि बाढ़-ग्रस्त क्षेत्र में स्थान–स्थान पर गन्धक के अनेक छोटे–छोटे ढेर एकत्रित हो गये थे। इसके अतिरिक्त यहाँ लोहा, ताँबा, सोना, चाँदी, बाक्साइट, गन्धक तथा मिट्टी के तेल आदि अनेक खनिज़ पदार्थों

के पाये जाने की भी पूर्ण संभावना है । आशा है, अपनी सरकार इस क्षेत्र में रेल मार्ग का निर्माण कर, इन बहुमूल्य खनिजों के खनन की ओर शीघ्रातिशीघ्र ध्यान देगी । इस से जहाँ हज़ारों बेकार लोगों की आजीविका का प्रबन्ध होगा, वहाँ राज्य की निर्धन जनता के आर्थिक विकास पर भी भारी प्रभाव पड़ेगा ।

प्रसिद्ध दस्तकारियाँ और उद्योग-धन्धे

रेशम का काम, पश्मीने के शाल-दुशाले, ऊन के कम्बल, गब्भे, नमदे, गालीचे और कालीन तैयार करना, अख़रोट तथा दूसरी लकड़ी की वस्तुओं पर नक्काशी व खुदाई का काम, पेपरमैशी, चाँदी के बर्तन तथा आभूषण बनाना यहाँ के मुख्य उद्योग-धन्धे हैं । बेंत की टोकरियाँ, सन्दूक, कुर्सियाँ इत्यादि बनाने का काम इस राज्य में बहुत प्राचीन काल से होता चला आ रहा है ।

जीवन-निर्वाह तथा आय के मुख्य साधन

यहाँ के निवासी अधिकतर कृषि (खेती-बाड़ी), भेड़-बकरी पालने, फलों और सब्ज़ियों की काश्त और श्रम द्वारा अपना जीवनयापन करते है । इसके अतिरिक्त ऊपर वर्णन की गयीं घरेलू दस्तकारियाँ, सब प्रकार के फल, वनों से प्राप्त इमारती लकड़ी, जड़ी बूटियाँ, गुच्छियाँ, बनफ़शा, केसर, अफ़ीम, कस्तूरी, शिलाजीत, खालें तथा टूरिस्ट ट्रेफ़िक (बाहर से आनेवाले सैलानी यात्री) राज्य की आय के मुख्य साधन

हैं। इन के अतिरिक्त चुंगी, मार्गकर, आयकर तथा लाइसेन्स शुल्क से भी पर्याप्त धन की प्राप्ति होती है।

यातायात अर्थात् आवागमन के साधन

काश्मीर की राजधानी श्रीनगर वायुमार्ग द्वारा, देहली से लगभग पाँच सौ मील दूर है। पठानकोट से श्रीनगर तक एक पक्का, विशाल मोटर मार्ग बना हुआ है। इस से पूर्व पठानकोट से श्रीनगर का फ़ासला दो सौ सड़सठ मील था, परन्तु हाल ही में जवाहर टॅनल के बन जाने से यह फ़ासला १६ मील कम हो गया है। अब भारत–काश्मीर यातायात भी पूरे वर्ष भर के लिये चालू रहेगा। श्रीनगर से आगे लद्दाख के लिये भी खच्चर-घोड़ों का मार्ग प्राचीन काल से ही बना हुआ है। भारत सरकार के प्रयत्न से लद्दाख की राजधानी लेह में एक विशाल हवाई अड्डा तैयार हो चुका है। यह स्थान सागरतल से ग्यारह हज़ार पाँच सौ फीट की उंचाई पर, श्रीनगर से २५२ मील की दूरी पर स्थित है। इस समय श्रीनगर से ५० मील दूर सेवामार्ग तक मोटर-मार्ग बन चुका है। आज वायु-मार्ग द्वारा श्रीनगर से लेह पहुंचने में केवल एक घंटे बीस मिनट का समय लगता है। लेह प्राचीनकाल से ही व्यापार का एक मुख्य केन्द्र रहा है। यहाँ से यारकन्द, तिब्बत और पश्चिमी एशिया तक, मध्य-एशिया और भारत (कुल्लू–मनाली) को मार्ग जाते हैं। यह बात स्पष्ट है कि प्राचीन काल में इन्ही मार्गों द्वारा व्यापार के साथ–साथ, भारतीय संस्कृति और कला ने मध्य-एशिया, तिब्बत तथा चीन में प्रवेश किया था। भारत से

लद्दाख को वायुमार्ग द्वारा मिलाने का श्रेय, भारतीय सेना के एयर कमोडोर, साहस की सजीव मूर्ति, स्वर्गवासी सरदार मेहरसिंह पटयालवी को ही प्राप्त है। सर्वप्रथम उन्होंने ही २४ मई, १९४८ ई. में २५००० फीट ऊँची पर्वत मालाओं को चीरते हुए अपना विमान लेह में उतारा था। लद्दाख ही नहीं, भारत तथा संसार के इतिहास में यह एक क्रान्तिकारी घटना थी। ऊपर वर्णन किये गये मुख्य मार्गों के अतिरिक्त एक अन्य मोटर-मार्ग जम्मूँ से अखनूर, नोशहरा, राजोरी, होता हुआ पुंछ से जा मिलता है। एक मार्ग श्रीनगर से बारह-मूला होता हुआ जेहलम नदी के किनारे-किनारे रावलपिंडी ज़िले के मरी पर्वत, और दूसरा इसी से मुज़फ़्फराबाद के पास से होता हुआ ऐबटाबाद सीमाप्रान्त (पाकिस्तान) में मिल गया है। पठानकोट-श्रीनगर राजमार्ग से कई उपमार्ग निकाले गये हैं। इन में कठूआ से बसोह्‌ली, उधमपुर से रामनगर और बठोत से भद्रवाह, किश्तवाड़ के लिये बनाये गये मोटर-मार्ग उल्लेखनीय हैं। इन मार्गों के अतिरिक्त इस राज्य के प्रायः सभी छोटे-बड़े नगर मोटर-मार्ग द्वारा राजमार्ग से मिले हुए हैं। दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत राज्य में कुछ नये मोटर-मार्ग निर्माण किये जाने की पूर्ण संभावना है।

ऐतिहासिक

पंडित कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिणी नामक ग्रन्थ, व पंडित चन्द्रदेव का नीलमत पुराण काश्मीर के इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। इतिहासकारों का मत है कि करोड़ों

वर्ष पूर्व आधुनिक काश्मीर–घाटी, एक महान् जलखण्ड या झील के रूप में थी, जो दक्ष–कन्या सती के नाम पर सतीसर कहलाती थी। वहाँ, उसी झील में हरमुख नाम का पर्वत था, जिस पर शिव तपस्या किया करते थे। इस झील में जलदेव नामक एक राक्षस भी रहा करता था, जो आसपास के ऋषियों को बड़ा दुःख दिया करता था। कालान्तर में ब्रह्मा जी के पौत्र–कश्यप ऋषि भ्रमण करते हुए इस ओर आ निकले। उन्होंने इस दुष्ट राक्षस के नाश के लिये भगवान के दर्बार में प्रार्थना की। कहते हैं उनकी प्रार्थना स्वीकार हुई और बारहमूला के पास का पर्वत फट गया, जिससे झील का पानी बह निकला और नीचे से स्थल-भाग निकल आया। (यह भी संभव हो सकता है कि वह पर्वत किसी भूचाल के कारण ही फट गया हो) उचित समय जान कश्यप ऋषि ने उस राक्षस का संहार कर लोगों को निरापद कर दिया। इसके पश्चात् उन्होंने आर्यावर्त से ब्राह्मणों तथा अन्य लोगों को यहाँ ला कर बसा दिया। इन कारणों से यह भू-भाग उन्हीं के नाम पर कश्यप-मरु कहलाया और इसी से बिगड़ते-बिगड़ते काश्मीर कहा जाने लगा। काश्मीर घाटी की झील वुलर, डल तथा अन्य झीलें नीलमत पुराण में वर्णित इस बात का प्रबल समर्थन कर रही हैं। जम्मूँ-प्रदेश के बारे में भी एक ऐसी ही कथा प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि किसी समय महाराजा श्री रामचन्द्र जी के वंशज, महाराज जाम्बूलोचन शिकार या भ्रमण करते हुए इस प्रदेश की ओर आ निकले। यहाँ एक

तालाव पर उन्होंने एक सिंह तथा बकरी को एक ही घाट पर पानी पीते देखा। वह इस विचित्र दृश्य से बड़े ही प्रभावित हुए और इस स्थान को अत्यन्त पवित्र मान कर उन्होंने यहीं आधुनिक जम्मूँ नगर की नींव रखी। इसीलिए उनके ही नाम पर इस प्रदेश का नाम जम्बू या जम्मूँ पड़ गया।

विविध शासन

इतिहास इस बात का साक्षी है कि काल, गति के साथ-साथ काश्मीर में भी अनेक उतार चढ़ाव तथा परिवर्तन होते रहे। सर्वप्रथम यह मौर्यवंश के सम्राट अशोक महान् के अधिकार में आया। फलत: लोग भी तेज़ी से बौद्ध धर्म की ओर झुकते गये। इसके पश्चात् तातारों और फिर सम्राट कनिष्क के अधीन रहा। कहा जाता है कि महाराजा कनिष्क ने बौद्ध धर्म की चौथी सभा कनिष्कपुर, काश्मीर में ही बुलवायी थी। उस काल के सबसे प्रसिद्ध पंडित नागार्जुन, काश्मीर के हारवन नामक गाँव में ही रहा करते थे। कनिष्क के पतन के पश्चात् कुछ समय तक शान्ति रही, परन्तु हूण जाति के मिहरगुल नामक सरदार ने काश्मीर पर आक्रमण कर यहाँ के निवासियों के साथ बर्बरतापूर्ण अत्याचार किये। उसकी मृत्यु के पश्चात् इस देव-धरती ने पुन: सुख की साँस ली। तदुपरान्त काश्मीर में फिर हिन्दू राज्य की स्थापना हो गयी। आठवीं शताब्दी (७१५-५२) में ललितादित्य नामक एक शक्तिशाली हिन्दू राजा यहाँ राज्य करते रहे। कहा है कि उन्होंने उत्तर भारत के अनेक राजाओं को पराजित

किया और फिर मध्य-एशिया पर भी आक्रमण किया। उनके राज्य काल में काश्मीर ने विद्या, कला तथा अन्य सब प्रकार से भारी उन्नति की। श्रीनगर से बयालीस मील दक्षिण की ओर श्रीनगर-पहलगाम मार्ग पर जीर्ण अवस्था में खड़ा मार्तण्ड का सूर्य मन्दिर है। इस मन्दिर के खंडहर रूप में पड़े पत्थरों की मूर्ति-कला आज भी देखने योग्य है। इसके बारे में यह कथा प्रचलित है कि सिकन्दर मूर्ति-भंजक ने कई मास तक लूट-खसोट, तथा लगातार आग लगा कर इस पवित्र स्थान को नष्ट-भ्रष्ट किया था। कहा जाता है कि यह भव्य मन्दिर राजा ललितादित्य द्वारा ही बनवाया गया था। नवीं शताब्दी में अवन्तिवर्मन (८१३-५५) नाम के एक अन्य हिन्दू राजा भी यहाँ राज्य करते रहे, जिनके शासन काल में भी काश्मीर ने बड़ी उन्नति की। हिन्दू शासकों में अन्तिम शक्तिशाली शासक रानी विद्या (९५०-१००३) थीं। इसके बाद यहाँ की बागडोर एक दूसरे वंश के हाथ में आयी। इस वंश का अन्तिम शासक सिंघ देव (११२८) था जिसके शासन काल में तातारों ने काश्मीर पर आक्रमण कर यहाँ भीषण रक्तपात किया और श्रीनगर को जला कर राख कर दिया। इस प्रकार चौदहवीं शताब्दी तक यहाँ हिन्दू राजाओं का राज्य रहा और उसके पश्चात् यहाँ फिर मुस्लिम बादशाहों का अधिकार हो गया।

प्रथम मुस्लिम शासक

सिंघ देव की मृत्यु के बाद उसका सेनापति रामचन्द काश्मीर का शासक बन बैठा। उसके दो सेनापति थे, तिब्बत

का रेंचनशाह नामी बौद्ध, और सवात का शाह मीर । इस धमाचौकड़ी में रेंचनशाह ने रामचन्द की हत्या कर उसकी पुत्री कोटा रानी से विवाह कर लिया । राजा बन चुकने के पश्चात् उसने ब्राह्मणों से प्रार्थना की कि उसे हिन्दू बना लिया जाए, परन्तु उसकी इस प्रार्थना पर किसी ने ध्यान नहीं दिया । आखिर निराश हो कर उसने बुलबुल शाह नामक एक मुस्लिम फ़कीर के हाथों इस्लाम मज़हब ग्रहण कर लिया । सुल्तान ज़ैनुल आब्दीन (१४२०) के शासन काल में काश्मीर में फिर शान्ति स्थापना हुई । यह अपने विद्या-प्रेम, न्याय तथा धर्म-निरपेक्षता के कारण मुगल सम्राट् अकबर के तुल्य माने जाते हैं । इन्होंने अपनी हिन्दू प्रजा से बड़ा उत्तम व्यवहार किया । इन्होंने मन्दिरों की मरम्मत करायी, हिन्दू शास्त्रों का फ़ारसी भाषा में अनुवाद करवाया तथा गो हत्या भी बन्द करा दी । आज भी उनके नाम से काश्मीर में, ज़ैन कदल, ज़ैनपुर, ज़ैन डब, ज़ैन कोट तथा ज़ैन बाज़ार आदि कई स्थान प्रसिद्ध हैं । इनकी लोकप्रियता तथा सद्गुणों के कारण ही वे काश्मीर के इतिहास मे बोड् शाह या महान् सम्राट के नाम से याद किये जाते हैं । इनके राज्य काल के पश्चात् काश्मीर में एक नया दौर आरम्भ हुआ ।

काश्मीर पर मुग़ल अधिकार

१५८६ में सम्राट अकबर ने अन्तिम चाक (शिय्या) शासक याक़ूब शाह को हरा कर इस सुन्दर प्रदेश पर अपना अधिकार जमा लिया । अकबर की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र

तथा पौत्र जहाँगीर और शाहजहाँ इस पर राज्य करते रहे। उन्होंने यहाँ अनेक सुन्दर उद्यान व भवन बनवाये, जिसमें झील डल के आसपास बने शालीमार, नसीम तथा निशात बाग अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। मुगल शासन में काश्मीर में स्थायी शान्ति तथा सुख-समृद्धि बनी रही, परन्तु औरंगज़ेब के शासन काल में काश्मीर में फिर अशान्ति की लहर दौड़ गयी। उसने हिन्दुओं पर जज़िया लगाया और हज़ारों हिन्दुओं को बल-पूर्वक मुसलमान बना लिया। जम्मूँ-प्रान्त के पाकिस्तान अधिकृत ज़िला मीरपुर व पुंछ क्षेत्र के लाखों ही चिभ, जराल, सलारिया, जँज़ुए व सुद्धन कहे जाने वाले मुस्लिम राजपूतों के पूर्वज हिन्दू क्षत्रिय ही थे। इसके अतिरिक्त काश्मीर-घाटी के अधिकांश मुस्लिम कहे जाने वाले लोगों के पूर्वज भी ब्राह्मण थे, जिन्हें औरंगज़ेब के अत्याचारों से तंग आ कर धर्म परिवर्तन करना पड़ा। भारत में गूजर कहे जाने वाले लोगों की गणना हिन्दू क्षत्रिय जाति में की जाती है। परन्तु जम्मूँ काश्मीर में बसने वाले लाखों गूजर औरंगज़ेब के समय में ही मुसलमान बनाये गये। इनका पहनावा तथा भाषा राजस्थान व हरियाना के हिन्दू गूजरों से अधिक मिलते जुलते हैं। ये अपना जीवन निर्वाह गाय, भैंस, पाल कर तथा उनके घी, दूध के व्यापार से ही करते हैं।

मुगल साम्राज्य का पतन

१७५१ के लगभग काश्मीर अफ़गानों, अहमद शाह दुर्रानी के अधिकार में आ गया।

काश्मीर सिक्खों के अधिकार में

कुछ समय बाद पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह के सेनापति दीवानचन्द मिश्र ने जम्मूँ के डोगरा सरदार राजा गुलाब सिंह की सहायता से, इसे अफ़गानों से छीन कर अपने अधिकार में कर लिया। इस प्रकार १८१९ में काश्मीर महाराजा रणजीत सिंह के शासन अधिकार में आ गया। १८४५ तक यह प्रदेश सिक्खों के अधीन रहा।

काश्मीर पर डोगरा अधिकार

प्रथम सिख-अंग्रेज़ युद्ध में घर की फूट के कारण सिक्खों को पराजित होना पड़ा और अंग्रेज़ों ने उनसे डेढ़ करोड़ रुपया तावाने-जंग के रूप में अदा करने को कहा। इतनी बड़ी धन-राशि अदा न कर सकने पर काश्मीर को जम्मूँ के इतिहास प्रसिद्ध डोगरा सरदार महाराजा गुलाब सिंह जी के हाथों ७५ लाख रुपये में बेच दिया गया। १८४६ ई० में हुई अमृतसर की सन्धि के अनुसार काश्मीर पर महाराजा गुलाबसिंह का अधिकार हो गया। यहाँ महाराजा गुलाबसिंह के विषय में थोड़ा परिचय देना अवश्यक प्रतीत होता है। अठारहवीं शताब्दी के मध्य में जम्मूँ का शासन सूर्यवंशी राजा रंजीतदेव के हाथ में था। राजा की मृत्यु के पश्चात् राजगद्दी के अधिकार के लिये उसके तीन पुत्रों में परस्पर लड़ाई-झगड़ा हुआ। सिक्खों ने सुअवसर जान, जम्मूँ पर आक्रमण कर इसे लूट लिया। १८४५ तक यह प्रदेश सिक्खों के प्रभुत्व में रहा। गुलाबसिंह, ध्यानसिंह और सुचेतसिंह, राजा रंजीत-

देव के सबसे छोटे भाई सूरतसिंह के पोते थे। यह तीनों लाहौर दरबार में महाराजा रणजीत सिंह के यहाँ नौकर हो गये और अपनी वीरता तथा योग्यता के कारण कुछ ही दिनों में महाराजा के विशेष विश्वासपात्र बन गये। उन दिनों राजोरी का राजा सिक्खों का बड़ा विरोधी था और अनेक प्रयत्न किये जाने पर भी काबू में न आ सका था। आखिर यह काम नीति निपुण गुलाबसिंह को सौंप दिया गया। जिस ने कुछ दिनों के अन्दर उस विद्रोही राजा को गिरफ्तार कर लिया। इस सेवा के बदले में महाराजा रंजीतसिंह ने प्रसन्न हो कर १८२० में गुलाब सिंह को जम्मूँ का राजा बना दिया। दूसरे भाई ध्यान सिंह को पुंछ की रियासत दे दी गयी और सुचेतसिंह को जम्मूँ के उत्तर पश्चिम में रामनगर का शासन सौंप दिया गया। इसके पश्चात् महाराजा गुलाबसिंह ने अपने वीर सेनापति मियाँ जोरावरसिंह की सहायता से १८४६ से पहले ही भद्रवाह, किश्तवाड़, और पुंछ का क्षेत्र जम्मूँ प्रान्त में मिला लिया था। १८४६ के पश्चात् इस राज्य का इतना विस्तार हुआ कि लद्दाख, जाँस्कार, कर्गल, बल्तिस्तान गिल्गित्त, चलास, पुनियाल, यासीन, हुंज़ा नगर और चित्राल जैसे दूरवर्ती विकट पर्वतीय क्षेत्रों पर भी डोगरों की विजय-पताका फहराने लगी। लद्दाख की राजधानी लेह में, जोरावरसिंह द्वारा निर्मित किले में, जम्मूँ से पहुँचायी गयी चार भारी तोपें वहाँ पड़ी हुई हैं, जो आज भी उस साहसी वीर सेनानी की अमर गाथा का एक चिर संस्मरण हैं।

महाराजा गुलाब सिंह की मृत्यु के पश्चात् उनके लड़के महाराजा रणवीर सिंह १८५७ में राजगद्दी पर बैठे। उन्होंने प्रजा की भलाई के लिये भरसक प्रयत्न किया। यह बड़े ही विद्या प्रेमी, नीति-निपुण तथा वीर थे। उन्होंने रणवीर सिंह दंड-विधि व रणवीर-प्रकाश नाम के दो ग्रन्थ भी लिखवाए। मुगलकाल या इससे पूर्व मुसलमान बने हिन्दुओं को उनकी इच्छा पर शुद्ध कर पुनः हिन्दू-समाज में मिलाने का भी उन्होंने पूरा प्रयास किया। परन्तु ब्राह्मणों व हिन्दू समाज के विरोध करने पर वह अपने उस शुभ संकल्प में सफल न हो सके। उन्होंने पुरमंडल तथा जम्मूँ में विशाल मन्दिरों का निर्माण भी कराया। जिनमें धर्म शिक्षा, संगीत तथा संस्कृत भाषा के पठन-पाठन का भी समुचित प्रबन्ध किया गया था। इसके अतिरि़क्त समय-समय पर राजवंश द्वारा दान में दी गयी धनराशि से एक धर्मार्थ फण्ड स्थापित किया गया, जिसका उद्देश्य धर्म प्रचार तथा निर्धन लोगों की सहायता करना था। आज भी काश्मीर राज्य तथा इससे बाहर, भारत के अनेक तीर्थ स्थानों पर धर्मार्थ फण्ड की करोड़ों रुपये की चल तथा अचल सम्पत्ति मौजूद है। इसकी सुरक्षा तथा देख-रेख का काम राज्य का धर्मार्थ-विभाग करता आ रहा है।

अंग्रेज़ों की चालें

जब अंग्रेज़ों ने काश्मीर राज्य को अमृतसर की संधि के अनुसार महाराजा गुलाब सिंह के अधीन किया तो उन्हें वहाँ का पूर्ण स्वामित्व भी सौंप दिया और आन्तरिक मामलों

में भी इस राज्य पर उनका पूरा अधिकार मान लिया गया। महाराजा रणवीर सिंह के शासन काल में अंग्रेज़ों ने इस बात का पूरा प्रयत्न किया कि अन्य रियासतों की भाँति इस राज्य में भी एक अंग्रेज़, पोलिटिकल अफ़सर के रूप में नियुक्त हो सकें, परन्तु महाराजा ने कड़ा विरोध कर, अंग्रेज़ों को उनकी इस दूषित चाल में सफल न होने दिया। १८८५ में महाराजा रणवीर सिंह की मृत्यु के पश्चात् महाराजा प्रताप सिंह गद्दी पर बैठे। यह अपना अधिकतर समय पूजा-पाठ तथा अन्य धार्मिक कामों में ही लगाते थे। राजकाज में इनकी बहुत कम रुचि थी। दूसरी ओर अंग्रेज़ भी समय की ताक में थे। महाराजा की इस कमज़ोर नीति से लाभ उठा कर उन्होंने जम्मूँ-काश्मीर राज्य में एक पोलिटिकल अफ़सर की नियुक्ति कर दी। महाराजा प्रताप सिंह निस्सन्तान थे, इसलिए १९२५ में उनकी मृत्यु के पश्चात्, उनके भतीजे महा राजा हरिसिंह गद्दी पर बैठे। १९२६ में राजगद्दी पर बैठने के पश्चात् उन्होंने कुछ सुधार भी किये। इन में हरिजनों का मन्दिर प्रवेश, जबरन ली जाने वाली बेगार का खात्मा, डोगरा राजपूतों में सदियों से चली आ रही कन्या-बध की कुप्रथा की रोक-थाम तथा शिक्षा प्रचार के काम विशेष उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार १८४६ से ले कर अक्तूबर १९४७ लगभग १०२ वर्ष तक जम्मूँ-काश्मीर पर डोगरा शासन रहा। अंग्रेज़ी राज्य के अधीन रही देशी रियासतों में यह रियासत क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत की सब से बड़ी रियासत थी।

भारत की स्वतन्त्रता तथा जम्मूँ-काश्मीर राज्य

१५ अगस्त, १९४७ को भारत के इतिहास ने एक नयी करवट ली। सदियों की परतन्त्रता रूपी अमावस्या का अन्त हुआ और राष्ट्र-गगन पर स्वतन्त्रता का उज्ज्वल सूर्य उदय हुआ। भारत देशीय राजाओं तथा नवाबों के अधीन अपनी ५६२ छोटी-बड़ी रियासतों सहित अंग्रेज़ों के अधिकार से तो मुक्त हो गया, परन्तु देश का विभाजन होने से भारत को दो भागों में खंडित होना पड़ा। उधर पाकिस्तान के जन्मदाता मिस्टर जिन्ना काश्मीर को इस युक्ति के आधार पर हड़पने की सरतोड़ कोशिश कर रहे थे कि काश्मीर एक मुस्लिम बहुसंख्यक राज्य है, किन्तु वह अपनी इन दूषित चालों में सफल न हो सके। काश्मीर भारत का एक अटूट अंग है और हमने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा बतलाए हुए प्रेम मार्ग पर सदा चलने का दृढ़ संकल्प कर लिया है। राज्य की जनता द्वारा एक कंठ से उच्चारित इस सिंह गर्जना ने पाकिस्तान की समस्त आशाओं पर पानी फेर दिया। पाकिस्तान तथा उसके गुप्त समर्थक, काश्मीरियों की इस स्पष्ट घोषणा से तिलमिला उठे।

काश्मीर पर आक्रमण

आखिर २२ अक्तूबर, १९४७ को पाकिस्तान की सहायता व आधुनिक शस्त्रों से लेस हो कर हज़ारों ही क़बायली लुटेरों, व जम्मूँ काश्मीर तथा पाकिस्तान के अवकाश प्राप्त सैनिकों ने काश्मीर की शान्त, पावन भूमि पर आक्रमण कर दिया।

कर दिया। मुज़फ्फराबाद का सुन्दर नगर पल भर में जला कर राख कर दिया गया। हज़ारों निर्दोष लोगों को बेखबरी में मौत के घाट उतार, बलात्कार व पाशविक अत्याचार कर लुटेरों ने चंगेज़ व हलाकू की याद ताज़ा कर दी।

महाराजा काश्मीर की घोषणा

ऐसे संकट के समय में राज्य के शासक महाराजा हरिसिंह ने २५ अक्तूबर, १९४७ को लार्ड मौंटबैटन से तार द्वारा सैन्य सहायता की प्रार्थना की। २६ अक्तूबर, १९४७ को महाराजा काश्मीर ने काश्मीर-भारत मिलाप की घोषणा कर दी और विलय सन्धि पर अपने हस्ताक्षर कर दिये। तत्कालीन जन-नेता शेखअब्दुल्ला ने भी इस घोषणा का पूरा-पूरा समर्थन किया। ऐसे आपत्तिकाल में, जब कि समूचा जम्मूँ-काश्मीर राज्य आग की भयानक लपटों में घिरा हुआ था, भारतीय नेताओं द्वारा महाराजा और शेखअब्दुल्ला की प्रार्थना पर विचार-विमर्श किया गया और काश्मीर के भारत-प्रवेश की स्वीकृति दे दी गयी।

भारतीय सैनिकों की काश्मीर रक्षा के लिए उड़ान

भारत परम्परा से शरणागत की रक्षा करता चला आया है। इसी उच्च सिद्धान्त को समक्ष रख कर भारत ने काश्मीर रक्षा का निर्णय कर लिया। आखिर २६ अक्तूबर, ४७ की रात भारतीय वायु सेना के वायुवाही दस्ते श्रीनगर की ओर उड़ान कर गये। २७ अक्तूबर को, जबकि लुटेरे श्रीनगर के

हवाई अड्डे से केवल साढ़े तीन मील की दूरी पर अपना ताण्डव नृत्य कर रहे थे, उसी समय प्रभात की लाली में भारत के वीर सैनिक, स्वर्गवासी कर्नल दीवान रंजीत राय की कमान में श्रीनगर के हवाई अड्डे पर उतर पड़े। अन्धकार में प्रकाश की ज्योति जल पड़ी, निराशा, आशा में बदल गयी। काश्मीर की रक्षा भारत की आन की रक्षा थी। जय भारत, जय काश्मीर, हर-हर महादेव, तथा सत्य-श्री-अकाल आदि जय-घोष करते हुए भारत के रणबाँकुरे समराँगण में जूझ पड़े। दुर्गम मार्ग, कड़ाके की सर्दी, तूफानी नदी नाले, बर्फ़ से ढके गगन चुम्बी पर्वत तथा स्थान-स्थान पर शत्रु द्वारा लगायी गयी घातों व बाधाओं को पाँवों तले रौंदते हुए भारतीय सैनिकों ने जिधर भी क़दम बढ़ाए, जयश्री उनके हाथ रही। इसी प्रकार की अनेक आपत्तियों का सामना करते हुए हमारे सैनिकों ने शत्रु को वह लोहे के चनें चबवाये कि कुछ ही महीनों के अन्दर उसे काश्मीर का दस हज़ार वर्ग मील अधिकृत भाग खाली कर, सिर पर पाँव रख कर भागना पड़ा।

युद्ध-विराम सन्धि

पाकिस्तान द्वारा काश्मीर पर किया गया आक्रमण न केवल भारत, अपितु विश्व शान्ति को भी एक चुनौती थी। आख़िर पूरे चौदह महीने, सात दिन के घोर युद्ध के पश्चात् पहली जनवरी, १९४९ को आधी रात के समय विराम सन्धि के समझौता प्रस्ताव द्वारा दोनों देशों में युद्ध बन्दी की घोषणा कर दी गयी। जिस समय यह घोषणा हुई, उस समय भारत

के सैनिक, शत्रु को काश्मीर सीमा से बाहर धकेल रहे थे। शत्रु दलों में चहुँ ओर भगदड़ मची हुई थी और वह समय दूर न था, जब कि समूचा जम्मूँ-काश्मीर शत्रु-अधिकार से मुक्त कर दिया जाता। पर शान्ति तथा अहिंसा के पुजारी भारत ने अपनी सेनाओं को भागते हुए शत्रु का पीछा करने से रोक कर विश्वशान्ति की स्थापना का एक उच्च आदर्श स्थापित कर दिया। यदि इसी बात पर दूसरे दृष्टिकोण से सोचा जाए तो यह कहना भी निराधार न होगा कि युद्ध-विराम की इस भूल के कारण ही हमारे प्रदेश का एक तिहाई भाग अभी तक शत्रु के अधिकार में चला आ रहा है। आज हमें इस भूल के मानने में भी कोई संकोच नहीं है कि काश्मीर समस्या को इतना जटिल बना देने के अपराधी भी स्वयं हम ही हैं। इस आक्रमण काल में जम्मूँ-काश्मीर की भोली-भाली जनता पर क्या बीती, उन्हें किन-किन कठिनाइयों से दो-चार होना पड़ा। वह जहाँ हमारे इतिहास की एक रक्त-रंजित और आँसुओं में सनी हुई विस्तृत कथा है, वहाँ भारतीय सैनिकों के अतुल साहस, वीरता व त्याग की एक मुँह बोलती हुई तस्वीर भी है। भारतीय सेना के दीवान रंजीतराय, मेजर सोमनाथ शर्मा, ब्रिगेडियर उस्मान, काश्मीर सेना के ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह तथा अन्य हज़ारों ही ऐसे सुपुत्रों ने इस धरती की रक्षा, अपने प्राणों की आहुति देकर की। वीरों के ऊष्ण रक्त से सींची गयी यह पुष्प वाटिका आज करोड़ों देशवासियों का तीर्थ-स्थान बन चुकी है। काश्मीर यात्रा के लिये आने, वाले प्रत्येक व्यक्ति के मुख से बरबस

यह शब्द निकल पड़ते हैं "इस मिट्टी का तिलक करो यह धरती है बलिदान की"। और वह इसकी पवित्रधूलि को अपने मस्तक पर चन्दन की भाँति लगा लेता है। निकट भविष्य में लिखे जाने वाले काश्मीर के इतिहास में हमारे सैनिकों द्वारा दिये गये बलिदानों की इस अमर गाथा को स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया जाएगा।

अब काश्मीर के कुछ एक प्रसिद्ध लोकनायक, आज जिनकी सर्वत्र चर्चा है, का परिचय प्राप्त कीजिए।

१. शेख मुहम्मद अब्दुल्ला

काश्मीर की जागृति में शेख अब्दुल्ला का बड़ा हाथ रहा है। इनका जन्म ५ दिसम्बर, १९०५ ई० में श्रीनगर के पास सौरा नामक ग्राम में एक निर्धन काश्मीरी परिवार में हुआ। प्राथमिक शिक्षा श्रीनगर में पाने के पश्चात्, उन्होंने लाहौर विश्वविद्यालय से बी० ए० और तत्पश्चात् १९३० ई० में अलीगढ़ विश्वविद्यालय से एम० एस० सी०, की परीक्षाएँ पास कीं। इसके पश्चात् ये काश्मीर राज्य के अधीन एक स्कूल में अध्यापक नियुक्त हो गये। अक्तूबर १९३२ में यह प्रथम बार मंच (स्टेज) पर आये और खुले बन्दों एक साम्प्रदायिक संस्था, मुस्लिम कान्फ्रेंस की स्थापना की। स्थान-स्थान पर घूम कर इन्होंने अपने उत्तेजक भाषणों द्वारा काश्मीरी मुस्लिम जनता को डोगराशाही के विरुद्ध भड़काया, जिन से उत्तेजित हो कर कई एक स्थानों पर (श्रीनगर, विचार-नाग, शुपैयाँ मीरपुर, पुंछ) धार्मिक उपद्रव भी किये गये, जिनमें लूटमार तथा आगज़नी के कारण अल्पसंख्यकों को जन

व धन की भारी क्षति उठानी पड़ी। फलतः तत्कालीन महा-राजा सरकार द्वारा शेख अब्दुल्ला व इनके अनेक सहयोगी राज्य में गड़गड़ तथा अराजकता फैलाने के अपराध में बन्दी बना लिये गये। धर्मांध उत्तेजित भीड़ को नियंत्रण में लाने के लिये कुछ एक स्थानों पर लाठी प्रहार व गोलीवारी भी की गयी। शेख अब्दुल्ला व इनके साथियों की इस प्रकार की गतिविधियों के कारण, राज्य के अल्पसंख्यकों में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हो गया। जब शेख की यह नीति सफल न हुई तो आखिर कुछ सोच विचार करने के पश्चात् इन्होंने एक नया पैंतरा बदला। ११ जून, १९३९ को एक विशेष प्रस्ताव द्वारा मुस्लिम कान्फ्रेंस को नेशनल कान्फ्रेंस (राष्ट्रीय दल) में बदल दिया गया। मुस्लिम कान्फ्रेंस को नेशनल कान्फ्रेंस में बदल देने से इसकी कार्य नीति में कोई विशेष अन्तर नहीं आया। केवल यह लाभ अवश्य हुआ कि सर्वसाधारण में यह विचार फैल गया कि शेख़ साहब व उनके दल ने अपना संकु-चित दृष्टिकोण बदल दिया है। इस प्रकार राज्य के कुछ अल्पसंख्यक भी इनके द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन में सह-योग देने लग पड़े, परन्तु अधिकतर इनके दल से पृथक ही रहे। इनके इन मित्रों में सरदार बुधसिंह, पं० कश्यप बन्धु, पं० गिरधारीलाल डोगरा, पं० श्यामलाल सर्राफ व मोतीराम बैगड़ा के नाम उल्लेखनीय हैं। मुस्लिम-कान्फ्रेंस को नेशनल कान्फ्रेंस में बदलने के परिणामस्वरूप भारतीय नेताओं (काँग्रेस) की ओर से नेशनल कान्फ्रेंस के प्रत्येक आन्दोलन को पूर्ण समर्थन तथा सहयोग प्राप्त होने लगा। दूसरी ओर

इस परिवर्तन की एक और प्रतिक्रिया हुई कि जम्मूँ प्रान्त की अधिकांश मुस्लिम जनता शेख साहब से बिगड़ गयी। ये लोग लीगी विचारधारा वाले चौधरी गुलाम अब्बास व मिस्टर अल्लारखा सागर के नेतृत्व में मुस्लिम कान्फ्रेंस के झंडे तले एकत्रित हो गये।

क्विट काश्मीर आन्दोलन

१९४६ में शेख साहब द्वारा 'क्विट काश्मीर' अर्थात् काश्मीर खाली करो, आन्दोलन चलाया गया, जिस पर इन्हें पुनः बन्दी बना लिया गया। १९४७ में जब कि ये कारागार में ही थे, इन्हें अखिल भारतीय रियासती संघ (All India states peoples conference) का अध्यक्ष चुन लिया गया। इसी बीच में भारत स्वतन्त्र हो गया, जिसका प्रभाव देश के समूचे राज्यों पर पड़ा। शेख अब्दुल्ला भी जेल से मुक्त कर दिये गये। ३१ अक्तूबर, १९४७ को महाराजा काश्मीर ने प्रशासन के सर्व-अधिकार इन्हें सौंप दिये और इन्होंने (Head of the Emergency Administration) आपात प्रशासन प्रमुख के रूप में शपथ ग्रहण की।

गिलगित्त का विद्रोह

३१ अक्तूबर, ११४७ को शेख अब्दुल्ला ने राज्य का प्रशासनिक भार अपने कन्धों पर लिया। उस दिन काश्मीर के इतिहास में एक ऐसी घटना घटी, जिसका थोड़ा-सा उल्लेख करना यहाँ आवश्यक प्रतीत होता है। गिलगित्त एजेन्सी का

सीमान्त प्रदेश प्राचीन काल से ही जम्मूँ-काश्मीर राज्य का एक आन्तरिक भाग चला आ रहा है। इसके सीमान्त तथा युद्ध सम्बन्धी महत्त्व को ध्यान में रखते हुए अंग्रेज़ों ने महाराजा हरिसिंह से एक सन्धि की थी। जिसके अनुसार यह प्रदेश २५ वर्ष के लिए अंग्रेजों के अधिकार में दे दिया गया था। उधर अंग्रेज़ों का बिस्तर भी गोल होने ही वाला था। आखिर जुलाई '४७ में अंग्रेज़ों ने यह प्रदेश महाराजा काश्मीर को वापस कर दिया। महाराजा हरिसिंह की ओर से रियासती सेना के ब्रिगेडियर श्री घन्सारा सिंह को गिलगित्त का गर्वनर बना कर वहाँ भेजा गया। अक्तूबर में हुए कबायली आक्रमण के समय वहाँ काश्मीर सेना की नम्बर छः बटालियन सुरक्षा कार्य के लिए नियत थी। इनमें आधे सिख तथा शेष मुसलमान थे। इसके अतिरिक्त वहाँ, गिलगित्त स्काउट्स की एक बटालियन भी पड़ी हुई थी, जिसका कमांडर मेजर ब्राऊन नामक एक अंग्रेज़ था। उसने रियासती सेना के मुस्लिम पदाधिकारियों से साजिश कर ३१ अक्तूबर, '४७ की रात, गवर्नर के निवास को चारों ओर से घेरे में ले कर, उन्हें बन्दी बना लिया। रियासती सेना के मुस्लिम सैनिक भी इस षडयन्त्र में शामिल हो गये। सिख सैनिकों में से अधिकतर मार डाले गये और जो बचे उन्होंने इधर-उधर भाग छिप कर अपने प्राणों की रक्षा की। कुछ समय तक पाकिस्तान की कैद में रहने के पश्चात् ब्रि० घन्सारा सिंह तथा अन्य बन्दी बनाये गये रियासती कर्मचारियों को भारतीय सरकार के प्रयत्नों से छुड़ा लिया गया है।

काश्मीर लोकराज्य के प्रथम मुख्य मंत्री

१७ मार्च, १९४८ को शेख साहब ने जम्मूँ-काश्मीर लोक-राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री-पद की शपथ ली और १८ मार्च को अपने मन्त्रिमण्डल का चुनाव किया। इसमें बख्शी गुलाम मुहम्मद उप-मुख्य मंत्री, मिर्ज़ा मुहम्मद अफज़लबेग माल मंत्री, सरदार बुधसिह पुनर्वास मंत्री, पं० श्यामलाल सर्राफ़ खाद्य मंत्री, श्री गिरधारीलाल डोगरा अर्थ मंत्री तथा गुलाम मुहम्मद सादिक को विकास मंत्री का कार्यभार सौंपा गया। अक्तूबर ४७ में, जब कि कबायली लुटेरों ने काश्मीर की सुरम्य घाटी पर चारों ओर से आक्रमण कर दिया, ऐसे समय में शेख साहब ने हिन्दू-मुस्लिम एकता को बनाये रखने का भरसक प्रयत्न किया। इनके कार्यकर्ताओं ने स्थान-स्थान पर घूम कर "शेरे काश्मीर का क्या इर्शाद, हिन्दू-मुस्लिम, सिख इत्तहाद" का नारा लगाया, फलतः काश्मीर-घाटी (श्रीनगर तथा इसके निकटवर्ती क्षेत्रों में) हिन्दू-सिख जन तथा धन की दृष्टि से पूर्ण सुरक्षित रहे।

जागीरदारी का ख़ातमा

मुख्य मंत्री पद को सँभालने के पश्चात् सुरक्षा-परिषद् तथा अन्य स्थानों पर दिये गये अपने प्रत्येक भाषण में शेख साहब ने काश्मीर-भारत विलय का ज़ोरदार समर्थन किया, जिस से पाकिस्तान की दृष्टि में आप कंटक बन कर खटकने लगे। कुछ समय तक इन्होंने अपने कर्त्तव्य को भलीभाँति निभाया तथा लोगों के हित के लिए कुछ सुधार भी किये।

लाखों पीड़ित तथा पददलित किसानों की भलाई के लिए इन्होंने एक विशेष कानून भी बनाया, जिसके फलस्वरूप रियासत में सदियों से चली आ रही जागीरदारी प्रथा का ख़ात्मा कर दिया गया। इसके लिए भू-स्वामी या जागीरदारों को कोई भी धनराशि या मुआवज़ा नहीं दिया गया। इस प्रकार भूमिहीन किसानों को उनके द्वारा चिरकाल से काश्त की जाने वाली भूमि का स्वामी बना दिया गया।

काश्मीर विश्वविद्यालय की स्थापना

दूसरा सराहनीय कार्य जो शेख अब्दुल्ला की सरकार द्वारा सार्वजनिक हित के लिए किया गया, वह था 'काश्मीर विश्वविद्यालय की स्थापना'। इस से पूर्व शिक्षा सम्बन्धी मामलों में जम्मूँ-काश्मीर का अधिक सम्बन्ध पंजाब विश्वविद्यालय से था। जिससे यहाँ के विद्यार्थियों की आर्थिक अवस्था पर भारी प्रभाव पड़ता था। १९४९ में काश्मीर विश्वविद्यालय की स्थापना कर शेख अब्दुल्ला की सरकार ने जनता की एक आवश्यक माँग को पूरा कर दिया।

शेख अब्दुल्ला का पतन

समय की गति बड़ी विचित्र हुआ करती है। शास्त्र भी कहते हैं कि 'मान या उच्च पद पा कर प्रत्येक व्यक्ति में चाहे वह कितना भी विनम्र क्यों न हो, थोड़ा-सा अहंकार तो अवश्य ही आ जाता है'। आखिर शेख अब्दुल्ला जैसे अनुभवी राजनीतिज्ञ भी अपने कुछ नादान मित्रों के बहकावे में

आ कर स्वतन्त्र काश्मीर के सुहावने सपनों में खो गये। धीरे-धीरे अब जनता से भी इनका सम्पर्क कम होता गया। टूटी-फूटी झोंपड़ियों के अन्दर दरिद्रता तथा भूख को देख कर आँसू बहाने वाले शेख साहब, स्वयं सरमायादारी के कुचक्र में उलझ कर रह गये। अब इन्हें महाराजा काश्मीर के राज-भवन में नवाबी ठाठ से निवास करने में विशेष सुख तथा आनन्द अनुभव होता था। जिन शेख साहब को कभी महाराजा हरिसिंह की मोटरों में निर्धन काश्मीरियों का ख़ून जलता हुआ दिखाई पड़ता था, आज उन्हें स्वयं ८० हज़ार में खरीदी गयी 'कैडिलिक' (Cadillac) मोटरकार के अन्दर जम्मूँ-काश्मीर तथा भारत की सड़कों पर शाही ठाठ से इधर-उधर चक्कर काटते हुए देखा जा रहा था।

भ्रष्टाचार

प्रशासनिक अधिकार सँभालते ही शेख साहब ने अपने सम्बन्धियों व मित्रों को राज्य के उच्च पदों पर नियुक्त करना आरम्भ कर दिया। इससे साधारण काश्मीरी जनता को तो कोई विशेष लाभ न पहुँचा और न ही उनकी सदियों से चली आ रही निर्धनता ही दूर हो सकी, हाँ "सैय्याँ भये कोतवाल अब डर काहे का" के कथनानुसार इनमें से अधिकांश ने रियासती जनता को दोनों हाथों से लूटना आरम्भ कर दिया। चहुँ ओर घूँसखोरी अर्थात् रिश्वत का बाज़ार खूब गरम हो गया ।

कस्टम तथा विभिन्न कर

काश्मीर राज्य की सीमा में भारत तथा बाहर से आने वाली प्रत्येक वस्तु पर दस से ले कर सौ प्रतिशत तक कस्टम ड्यूटी बढ़ा दी गयी। उन्हीं दिनों जनसाधारण (किसानों) से हज़ारों मन गल्ला, धान इत्यादि लोगों की इच्छा के विरुद्ध जबरन इकट्ठा किया गया। अन्न रूप में लिया जाने वाला यह 'कर' मुजौवज़ा कहा जाता था। लोग दिन-प्रतिदिन महँगाई के भार तले दबे जा रहे थे। कम वेतन होने के कारण राज्य कर्मचारियों में घूँसखोरी तथा असन्तोष बढ़ता ही जा रहा था। इस बुराई का शिकार भी निर्धन जनता को ही होना पड़ रहा था। सेवा मुक्त तथा अन्य कर्मचारियों की ओर से, निरन्तर वेतन वृद्धि की माँग की जा रही थी।

अनुदान बन्द करना

राज्य की ओर से प्राइवेट शिक्षण संस्थाओं को सहायता रूप में दिये जाने वाले अनुदान बन्द कर दिये गये। इसके साथ ही साथ स्कूलों तथा कॉलेजों में शिक्षा शुल्क (फ़ीस) भी बढ़ा दी गयी।

काश्मीर बाढ़ फण्ड

बाढ़ फण्ड के नाम पर जनता से एक बड़ी धनराशि एकत्रित की गयी, यहाँ तक कि राज्य कर्मचारियों को भी अपना वेतन इस फण्ड में देना पड़ा, परन्तु इसमें से कितना

धन बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ खर्च किया गया, वास्तव में यह किसी को ज्ञात न हो सका ।

शरणार्थी समस्या

पाकिस्तान अधिकृत काश्मीर-क्षेत्र के (मुज़फ़्फराबाद मीरपुर, पुंछ) हज़ारों शरणार्थियों को पुनः बसाने के बहाने काश्मीर प्रान्त से बाहर धकेल दिया गया। कई हज़ार को जम्मूँ के गरम व गैर आबाद इलाक़ों, नगरोटा, नवाँशहर इत्यादि स्थानों पर फटे-पुराने तम्बुओं में निवास करने पर विवश होना पड़ा। शेष भारत के भोपाल, गंगानगर, दिल्ली जैसे दूर गरम प्रदेशों में भेज दिये गये। जहाँ इनमें से अनेक जीवन मरण के इसी संघर्ष में "मारा मुझे परदेस में अपने वतन से दूर" का गीत अलापते हुए हमेशा के लिये काल के मुँह में चले गयें। जो इस संघर्ष में पूरे उतरे इनमें से अधिकांश इन क्षेत्रों से लौट आये। शरणार्थियों से किये जाने वाले इस दुर्व्यवहार से लोगों के दिलों में यह सन्देह बढ़ता ही गया कि अब्दुल्लाशाही काश्मीर राज्य से हिन्दू, सिक्खों को खाली कर देने पर ही तुली हुई है ।

नयी ज़िला बन्दियाँ

जिस योजना को शेख साहब दिल ही दिल में बनाते जा रहे थे हज़ार प्रयत्न करने पर भी वह छिपायी न जा सकती थी। इनकी इन चालाकियों को समझदार लोग पहले ही भाँप चुके थे। जम्मूँ प्रान्त के कुछ क्षेत्रों को एक दूसरे से काट

कर इस ढंग से नयी ज़िला बन्दी की गयी कि इस राजनीतिक चाल से वहाँ की बहु संख्यक हिन्दू जनता को अल्प संख्या में बदलना पड़ा। मुख्यत: ज़िला डोडा को, शेख की इस चाल का शिकार होना पड़ा।

वज़ीर कमेटी की सिफ़ारशात

जागीरदारी की समाप्ति, तथा भूमि के बटवारे सम्बन्धी कानून से जम्मूँ प्रान्त के लोग सन्तुष्ट न थे। उनकी माँग थी कि जम्मूँ प्रान्त में लोगों को कुछ अधिक भूमि रखने का अधिकार दिया जाए, क्योंकि यह प्रदेश, काश्मीर प्रान्त की अपेक्षा ख़ुश्क तथा कम उपजाऊ है। जनता की इस माँग पर विचार करने के लिए सरकार की ओर से एक समिति या कमेटी बनायी गयी, जिसे 'वज़ीर कमेटी' का नाम दिया गया। इस समिति के प्रतिष्ठित सदस्यों ने मामले की पूरी जाँच करने के पश्चात् अब्दुल्ला सरकार को दी गयी अपनी रिपोर्ट में जम्मूँ निवासियों की इस माँग को न्यायोचित ठहराया, परन्तु शेख साहब ने अपनी सरकार द्वारा निर्मित इस समिति की रिपोर्ट पर कोई ध्यान न दे कर, उसे रद्दी की टोकरी में डाल दिया।

डोगरा विरोधी नीति

प्रशासनिक अधिकार सँभाल लेने के पश्चात्, शेख साहब प्राय: अपने सभी भाषणों में महाराजा हरिसिंह तथा डोगरों के विरुद्ध विष वमन करने लग पड़े। इनकी इस नीति से साधारण काश्मीरी जनता में डोगरों के प्रति विरोधी भावनाएँ

अधिक तीव्र हो उठीं और यह भेद इस सीमा तक जा पहुँचा कि गर्मियों में जब राज्य सरकार के कार्यालय जम्मूँ से श्रीनगर के लिए स्थानान्तरित हो जाते थे तो डोगरा कर्मचारियों को किराया पर मकानों तक का मिलना एक समस्या बन चुकी थी। यह विष, शिक्षण संस्थाओं में भी प्रवेश कर चुका था। काश्मीर विश्वविद्यालय की परीक्षा के एक प्रश्नपत्र में डोगरों को अत्याचारी तथा अन्य बुरे शब्दों से कोसा गया था। कहीं कहीं लोग यह कानाफूसी करते भी सुने जाते थे कि जिस निज़ाम हैदराबाद के राज्य में रज़ाकार नेता कासिम रज़वी ने भारत सरकार से चार दिन तक डट कर ताकत आज़मायी की वह तो वहाँ का राजप्रमुख बना ही रहा, किन्तु लन्दन की गोलमेज़ कान्फ्रेंस* में कांग्रेस तथा आज़ादी की

---

* १९३० ई० में लन्दन में भारतीय महाराजाओं की एक गोलमेज कान्फ्रेंस हुई, जिसमें महाराजा हरिसिंह भी शामिल हुए और वहाँ घोषणा की "कि मेरी रियासत में ७० प्रतिशत मुसलमान और ३० प्रतिशत हिन्दू रहते हैं। वह आपस में प्रेमपूर्वक मिल-जुल कर रह रहे हैं। मेरी रियासत में किसी प्रकार का कोई साम्प्रदायिक तनाव नहीं है"। उन्होंने अपने भाषण में यह भी कहा "कि अगर भारत स्वतन्त्र हो जाए तो मैं पहला व्यक्ति हूँगा, जो अपनी रियासत को भारतीय फ़ेडरेशन में शामिल करने को तैयार रहूँगा।" महाराजा की इस घोषणा का जहाँ सारे भारत में स्वागत किया गया वहाँ अंग्रेज़ शासकों की अट्टालिकाओं में एक भूकम्प-सा आ गया। महाराजा उसी दिन से उनकी नज़रों में काँटे की भाँति खटकने लग पड़े। इस घोषण के पश्चात् उन्होंने शेख अब्दुल्लाको अपनी कठपुतली बना कर अनेक प्रकार के षड्यन्त्रों का जाल बिछाना आरम्भ कर दिया।

खुले बन्दों हिमायत करने वाले महाराजा हरिसिंह को केवल शेख की खुशनूदी के लिए राज्य से निष्कासित होना पड़ा। कुछ दिनों के पश्चात् रियासती सेना की डोगरा पल्टनों को राज्य से बाहर भेज दिया गया। इस पर भी जन साधारण में यह भ्रम फैल गया कि यह सब कार्यवाही शेख साहब के संकेत पर ही की जा रही है।

पक्षपात पूर्ण व्यवहार

भारत सरकार की ओर से समय-समय पर दी जाने वाली धनराशि का अधिक भाग काश्मीर प्रान्त में ही ख़र्च किया जा रहा था। जम्मूँ प्रान्त के इलाक़ा कंडी, तहसील भद्रवाह के इलाक़ा शिव्वा तथा तहसील किश्तवाड़ के लोगों की यह प्रबल माँग थी कि उनके लिए सिंचाई तथा पीने के पानी की कठिनाई को दूर करने के लिए उन क्षेत्रों में नहरें खुदवायीं जाएँ। इलाक़ा किश्तवाड़* में नहर की खुदायी का काम आरम्भ भी कर दिया गया, जो कई मास तक चालू रहा। परन्तु लाखों रुपये का अपव्यय करने के पश्चात् भी वह अधूरा काम वहीं ठप्प हो कर रह गया। सरकारी मुलाज़मतों तथा शिक्षण संस्थाओं में छात्र-वृत्तियाँ देते समय योग्यता के मूल सिद्धान्त को भुला कर प्रान्तीयता की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा था।

---

* इलाका किश्तवाड़ में १९ मील लम्बी नहर की खुदाई का काम आरम्भ भी कर दिया गया जो कई मास तक चालू रहा, किन्तु २७ लाख रुपये का अपव्यय करने के पश्चात् भी वह काम अधूरा ही रह गया, हालाँकि नहर की खुदाई १३ मील तक हो चुकी थी।

भाषण तथा लेख पर प्रतिबन्ध

अपनी सरकार पर सुधारात्मक ढंग से की जाने वाली आलोचना लोक-तन्त्र का प्राण मानी गयी है। विचारों की स्वतन्त्रता, मंच तथा समाचार पत्रों द्वारा उनको निडरता से प्रकट करना प्रत्येक नागरिक का मूल अधिकार है। इसी सिद्धान्त की प्राप्ति के लिए स्वयं शेख साहब ने महाराजा सरकार के विरुद्ध वर्षों तक आन्दोलन चलाया। किन्तु शासन सँभालने के कुछ ही समय के पश्चात्, जब जनता की ओर से प्रशासन में बढ़ रही त्रुटियों की ओर इनका ध्यान आकृष्ट किया जाने लगा तो उन पर ठंडे मन से विचार करने के बजाए, उन लोगों को ही कारागार में बन्द करना आरम्भ कर दिया। वर्षों से चल रहे अमर, मार्त्तंड, देशसेवक, रंबीर आदि अनेक लोक प्रिय समाचार पत्रों पर ऐसा प्रतिबन्ध लगा दिया कि विवश हो कर बहुतों को अपना प्रकाशन तक बन्द करना पड़ा। उत्तरी भारत के प्रसिद्ध उर्दू पत्र दैनिक प्रताप, तथा साप्ताहिक 'हिन्दू' जालन्धर के काश्मीर प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। केवल वही पत्र पनप सकते थे, जो शेख साहब की हाँ में हाँ मिलाना ही अपना कर्त्तव्य समझते थे। राज्य के अन्दर मच रही इस धाँधली से लोगों के मुँह पर रह-रह कर यही मिसरा आता था।

न तड़पने की इजाजत है, न फर्याद की है,
घुट के मर जाऊँ यह मरजी मेरे सय्याद की है।

राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति उदासीनता

शेख अब्दुल्ला के प्रशासन काल में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति बड़ी उदासीनता दिखाई गयी। अनेक हिन्दी संस्कृत पाठशालाएँ जो धरमार्थ विभाग या अन्य प्राईवेट संस्थाओं की ओर से, वर्षों से चलायी जा रही थीं, राज्य सरकार की ओर से सहायता (अनुदान) न मिलने पर बन्द कर दी गयीं। प्राथमिक पाठशालाओं के लिये जो हिन्दी पुस्तकें स्वीकार की गयी थीं, उनमें उर्दू के कठिन शब्द देवनागरी लिपि में लिखे गये थे, भगवती, महारानी सीता जी के लिए बेगम सीता या इसी प्रकार के अन्य विचित्र शब्द लिख दिए गये थे। काश्मीर विश्वविद्यालय की भूषण तथा प्रभाकर की हिन्दी परीक्षाओं में बैठने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा फल बड़े ही निराशाजनक थे। इन सब कारणों से हिन्दी प्रेमी जनता में शेख साहब के प्रति अविश्वास तथा रोष की प्रबल भावनाएँ उत्पन्न होती जा रही थीं।

दुरंगी चालें या बहुरूपियापन

सब से भयानक भूल, जिसने जलती पर तेल का काम किया, वह थी शेख अब्दुल्ला की दुरंगी नीति तथा काश्मीर विधान सभा के कुछ एक सदस्यों द्वारा भारतप्रेमी जनता को दी जाने वाली धमकियाँ। अपने भारत तथा जम्मूँ प्रान्त के अधिकतर भाषणों में शेख साहब यह घोषणा करते हुए न थकते थे कि भारत काश्मीर विलय पर काश्मीरियों ने अपना अन्तिम निर्णय दे दिया है। जम्मूँ काश्मीर विधान सभा, जो

शेख साहब के नेतृत्व में काम करने वाली, जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों की एक मात्र जमायत थी, ने नवम्बर १९५१ के ख़ात्मे पर अपना काम आरम्भ कर दिया था। इस सभा द्वारा भारत-काश्मीर मिलाप के निर्णय का पूरा-पूरा समर्थन किया गया। परन्तु काश्मीर घाटी में शेख साहब यह कहते हुए सुनाई पड़ते थे "काश्मीरियो, काश्मीर तुम्हारा है और यह तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है कि तुम अपना भाग्य भारत अथवा पाकिस्तान, जिससे भी चाहो जोड़ सकते हो।" उन्हीं दिनों शेख अब्दुल्ला के एक खास विधानसभाई लेफ्टिनेन्ट तो इस हद तक बढ़ गये कि उन्होंने भद्रवाह की एक सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए, भारतप्रेमियों को खुले शब्दों में यह धमकी दी कि जो लोग यहाँ भारत-भारत की रट लगाते फिरते हैं, वे कान खोल कर सुन लें कि काश्मीर काश्मीरियों का है। यदि वे यहाँ रहना चाहते हैं तो इस प्रकार रहें जैसे ३२ दाँतों के अन्दर ज़बान रहती है। यदि उन्हें भारत में ही जाना हो तो वे यहाँ से पठानकोट चले जाएँ, क्योंकि भारत की सीमाएँ वहाँ से ही आरम्भ होती हैं। "मरज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की" के कथनानुसार श्रीनगर के कुछ भरे जलसों में शेख साहब की उपस्थिति में ही, 'पाकिस्तान ज़िन्दाबाद', "ग़ैरमुल्की फौजें निकाल दो" के गद्दाराना नारे भी लगाए गए। परन्तु राज्य के अन्दर बढ़ रही इस देशद्रोहिता पूर्ण पाकिस्तानी मनोवृत्ति के दमन की ओर शेख साहब ने कोई विशेष ध्यान न दिया। शेख साहब व उनके

उनके इन नादान मित्रों की गति विधियों से भारतप्रेमी जनता के अन्दर भारी क्षोभ उत्पन्न होता गया। यही नहीं जनता ने उन्हें अपने नीचे दिये जा रहे शब्दों में चुनौती दे कर सावधान करना चाहा।

शेख अब्दुल्ला को चुनौती

हो चुकी बस इन्तहा न आज़माओ शेख जी,
ज़ख्मे दिल पर और न चरके लगाओ शेख जी।
सबर का पैमाना भी अब हो चुका लबरेज़ है,
बात का नाहक बतंगड़ न बनाओ शेख जी।
जम्मूँ और लद्दाख से सौतेली माँ का-सा सलूक,
हो रहा है किस लिये यह तो बताओ शेख जी।
भद्रवाह को कर दिए हो क्यों उधमपुर से अलग,
यह क्या सयासी चाल है सच-सच बताओ शेख जी।
सह नहीं सकते हैं हम महँगाई ऐसी कमर तोड़,
लानते कस्टम को अब जल्दी हटाओ शेख जी।
दरबदर हैं फिर रहे शरणार्थी कश्मीर के,
उनकी आहों से ज़रा तो खौफ़ खाओ शेख जी।
खत्म की जागीरदारी यह कदम अच्छा लिया,
महकमा धरमार्थ पर मत हक जमाओ शेख जी।
जो कहें बातें खरी वह हो गये फिरका परस्त,
राज़ अपने दिलके न हम से छुपाओ शेख जी।
माँग मुतहिद्दा है इक झंडा तिरंगा देश का,
हिन्द का क़ानून भी लागू कराओ शेख जी।

इक जम्हूरी राज में दो सदर हो सकते नहीं,
बस करो यह उल्टी गंगा न बहाओ शेख जी ।
फातहे लद्दाख और गिलगित्त जो निर्भीक हैं,
गोलियों का डर उन्हें अब न दिखाओ शेख जी ।
हिन्द में जल्दी मिलाओ जम्मूँ व कश्मीर को,
लग चुकी है आग जो उसको बुझाओ शेख जी ।

एक विधान, एक प्रधान, एक निशान की माँग

अक्तूबर १९४७ से ही समूचे जम्मूँ-काश्मीर राज्य को भारत में मिला दिया गया था। काश्मीर नेशनल कान्फ्रेंस ने १२ अक्तूबर, १९४८ को अपने एक विशेष अधिवेशन में भारत में स्थायी रूप में शामिल होने का दृढ़ निर्णय कर लिया था। काश्मीर विधान सभा के अन्तिम निर्णय ने काश्मीर और भारत को सदा के लिए एक प्रेम सूत्र में बाँध दिया। जुलाई १९५२ में हुए दिल्ली समझौते ने रही सही कसर भी पूरी कर दी। परन्तु यह सब कुछ होते हुए भी इस राज्य को भारतीय विधान, प्रधान, भारतीय तिरंगे, सुप्रीम कोर्ट, आडीटर जनरल तथा इलेक्शन कमिश्नर के अधिकार क्षेत्र में देने के लिए आनाकानी तथा टालमटोल की नीति को अपनाया जा रहा था। दूसरी ओर रियासती जनता यह प्रबल माँग कर रही थी कि दिल्ली समझौते को शीघ्रातिशीघ्र अमली जामा पहनाया जाए। शेख साहब पर यह आरोप लगाया जा रहा था कि उन्होंने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए ही यह सब चालें चलनी आरम्भ की हैं। राज्य के सभी अल्पसंख्यक, शेख की इस

घातक नीति को बड़े सन्देह की दृष्टि से देख रहे थे। पीछे लिखे गये कारणों से दिन पर दिन बढ़ रही अशान्ति तथा असन्तोष के बारे में मंच, पत्र तथा प्रस्तावों के द्वारा शेख साहब तथा उनकी सरकार को अनेक बार अवगत कराया जा चुका था। परन्तु चिऊंटी के पर निकल आये थे, इस लिए राज्य की जनता द्वारा दी गयी इस चेतावनी से शेख साहब के कान पर जूँ तक न रेंगी और उन्होंने जनता की न्यायोचित माँगों पर ध्यान देने के बजाय कारागार तथा लाठी, गोली का आश्रय लिया।

प्रजा परिषद का आन्दोलन

अन्ततः विवश हो, ऊपर वर्णन की गयी आर्थिक, तथा राजनीतिक परिस्थितियों से छुटकारा पाने के लिए जम्मूँ प्रान्त की जनता ने डुग्गर के सत्तर वर्षीय वृद्ध सेनापति पं. प्रेमनाथ जी डोगरा, प्रधान प्रजा परिषद के नेतृत्व में दिनांक २१ नवम्बर, १९५२ को एक राज्यव्यापी आन्दोलन आरम्भ कर दिया। सत्याग्रह का विगुल बजते ही हज़ारों स्वयंसेवक अब्दुल्लाशाही के अत्याचारों का खात्मा करने के लिए संग्राम क्षेत्र में कूद पड़े।

अब्दुल्लाशाही का दमन चक्र

सत्याग्रह के श्री गणेश के साथ ही शान्त सत्याग्रहियों पर अब्दुल्लाशाही का दमन-चक्र भी चल पड़ा। सैंकड़ों सत्याग्रहियों को भारतीय तिरंगा फहराने के अपराध में कारावास की

तंग व तारीक कोठरियों में भेड़ बकरियों की तरह ठूँस दिया गया। अनेक कार्यकर्त्ताओं की सम्पत्ति ज़ब्त कर उन्हें राज्य से निष्कासित कर दिया गया। जम्मू व इसके कई उपनगरों, भद्रवाह इत्यादि में शान्त प्रदर्शनकारियों पर भीषण लाठी वर्षा की गयी। छम्ब, सुन्दरबनी, जोड़ियाँ, हीरानगर तथा रामबन में सत्याग्राहियों पर निर्दयता पूर्वक गोलियाँ बरसायी गयीं, जिसके फलस्वरूप लगभग डेढ़ दर्जन भारतप्रेमियों को इस महायज्ञ में अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी और सैकड़ों को घायल होना पड़ा।

प्रजा परिषद् के सत्याग्रह आन्दोलन के शहीद

जिन वीरों ने अपने सीनों में अब्दुल्लाशाही की बन्दूकों के निशाने झेले और सदा के लिए अमर हो गये, जिनके बलिदानों से जम्मूँ-काश्मीर राज्य भयानक पतन से सुरक्षित हो गया उन अमर वीरों के नाम नीचे दिये जा रहे हैं।

क्रम सं०	नाम	स्थान	प्रान्त
१.	श्री मेला राम	छम्ब (अखनूर)	जम्मूँ
२.	,, नानक चन्द	घोंचक (ज्योड़ियाँ)	,,
३.	,, बसन्त चन्द	मट्टू ,,	,,
४,	,, बल्देव सिंह	रति रन्दा ,,	,,
५.	,, साँई सिंह	भोपर ,,	,,
६.	,, वर्याम सिंह	,, ,,	,,
७.	,, त्रिलोक सिंह (ग)	पर्गवाल ,,	,,
८.	,, कृष्ण लाल	सोदरा (संडरबनी	,,

९. ,, बाबा रामजी दास पुखरनी ,, ,,
१०. ,, बेलीराम भजवाल ,, ,,
११. ,, बिहारी लाल छन्न मोराँ (हीरानगर) ,,
१२. ,, भीखम सिंह हीरानगर ,, ,,
१३. ,, शिवाजी बलोत (रामबन) ,,
१४. ,, देवी सरण ,, ,, ,,
१५. ,, भगवान दास कंठी ,, ,,

इन देशवीरों की छम्ब, ज्योड़ियाँ, संडरबनी, हीरानगर और रामबन में समाधियाँ बनी हुई हैं, जहाँ प्रतिवर्ष इन वीरों की याद मनाई जाती है, मेले लगते हैं और हज़ारों लोग एकत्र हो कर इन देशभक्तों को निम्न शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं :

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही बाक़ी निशाँ होगा ।

२२ नवम्बर को पं० प्रेमनाथ जी डोगरा को गिरफ्तार कर के श्रीनगर के एक जेल में बन्द कर दिया गया । जम्मूँ प्रान्त के सभी जेल भर जाने के पश्चात् सत्याग्रहियों को श्रीनगर के सेन्ट्रल जेल में भेजा जाने लगा, जहाँ उनके साथ अत्यन्त अमानुषिक व्यवहार किया जाता था । सत्याग्रह जम्मूँ प्रान्त के ग्राम-ग्राम में दावानल की तरह फैल चुका था । वन्दी बनाये जा रहे लोगों में, विद्यार्थी, व्यापारी, वकील, किसान तथा बड़े-बड़े सेवा मुक्त सैनिक-असैनिक कर्मचारियों के अतिरिक्त प्रत्येक वर्ग तथा धर्म के लोग शामिल थे ।

बेचारे शेख साहब व उनकी सरकार ने अपने तरकस के सभी तीर खाली कर दिये पर "मरज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की" की कहावत के अनुसार सत्याग्रह तीव्र गति धारण करता ही गया।

सत्याग्रह को असफल करने के दाव पेंच

जब शेख साहब को किसी भी ढंग से सफलता न मिली तो उन्होंने 'फूट डालो और शासन करो' की घृणित नीति को अपनाना चाहा। फूट डलवाने के लिए हिन्दू-मुस्लिम, ब्राह्मण-क्षत्रिय, सवर्ण-हरिजन, जागीरदार-काश्तकार की उलझनें उत्पन्न करने के असफल प्रयास तक किये गये। भारत सरकार के आगे जम्मूँ प्रान्त के हिन्दुओं की साम्प्रदायिकता का रोना रोया गया। सत्याग्रह के समाचार तोड़-मरोड़ कर बतलाए गये। ठीक-ठीक समाचार प्रकाशित करने वाले समाचार पत्रो पर सेन्सर की कैंची चला दी गयी। पर किसी कवि के इन शब्दों के अनुसार :—

सच्चाई छिप नहीं सकती बनावट के उसूलों से,
कि खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज के फूलों से।

शेख साहब की सरकार का कोई भी हथियार कारगर न हो सका। सत्याग्रह को चलते कई मास बीत चुके थे। दूसरी ओर भारतीय जनता की सहानुभूति दिन पर दिन प्रजा परिषद के पक्ष में बढ़ती जा रही थी। भारत के कुछ नेताओं द्वारा शेख साहब से अनुरोध भी किया गया कि वह राज्य में बढ़ रही अराजकता तथा अशान्ति के कारणों को मैत्रीपूर्ण

ढंग से सुलझाएँ, परन्तु शेख साहब ने इस प्रकार के प्रत्येक परामर्श को बहरे कानों सुना।

डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी का काश्मीर लिए प्रस्थान तथा गिरफ्तारी

आखिर भारतीय जनसंघ के नेता अमर शहीद डॉक्टर मुकर्जी ९ मई, १९५३ की प्रातः ६½ बजे रियासत जम्मूं व काश्मीर की दुखी जनता के ज़ख्मों को अपनी आँखों देखने और मसला का हल ढूंढने के लिए देहली से रवाना हो पड़े। आपने रवानगी से पूर्व पत्रकारों को एक प्रेस कान्फ्रेंस में बतलाया कि मुझे जम्मूं से ऐसे समाचार मिल रहे हैं कि वहाँ दिल को हिला देने वाले भयानक अत्याचारों का चक्कर चलाया जा रहा है। पिछले तीन मास से अनेक बार यह प्रयत्न किया गया कि ठीक परिस्थितियों का अध्ययन करने के लिए वहाँ निष्पक्ष लोग भेजे जाएँ परन्तु उन्हें वहाँ जाने के लिये परमिट नहीं दिया जाता। उन्होंने अपने वक्तव्य के दौरान यह शब्द भी कहे कि जो लोग भारत की एकता के लिये संघर्ष कर रहे हैं, उन्हें वहाँ जाने की आज्ञा नही दी जाती। मैं नहीं समझता कि भारत सरकार को यह अधिकार कैसे हासिल हो सकता है कि वह अपने किसी नागरिक को भारत के किसी भाग में जाने से रोके, हाँ किसी स्थान पर जाने के पश्चात् यदि कोई व्यक्ति कानून को तोड़ता है तो उसे उसके परिणाम का सामना करना होगा। आपने यह भी कहा कि मेरा जम्मूँ जाने का केवल इतना ही काम है कि वहाँ

के हालात को मैं अपनी आँखों से देख सकूँ। यदि सम्भव हो सका तो प्रजा-परिषद के आन्दोलन को सम्मानपूर्वक ढंग से समाप्त कराने का यत्न करूँगा, जिससे देशहित को लाभ हो। पर शेख साहब यह कब सहन कर सकते थे कि उनके ढोल की पोल खुले। ११ मई, १९५३ को ज्यों ही डॉक्टर साहब ने लखनपुर के पास काश्मीर सीमा में प्रवेश किया त्यों ही उन्हें उनके दो अन्य साथियों श्री टेक चन्द तथा वैद्य गुरुदत्त जी सहित बन्दी बना लिया गया। इसके पश्चात् उन्हें श्रीनगर ले जा कर एक छोटे से बँगले में नज़रबन्द कर दिया गया।

डॉक्टर साहब का बलिदान

लगभग डेढ़ मास तक नज़रबन्दी की हालत में रहने के पश्चात् २३ जून, १९५३ को डॉक्टर साहब ने काश्मीर की पवित्र धरती पर, जिससे उन्हें हार्दिक प्रेम था, काश्मीर-भारत मिलाप के हेतु अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। भारत के महान् नेता, प्रतिष्ठित नागरिक, सुयोग्य राजनीतिज्ञ, मुकर्जी की अब्दुल्लाशाही की नज़रबन्दी में हुई मृत्यु से देश भर में क्षोभ उत्पन्न हो गया। जनता द्वारा सरकार से यह प्रबल माँग की गयी कि मुकर्ज़ी की इस प्रकार बेबसी में हुई आकस्मिक मृत्यु की न्यायपूर्ण जाँच करायी जाए। पर हुआ क्या, वही ढाक के तीन पात। सत्य, अहिंसा तथा लोकतन्त्र का ढिंढोरा पीटने वाले नेताओं में से किसी को भी

इतनी हिम्मत न हुई कि वह जनता की इस न्यायोजित माँग को मान कर दूध का दूध, पानी का पानी अलग कर दिखाएँ।

प्रजा परिषद आन्दोलन की समाप्ति

प्रजा परिषद आन्दोलन ने अब्दुल्लाशाही की दुरंगी चालों तथा अत्याचारों का भाँडा चौराहे पर फोड़ कर रख दिया। बेचारे शेख साहब अपने विरोधियों पर दाँत पीस कर रह गये। आखिर शहीदों का बेक़रार खून रंग लाया। प्रजा परिषद के सत्याग्रह के सामने शेख साहब तथा उनकी सरकार का दुराग्रह न टिक सका। "सत्यमेव जयते" आखिर सत्य की ही विजय होती है। ७ जुलाई, १९५३ को साढ़े सात मास की लम्बी अवधि के पश्चात् जेलों के द्वार खुल गये। हज़ारों सत्याग्रही "भारत माता की जय" "जिस धरती पर लाल गँवाये वह कश्मीर हमारा है" के गगन भेदी जयकारों के साथ हाथों में तिरंगे झंडे उठाये विजयी वीरों की भाँति अपने-अपने घरों की ओर चल पड़े। सत्याग्रह के प्रधान अधिनायक पं० प्रेमनाथ जी डोगरा तथा उनके अन्य सहकारी, जब जेल से मुक्त होने के पश्चात् जम्मूँ पहुँचे तो उनके स्वागत के लिये जनता का एक तूफ़ान-सा उमड़ पड़ा। प्रान्त के प्रमुख नगरों में रात को दीपमाला सजायी गयी। सत्याग्रह की समाप्ति पर भारत में प्रसन्नता की एक लहर-सी दौड़ गयी। हर छोटे-बड़े देशवासी के मुँह पर बार-बार यही शब्द आ रहे थे।

"कुर्बानी शहीदों की इक रंग रही ला कर,
बलिदान मुकरजी का, कश्मीर की धरती पर।

शेख अब्दुल्ला विदेशी राजनीतिज्ञों के कुचक्र में

"विनाश काले विपरीत बुद्धि" अर्थात् जब किसी के बुरे दिन आते हैं तो उसकी बुद्धि भी पलट जाती है । वह अपने शत्रु तथा मित्र में कोई भेद नहीं समझता । वह अपने शत्रु को तो अपना हितचिन्तक समझने लगता है और मित्रों को शत्रु । अहंकार, बहकावे तथा लालच में आ कर बड़े-बड़े देश भक्त तथा अनुभवी राजनीतिज्ञ भी हिमालय-सी बड़ी भूल कर बैठते हैं । ठीक इन्हीं हालात से शेख साहब को भी दो-चार होना पड़ा । राज्य के सर्वप्रमुख प्रशासन अधिकारी होने के नाते राज्य भर में पूरी शान्ति तथा व्यवस्था को बनाये रखने का दायित्व भी इनके ही कन्धों पर था । इनके प्रशासन को सम्भालने से पूर्व कुछ पाकिस्तानी मनोवृत्ति के व्यक्ति रियासत के उच्च पदों पर काम कर रहे थे । उनकी हमदर्दी शेख साहब की अपेक्षा, पाकिस्तान से कहीं अधिक थी । इसके अतिरिक्त कुछ 'लाल मुंडिये' भी इन्हें अपने पथ से विचलित करने का भरसक प्रयत्न कर रहे थे । फरवरी १९४८ में, शेख साहब न्यूयार्क (अमरीका) में हो रहे यू०एन०ओ० के एक अधिवेशन में, भारतीय प्रतिनिधि-मंडल के एक सदस्य के रूप में वहाँ गये । पाकिस्तान की ओर से भेजे गये प्रतिनिधिमंडल में आज़ाद काश्मीर के नेता सरदार इब्राहीम भी शामिल थे । वहाँ प्रथम बार स्वतन्त्र काश्मीर के विचार का भारी समर्थन किया गया । यूरोप के प्रतिनिधिमंडल के कुछ सदस्यों द्वारा यह प्रयत्न भी किया

गया कि इस विषय पर शेख साहब और सरदार इब्राहीम के मध्य वार्त्ता भी कराई जाए। पाकिस्तानी प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख सदस्य को जब इस रहस्य का पता चला तो उसने सरदार इब्राहीम को इस वार्त्ता में भाग लेने से रोक दिया और आवेश में आ कर रातोंरात वहाँ से पाकिस्तान लौटा दिया। न्यूयार्क के उसी दौरे के पश्चात्, शेख अब्दुल्ला स्वतन्त्र काश्मीर का सुहावना सपना अपने मस्तिष्क में बिठा लाए। इसके पश्चात् १९४९, में यू०एन० सेक्रेटरी जनरल के निजी प्रतिनिधि श्री ERIK-COLBAN ने भी इसी विषय पर बेगम अब्दुल्ला से घंटों बात-चीत की। बेगम अब्दुल्ला के विषय में तो यह कहा जाता था कि वह पहले से ही काश्मीर-भारत विलय का प्रत्यक्ष रूप में विरोध कर रही थीं। शेख साहब की भारत-काश्मीर मिलाप की अनेक घोषणाओं के फल स्वरूप उनका भारत से एकाएक सम्बन्ध विच्छेद करना कुछ कठिन-सा प्रतीत हो रहा था। इसलिए अब उन्होंने काश्मीर भारत विलय के निर्णय को शीघ्र क्रियान्वित करने के बजाय उसे स्थगित या लम्बा करने की नीति को अपना लिया। अब इन्होंने एक कदम और बढ़ा लिया और पंडित नेहरू तथा केन्द्रीय मन्त्रिमंडल की जानकारी के बिना ही, अपने स्वतन्त्र काश्मीर सम्बन्धी विचारों को इंग्लैंड व अमरीका के पत्र-सम्वाददाताओं को भेजना आरम्भ कर दिया। जिस पर वहुत से विदेशी पत्रकारों ने अपने समाचार पत्रों में शेख साहब के इन विचारों की सराहना करते हुए इन पर खूब टीका-टिप्पणी की। १९५३ के मई मास के आरम्भ में श्री ADLA1-STEVENSON

अपना संसार का भ्रमण करते हुए काश्मीर पहुँचे। उनके श्रीनगर पहुँचने पर शेख साहब ने इस विषय पर उन से खूब घुलमिल कर बात-चीत की ।

१९५२ का दिल्ली-समझौता तथा शेख साहब

जुलाई १९५२ में हुए काश्मीर-भारत समझौते के अनुसार काश्मीर राज्य की ओर से अपने कुछ विभाग केन्द्रीय सरकार के अधिकार-क्षेत्र में दिये जाने का वचन तथा विश्वास दिलाया गया था। कुछ दिनों के पश्चात् भारतीय सरकार ने काश्मीर की आन्तरिक सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अब्दुल्ला सरकार से यह माँग की, कि बह राज्य के मार्ग, डाक तथा तार विभाग केन्द्र को सौंप दे, परन्तु शेख साहब ने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया। इसके पश्चात् उसी मास की १८ तारीख़ (१८ मई) को शेख साहब ने काश्मीर के वित्त या अर्थ विभाग को भारत के अधिकार में देने, तथा भारतीय सुप्रीम कोर्ट को जम्मूँ व काश्मीर प्रदेश पर लागू करने का भारी विरोध किया। शेख साहब द्वारा समय-समय पर रणवीरसिंह पुरा (जम्मूँ) तथा अन्य स्थानों पर दिये गये वक्तव्यों तथा "मैं न मानूँ" की इस त्रिया-हठ ने भारत तथा समूचे काश्मीर राज्य में एक उथल-पुथल-सी मचा दी। स्वयम् शेख साहब के अपने मन्त्रिमंडल द्वारा उन की इस घातक नीति का कड़ा विरोध किया गया। उस समय काश्मीर-भारत पूर्ण विलय के लिए चल रहा प्रजा परिषद आन्दोलन भी पूरे यौवन पर था। राज्य में फैली इस अफरातफरी तथा अन्य गुत्थियों को

सुलझाने के लिए भारत के प्रधान मन्त्री श्री पं० नेहरू ने शेख अब्दुल्ला को दिल्ली बुला भेजा, पर पंडित जी के बार-बार बुला भेजने पर भी उन्होंने दिल्ली का रुख न किया। इन्हें मनाने के लिए दिल्ली से बड़े-बड़े कांग्रेसी नेता श्रीनगर पहुँचे। स्वर्गीय मौलाना आज़ाद ने श्रीनगर पहुँच कर इन्हें समझाने का पूरा प्रयत्न किया, पर शेख साहब ने मौलाना का अपमान करते हुए उनकी एक न मानी। अब इन्होंने अपना आवरण (नकाब) फेंक दिया और अपने प्रत्येक भाषण में केन्द्रीय सरकार तथा भारतीय नेताओं पर खुले बन्दो साम्प्रदायिकता का आरोप लगाने लग पड़े। भारत के प्रधान मन्त्री इन्हें प्रेम-भाव से दिल्ली आने का बुलावा दे रहे थे और शेख अब्दुल्ला अपने अभिमान में आ कर भारत के हृदय-सम्राट के प्रेम भरे निमंत्रण को बार-बार ठुकरा रहे थे। "जिसका खा रहे थे, उसे ही गुर्रा रहे थे।" "जिस पात्र में खा रहे थे, उसी में छेद करने जा रहे थे।" "जिस शाख का सहारा लिए थे, उसे ही काटने की चिन्ता में थे।" शेख द्वारा किये गये, इस राजनीतिक विश्वासघात की घर-घर में चर्चा हो रही थी तथा भारत के सभी राजनीतिक क्षेत्रों में इसे देश-द्रोह माना जा रहा था। इनकी भारत के प्रति नावफादारी का सन्देह पूर्ण विश्वास में बदल गया।

शेख अब्दुल्ला की गिरफ्तारी

शेख अब्दुल्ला की इस गतिविधि से प्रशासन तथा राज्य की आन्तरिक सुरक्षा को हानि पहुँचने की भारी संभावना

प्रतीत होने लगी। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए सदरे रियासत श्री युवराज कर्णसिंह ने एक विशेष आज्ञा द्वारा इन्हें मुख्य मन्त्री पद से हटा दिया। पूर्व इसके कि यह राज्य में कोई नया ही गुल खिलाते, ९ अगस्त, १९५३ को इन्हें काश्मीर सेफ्टी एक्ट के अन्तर्गत गुलमर्ग में गिरफ्तार कर लिया गया। शेख के इस प्रकार नाटकीय ढंग से गिरफ्तार किये जाने पर जम्मूँ-काश्मीर राज्य में आशंकित एक भारी खतरा दूर हो गया। शेख साहब के निजी मित्रों तक ने सदरे रियासत की इस सामयिक कार्यवाही पर इन्हें बधाई के तार भेजे। इनके मन्त्रिमंडल के एक प्रमुख वयोवृद्ध सदस्य सरदार बुध सिंह ने अपने अनेक भाषणों में शेख साहब को 'प्रकाश की एक किरण' तथा 'अवतार' तक के महान् शब्दों से सम्मानित किया था। इन्होंने भी शेख की गिरफ्तारी को सामयिक तथा न्यायोचित बता कर इस बात पर भारी हर्ष प्रकट किया। हमारे प्रधान मन्त्री, शेख अब्दुल्ला के परम हितैषी मित्रों में से एक हैं। इन्हें शेख की गिरफ्तारी से हार्दिक दुःख हुआ, किन्तु इन्हें भी यह शब्द कहने ही पड़े कि देश की आन्तरिक सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए तथा अन्य कोई उपाय न देख कर हम यह कदम उठाने पर विवश हुए। केवल एक पथभ्रष्ट मित्र की प्रसन्नता के लिए सारे देश की एकता तथा सुरक्षा को खतरे में नहीं डाला जा सकता।

मगर मच्छ के टमवे

शेख के गिरफ्तार होते ही इनके नादान दोस्त इनकी सहायता के लिए मैदान में कूद पड़े। इनकी गिरफ्तारी को

अवैध ठहराते हुए भारत सरकार, सदरे रियासत, तथा बख्शी साहब को पानी पी-पी कर कोसा गया। 'काश्मीर पोलिटिकल कान्फ्रेंस,' तथा 'जनमत संग्रह मोर्चा' जैसे खतरनाक भारत विरोधी दलों ने शेख अब्दुल्ला की रिहाई के लिए राज्य भर में आन्दोलन चालू कर दिया। कई स्थानों पर तोड़-फोड़ तथा गड़बड़ फैलाने के अतिरिक्त भारी प्रदर्शन भी किये गये। पाकिस्तान, जो कभी शेख साहब को भारत तथा नेहरू का गुलाम, गद्दार तथा मुसलमानों का सब से बड़ा शत्रु व अन्य कई बुरे नामों से कोसने में ही इस्लाम की सबसे बड़ी सेवा समझता था। वही इनकी गिरफ्तारी पर मगर मच्छ के से झूठे आँसू बहा, तथा कई प्रकार की मनगढ़न्त कथाएँ सुना-सुना कर शेख अब्दुल्ला का परम हितचिन्तक बना हुआ था। विरोधियों की इन सब गतिविधियों को देख कर, शेख साहब व उनके नादान दोस्तों के बारे में यह शब्द स्वतः ही मुख से निकल पड़ते थे कि 'कुछ तो है जिसकी राज़दारी है।' भारत के अभिन्न अंग जम्मूँ-काश्मीर के लिए अलग प्रधान, अलग संविधान, अलग निशान, अलग सेना (मिलिशिया) अलग हाइकोर्ट, अलग निर्वाचन आयुक्त (इलेक्शन कमिश्नर) तथा अलग महालेखा परीक्षक (आडिटर जनरल) मनवा कर, इसे एक स्वतन्त्र राज्य बना, स्वयम् इसका निरंकुश नवाब बनना, यह थी शेख साहब की एक दूषित तथा भयंकर चाल, जो काश्मीर के लिए किसी रूप में भी आत्मघात से कम न थी। इन्होंने भारत के उदार हृदय नेताओं को धोखा दे कर अपनी

इस पाप भावना को अन्दर ही अन्दर छिपाने का भारी प्रयास किया, किन्तु किसी लेखक के इन शब्दों के अनुसार :

you can deceive some men for some times,
you can deceive one man for all the times,
but you can not deceive all the men for all the times.

शेख अब्दुल्ला की पाप-भावना हृदय में न छिप सकी। कुछ समय के पश्चात् 'लो आप अपने दाम में सय्याद आ गया' वाली कहावत स्वयं इन पर ही सत्य सिद्ध हुई और इन्हें अपने बिछाये हुए जाल में स्वयं ही फँसना पड़ा। गिरफ्तारी के समय से यह कुद्ध के एक बँगले में नज़रबन्द चले आ रहे थे। आखिर ८ जनवरी, '५८ को लगभग साढ़े चार वर्ष की नज़रबन्दी के बाद इन्हें मुक्त कर दिया गया है। इस नज़रबन्दी की अवधि में शेख को सभी सुख-सुविधाएँ देने के अतिरिक्त इन पर १,७६,००० रुपये की धनराशि व्यय की गयी। इसके अतिरिक्त ५३,००० की धनराशि विशेष भत्ते के रूप में इनके परिवार को भेजी गयी। काश्मीरी जनता शेख साहब की रिहाई पर यह आशा लगाये बैठी थी कि अब वह सन्मार्ग पर आ गये होंगे, किन्तु रिहाई के बाद दिये गये उत्तेजक भाषणों, तथा इनके समर्थकों द्वारा काश्मीर घाटी में की जा रही हुल्लड़बाज़ी से यह बात स्पष्ट हो गयी है कि शेख का दिमागी तवाज़न बिगड़ चुका है। वे अब पुनः स्वतन्त्र काश्मीर का वही बेसुरा राग अलाप रहे हैं। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा

सकता है कि 'वही है चाल बेढंगी, जो पहले थी, वह अब भी है ।'

आज शेख साहब ने अपने भाषणों में जनमत संग्रह का वही गड़ा मुर्दा फिर से उखाड़ना शुरू कर दिया है, जिसको लगभग ७ वर्ष पूर्व काश्मीर विधानसभा, तथा स्वयं शेख साहब ने अपने कन्धों पर उठा कर शमशान भूमि में ज़मींदोज़ कर दिया था। शेख साहब के भाषणों की घोर निन्दा के साथ भारत तथा काश्मीर के सभी राजनीतिक दलों की ओर से यह प्रबल माँग की जा रही है कि राज्य की एकता तथा सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए शेख साहब को शीघ्रातिशीघ्र यथास्थान भेज दिया जाए। बकरे की माँ कब तक खैर मनाती, ४० करोड़ जनता के कंठ से निकली आवाज़ आखिर सुनी गयी और शेख की देशद्रोही गतिविधियों के कारण २३ अप्रैल, १९५८ को इन्हें पुनः गिरफ्तार कर लिया गया। आजकल उनके विरुद्ध स्पेशल मेजिस्ट्रेट श्री नीलकंठ हक की खुली अदालत में काश्मीर में अराजकता फैलाने और अवैध तरीक़ों से सरकार का तख्ता उलटने के अभियोग में मामला चल रहा है। यहाँ यह बात स्मरणीय है कि श्री हक, अब्दुल्ला सरकार के भूतपूर्व माल मंत्री मिर्ज़ा अफज़ल बेग व उनके अन्य २४ सहयोगियों पर इसी अपराध में चल रहे मामले की सुनवाई भी कर रहे हैं।

२. पं० प्रेमनाथ डोगरा

जीवन प्रभात

डुग्गर के बूढ़े जरनल, पं० प्रेमनाथ जी डोगरा प्रधान जम्मूँ-काश्मीर प्रजा-परिषद् तथा भूतपूर्व प्रधान अखिल भारतीय जनसंघ को जम्मूँ-काश्मीर राज्य की राजनैतिक उथल- में एक विशेष स्थान प्राप्त है। पंडित जी का उच्च चरित्र, विनम्रता, त्याग तथा भारत प्रेम देशवासियों के लिये अनुकरणीय है। इनका जन्म ८ कार्तिक, १९४१ वि० को ज़िला जम्मूँ के समैलपुर नामक गाँव में एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में हुआ। बी० ए० तक शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् ये महाराजा सरकार के एक उच्च राज्य कर्मचारी बना दिये गये।

राज्यपदाधिकारी के रूप में

अपने सेवाकाल में यह असिस्टेन्ट सेटलमेन्ट ऑफिसर, सेक्रेटरी, गवर्नर काश्मीर, वज़ीर मोहतमम बन्दोबस्त भद्रवाह तथा मुज़फ्फराबाद, के उच्च पदों पर काम करते रहे। सेवाकाल में इनकी गणना राज्य के दयानतदार तथा लोकप्रिय पदाधिकारियों में की जाती थी।

सामाजिक क्षेत्र में

सेवा मुक्त होने के पश्चात् इन्होंने सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में काम करना आरम्भ कर दिया। हरिजन कहे जान वाले हिन्दू भाईयों से छुआछूत दूर करने व इन्हें बराबर

पं० प्रेमनाथ जी डोगरा

अध्यक्ष, अखिल जम्मूँ-काश्मीर प्रजा-परिषद

के सामाजिक अधिकार दिलाने के लिए इन्होंने सराहनीय कार्य किया तथा अब भी कर रहे हैं। शराब बन्दी भी इनके प्रचार-कार्य का एक आवश्यक अंग है।

राजनीति में प्रवेश

रियासत में अब्दुल्ला सरकार की स्थापना के कुछ ही दिनों के पश्चात् इन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश किया। १९४७ के अन्तिम दिनों में इन्होंने अखिल जम्मूँ-काश्मीर प्रजा परिषद के रूप में एक राजनीतिक दल की नींव रखी, जिसके द्वार राज्य के हर एक नागरिक के लिए खुले थे। शीघ्र ही इस दल की शाखाएँ जम्मूँ प्रान्त के प्रत्येक छोटे-बड़े नगर तथा ग्राम में स्थापित कर दी गयीं। कुछ ही मास के अन्दर इसके सदस्यों की संख्या हज़ारों तक जा पहुँची। पंडित जी तथा इनके दल की लोकप्रियता से अब्दुल्ला सरकार घबरा उठी। कुछ दिनों के पश्चात् साम्प्रदायिक उपद्रवों में सहायता करने के आरोप पर इन्हें जेल में डाल दिया गया। पर इन सब बातों के निराधार सिद्ध होने पर कुछ समय के पश्चात् इन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। राज्य में प्रजा परिषद की लोकप्रियता तथा इसकी कटु आलोचना से चिढ़ कर अब्दुल्ला सरकार की ओर से इसके कार्यकर्त्ताओं के प्रति दमन नीति का चक्र चल पड़ा। मुसलमान जनता में इसके विरुद्ध घृणित प्रचार किया गया। दूसरी ओर प्रजा परिषद के कार्यकर्त्ताओं ने स्थान-स्थान पर भाषण दे कर, राज्य सरकार को चेतावनी दी कि काश्मीर-भारत विलय के समझौते को शीघ्र क्रियात्मक

रूप दे दिया जाए। शेख सरकार की ओर से इस मामले में टालमटोल की नीति को अपनाया जा रहा था। पंडित जी ने अपने अनेक भाषणों द्वारा केन्द्रीय सरकार तथा भारतीय जनता का ध्यान, शेख साहब द्वारा चली जा रही चालों की ओर आकृष्ट किया, परन्तु किसी ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। आखिर विवश हो कर, इन्हें आन्दोलन आरम्भ करना पड़ा। २२ नवम्बर, १९५२ को पंडित जी को पुनः बन्दी बना लिया गया। पंडित जी के नेतृत्व में चल रहे इस राज्यव्यापी सत्याग्रह ने राज्य में चल रही तानाशाही की जड़ों को हिला कर रख दिया। आखिर २३ जून, १९५३ को इन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। इसके कुछ दिनों के बाद प्रजा परिषद का आन्दोलन बन्द कर दिया गया।

दक्षिण भारत की यात्रा

सत्याग्रह की समाप्ति के पश्चात् आप भारत के दौरे पर निकल पड़े। अपनी इस यात्रा में इन्होंने दिल्ली, हैदराबाद, पूना, बम्बई तथा मद्रास जैसे बड़े-बड़े नगरों में दिये गये अपने भाषणों द्वारा अब्दुल्ला शाही की चालों तथा जम्मूँ-काश्मीर राज्य की आन्तरिक परिस्थितियों पर बड़े सुन्दर ढंग से प्रकाश डाला।

अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष

१९५५ में इन्हें अखिल भारतीय जनसंघ का अध्यक्ष चुन लिया गया। १९५७ में इनके दल ने जम्मूँ-काश्मीर

राज्य में होने वाले निर्वाचन में भाग लेने का निश्चय किया। नेशनल कान्फ्रेंस की ओर से भारी विरोध किये जाने पर भी काश्मीर विधान सभा के पाँच स्थानों पर प्रजा परिषद का अधिकार हो गया है।

पंडित जी का हिन्दी प्रेम

राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार के लिए पंडित जी व इनके दल की ओर से पूरा-पूरा प्रयत्न किया जा रहा है। विधान सभा के सदस्य चुने जाने पर आप ने अपने दलीय विधायकों सहित उर्दू भाषा में केवल इस बिना पर शपथ ग्रहण करने से इनकार कर दिया कि वह जम्मूँ-काश्मीर को भारत का एक आन्तरिक अंग मानते हैं। भारत की राजभाषा हिन्दी है, और वह भारतीय नागरिक होने के नाते, राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही शपथ ग्रहण करेंगे। इनके इस अनुरोध पर, इन्हें हिन्दी में ही शपथ दिलायी गयी।

संयुक्त राष्ट्र संघ तथा काश्मीर

पंडित जी की यह प्रबल माँग है कि भारत सरकार काश्मीर के मसले को शीघ्रातिशीघ्र संयुक्त राष्ट्र संघ से वापिस ले ले, क्योंकि यह राज्य, भौगोलिक, ऐतिहासिक, तथा सांस्कृतिक दृष्टि से भारत का एक अटूट अंग है। इसके अतिरिक्त महाराजा की घोषणा, तथा काश्मीर विधान सभा के अन्तिम निर्णय से यह प्रदेश हमेशा के लिए भारत का एक अभिन्न अंग वन चुका है। इतनी लम्बी अवधि बीत जाने पर भी

काश्मीर के मामले को संयुक्त राष्ट्र संघ में लटकाए रखना वीर डोगरों, भारत-प्रेमी काश्मीरी तथा लद्दाखी जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना है। यह भारत के धर्म-निर्पेक्ष संविधान को समूचे जम्मूँ-काश्मीर राज्य पर लागू करने के पक्ष में हैं। एक विधान, एक प्रधान, एक निशान इनके दल का प्रमुख नारा है। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ७५ वर्ष की इस वृद्धावस्था में भी ये दिन रात कार्यरत हैं।

३. "सदरे रियासत युवराज श्री कर्णसिंह जी"

जीवन झाँकी

युवराज श्री कर्णसिंह रघुवंश रूपी वाटिका के सदा बहार गुलाब की हरि डाली पर खिले एकमात्र सुन्दर सुगन्धित पुष्प हैं। इनका जन्म ९ मार्च, १९३१ को फ्रांस में ऐसी परिस्थितियों में हुआ, जब कि समूचे जम्मूँ-काश्मीर राज्य में एक भारी राजनैतिक हलचल मची हुई थी। इन सब कारणों से, इन्हें किशोरावस्था से ही राज्य की निर्धन जनता की आर्थिक कठिनाइयों तथा राजनैतिक परिस्थितियों के अध्ययन का सुअवसर भली प्रकार मिल सका।

प्रथम बार सदरे रियासत चुने गये

राज्य में लोकतन्त्री सरकार की स्थापना के पश्चात् महाराजा हरिसिंह केवल एक वैधानिक शासक ही रह गये थे। विधान सभा तथा नये संविधान के निर्णय के अनुसार महाराजा

युवराज श्री कर्णसिंह जी

सदरे रियासत, जम्मू-काश्मीर राज्य
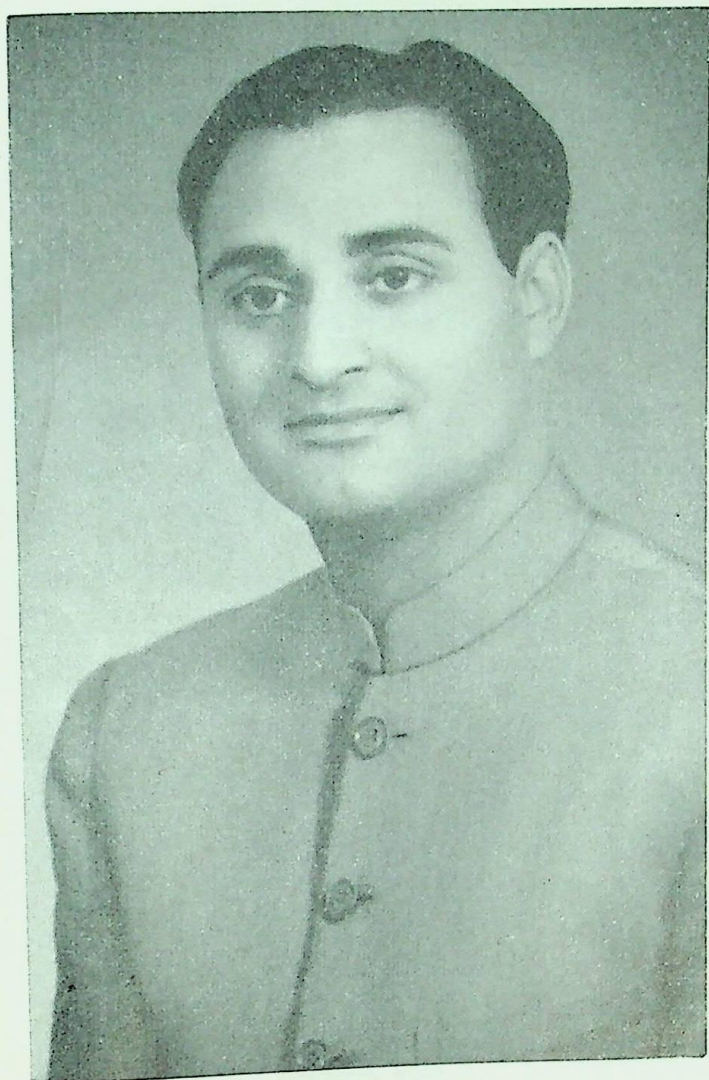
का पद तथा प्रभुत्व सदा के लिए समाप्त कर दिया गया था। सरकार के सब से बड़े प्रशासन अधिकारी को राजप्रमुख के बजाय सदरे रियासत का नाम दे दिया गया। १७ नवम्बर, १९५२ को लगभग २१ वर्ष की अल्पायु में ही विधान सभा के सदस्यों द्वारा, इन्हें सदरे रियासत चुन लिया गया।

काश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति

काश्मीर विश्वविद्यालय की स्थापना पर इसके चान्सलर का कार्यभार भी इनके कन्धों पर ही डाल दिया गया। इस उच्च पद पर रहते हुए, यह स्वयं भी एक साधारण विद्यार्थी की भाँति विद्या अध्ययन का कार्य करते रहे और वहीं से बी० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए।

गृहस्थ्य जीवन में प्रवेश

१९५० में इनका विवाह नेपाल राज परिवार की कुमारी यशोराज लक्ष्मी से होने के कारण काश्मीर तथा नेपाल के मध्य सुदृढ़ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो गये।

एम० ए० परीक्षा में प्रथम स्थान की प्राप्ति

इनकी योग्यता का अनुमान केवल इसी एक बात से लगाया जा सकता है कि १९५७ में ये दिल्ली विश्वविद्यालय की एम० ए० पालिटिक्स परीक्षा में, एक प्राईवेट परीक्षार्थी के रूप में सम्मिलित हुए और पूरे विद्यार्थियों में फर्स्ट डिवि-जन ले कर प्रथम आये। सदरे रियासत की प्रथम पंचवर्षीय अवधि में इन्होंने अपने दायित्व को बड़े सुन्दर ढंग से निभाया।

पुनः सदरे रियासत चुने गये

राजनीतिक क्षेत्र में नवदीक्षित, किन्तु प्रवीण राजनीतिज्ञ, निष्पक्ष, हँसमुख तथा मिलनसार स्वभाव के कारण यह राज्य के सभी वर्गों में लोकप्रिय हैं। इन्हें सत्तारूढ़ तथा विरोधी सभी दलों का समर्थन तथा सहयोग प्राप्त है। यह बड़े ही उच्च चरित्र, दयालु तथा धार्मिक वृत्ति के युवक हैं। पूजापाठ तथा वेदान्त की ओर इनका विशेष अनुराग है। इनकी इस योग्यता तथा लोकप्रियता के कारणों से ही इन्हें सर्वसम्मति से ४ नवम्बर, १९५७ को पुनः सदरे रियासत के उच्च पद के लिए चुन लिया गया है। अभी हाल ही में इन्होंने काश्मीर विश्वविद्यालय के पुस्तकालय तथा कक्षाओं के स्थान के लिए दस हज़ार रुपये का दान दिया है।

४. गुलाम मुहम्मद सादिक

श्री जी० एम० सादिक की गणना जम्मूँ-काश्मीर राज्य के योग्य तथा लोकप्रिय राजनीतिज्ञों में की जाती है।

प्रारम्भिक राजनीतिक सरगरमियाँ

इनका जन्म श्रीनगर के एक धनाढ्य परिवार में हुआ। बी० ए०, एल० एल० बी०, तक शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् इन्होंने भी शेख अब्दुल्ला तथा नेशनल कान्फ्रेंस द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलनों में सरगर्म भाग लेना आरम्भ कर दिया। फलतः इन्हें अनेक बार जेल-यात्रा भी करनी पड़ी। जब

मुस्लिम कान्फ्रेंस को नेशनल कान्फ्रेस में बदला गया तो यह उसके प्रथम अध्यक्ष चुने गये थे । इन्होने, १९४६ में नेशनल कान्फ्रेंस के क्विट काश्मीर, "काश्मीर छोड़ो" आन्दोलन में बड़ा सरगर्म भाग लिया था ।

काश्मीर विधान सभा के अध्यक्ष

नवम्बर १९५१ के अन्त में नवनिर्मित काश्मीर विधान-सभा ने अपना काम आरम्भ कर दिया और यह इसके प्रथम अध्यक्ष चुने गये । अब्दुल्ला सरकार में यह विकास मंत्री के पद पर भी काम कर चुके हैं। शेख अब्दुल्ला के बदल जाने पर इन्होंने शेख के स्वतन्त्र काश्मीर के विचारों का कड़ा विरोध किया और इसी मामले पर इन दोनों के मध्य अनबन-सी हो गयी । अगस्त १९५३ में अब्दुल्ला सरकार के भंग किये जाने पर इन्हें बख्शी सरकार में शिक्षा मंत्री का दायित्व सौंपा गया।

साम्यवाद से प्रेम

यद्यपि इन की ओर से बार-बार इस बात का खंडन किया जाता रहा है तो भी यह बात स्पष्ट है कि इनका झुकाव मुख्यतः साम्यवाद की ही ओर है। नेशनल कान्फ्रेंस में रहते हुए भी इनका गुट 'सादिक गुट' के नाम से प्रसिद्ध था, जिस में वही कामरेड शामिल थे, जो साम्यवादी या इनकी विचारधारा से अधिक प्रभावित थे ।

अपने अधिकारों का अनुचित प्रयोग

इन पर यह आरोप भी लगाया जाता है कि इन्होंने शिक्षा विभाग में मन्त्री पद पर काम करते हुए साम्यवादी

विचारधारा को प्रोत्साहित करने के लिए बहुत से शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को अपनी कठपुतली बनाया। इस प्रकार एक उच्च प्रशासन अधिकारी होते हुए, इन्होंने स्वयम् अनुशासन को भंग किया और नेशनल कान्फ्रेंस में राजनीतिक गुटबन्दी तथा फूट के बीज बोये। १९५७ के नव निर्वाचन में यह पुनः विधान सभा के विधायक चुन लिये गये। इनकी ओर से यह प्रयत्न किये जा रहे थे कि काश्मीर के नये मन्त्रि-मंडल में इनके साथियों को अधिक से अधिक संख्या में प्रतिनिधित्व दिया जाए। परन्तु बख्शी साहब ने केवल सादिक साहब को ही मन्त्रिमंडल में लेना चाहा। इसके अतिरिक्त बख्शी सरकार से आर्थिक-नीति सम्बन्धी मतभेद होने के कारण इन्होंनें नये मन्त्रिमंडल में शामिल होने से साफ़ इनकार कर दिया।

नेशनल कान्फ्रेंस से त्यागपत्र

अपनी दाल न गलते देख कर कुछ दिनों के पश्चात् इन्होंने अपने गुट के कई सदस्यों सहित नेशनल कान्फ्रेंस से त्यागपत्र दे दिया।

नये राजनीतिक दल की स्थापना

नेशनल कान्फ्रेंस से अलग होने वाले इन सदस्यों ने सितम्बर १९५७ के आरम्भ में डैमोक्रैटिक नेशनल कान्फ्रेंस, नाम से एक नये राजनीतिक दल की स्थापना की। श्री सादिक को ही इस दल का प्रथम अध्यक्ष चुन लिया गया है। १९ अक्तूबर, '५७ को इन्होंनें अपने नव संगठित दल को एक राज्य
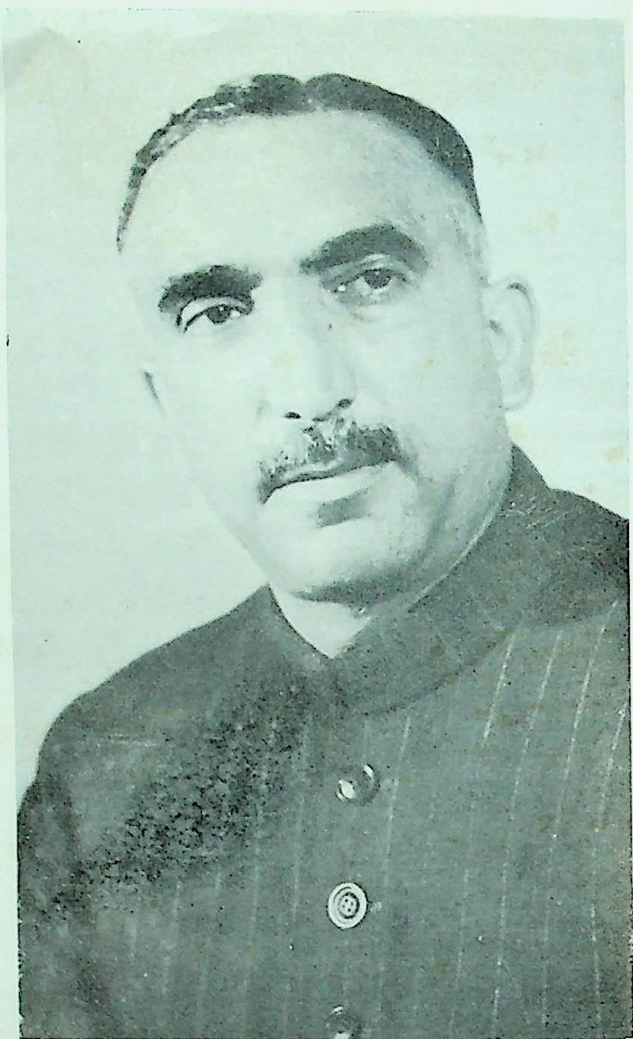
श्री बख़्शी गुलाम मुहम्मद
मुख्य मंत्री, जम्मूं-काश्मीर राज्य

व्यापी सम्मेलन के रूप में प्रारम्भ किया, जिस में राज्य भर के विभिन्न भागों से आये हुए लगभग बारह सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इनकी ओर से बख्शी-सरकार पर तानाशाही भ्रष्टाचार तथा भारत द्वारा सहायता रूप में दी जाने वाली धनराशि के दुरुपयोग के आरोप लगाये गये हैं। साथ ही प्रबल शब्दों में यह माँग भी की गयी है कि समूचे जम्मूँ-काश्मीर राज्य को भारतीय-निर्वाचन-आयुक्त (Indian Election Commissioner) के अधिकार क्षेत्र में लाया जाए, जिस से राज्य में निष्पक्ष चुनाव हो कर एक सच्ची लोकतन्त्री सरकार की स्थापना की जा सके। काश्मीर विधान सभा व विधान परिषद के लगभग बीस सदस्य, जो नेशनल कान्फ्रेंस के टिकट पर सफल घोषित किये गये थे, आपके इस नये दल में शामिल हो गये हैं। यह राज्य में मच रही आर्थिक लूट-खसोट का समूल उन्मूलन करना चाहते हैं। इनका दल काश्मीर-भारत विलय के निर्णय को पूर्ण तथा अन्तिम मानता है। शेख अब्दुल्ला तथा उनके समर्थकों द्वारा चली जा रही भारत विरोधी चालों की इन्होंने कड़े शब्दों में निन्दा की है। इनके कथनानुसार जनमत संग्रह का नारा लगाने वाले, काश्मीर की इस सुरम्य घाटी को फिर से सर्वनाश की ओर ले जाना चाहते हैं।

बख्शी गुलाम मुहम्मद

जीवन परिचय

आज संसार का शायद ही कोई ऐसा पढ़ा-लिखा व्यक्ति होगा, जो बख्शी गुलाम मुहम्मद, मुख्य मन्त्री जम्मूँ-काश्मीर

राज्य, नाम से परिचित न हो। बख़्शी साहब के का जन्म जुलाई १९०७ में श्रीनगर के एक निर्धन काश्मीरी घराने में हुआ। बचपन में अन्य काश्मीरियों की भाँति इन्हें भी अनेक आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, जिनके कारण यह मिडिल तक ही शिक्षा पा सके।

स्कूल अध्यापक

स्कूल छोड़ने के पश्चात् यह लद्दाख जैसे दूर, पर्वतीय क्षेत्र के एक स्कूल में अध्यापक के रूप में काम करने लगे इसी दौरान में इनका ध्यान वहाँ की अनपढ़ जनता की निर्धनता की ओर आकृष्ट हुआ।

राजनीति में प्रवेश

आप इससे प्रभावित हुए बिना न रह सके। इन्होंने राजनीति में उस समय प्रवेश किया जब भारत में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आन्दोलन चलाया जा रहा था। इधर यह भी काश्मीर मुस्लिम कान्फ्रेंस द्वारा महाराजा सरकार के विरुद्ध चलाये जा रहे आन्दोलन में एक उत्साही कार्यकर्त्ता के रूप में भाग लेने लगे। फलतः इन्हें तत्कालीन सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। १९३९ में जब शेख अब्दुल्ला ने कुछ राजनीतिक परिस्थितियों से विवश हो कर अपने दल मुस्लिम कान्फ्रेंस को नेशनल कान्फ्रेंस में बदल दिया तो बख्शी साहब भी इस नये दल में शामिल हो गये। जन आन्दोलन में सरगर्म

भाग लेने के कारण १९४६ तक इन्हें चार बार जेल-यात्रा करनी पड़ी।

काश्मीर से भारत भाग आना तथा वापसी

१९४६ में जब नेशनल कान्फ्रेंस द्वारा काश्मीर छोड़ो (Quit Kashmir) आन्दोलन आरम्भ किया गया तो यह रियासती पुलिस की नज़रों में धूल झोंक कर भारत भाग आये और यहाँ रहते हुए लाहौर तथा दिल्ली से काश्मीर में चल रहे आन्दोलन की हर प्रकार से अन्दरूनी सहायता करते रहे। श्री पंडित नेहरू तथा अन्य कांग्रेसी नेता भी काश्मीर के जन आन्दोलन की पूरी सहायता तथा समर्थन कर रहे थे। आखिर लगभग १७ मास की जलावतनी के पश्चात् अगस्त १९४७ में यह काश्मीर लौट आये। अक्तूबर ४७ के पाकिस्तानी-कबायली आक्रमण के समय, इन्होंने काश्मीर में शान्ति ब्रिगेड तथा होमगार्ड का संगठन कर, कबायली लुटेरों का डट कर मुकाबला किया।

डिप्टी प्रायम मिनिस्टर

मार्च ४८ में जब जम्मूँ-काश्मीर राज्य में प्रथम जन-तन्त्री सरकार की स्थापना हुई तो इन्हें डिप्टी प्रायम मिनिस्टर के उच्च पद पर नियुक्त कर, कानून तथा गृह-सुरक्षा विभाग का दायित्व सौंपा गया।

डिप्टी प्रायम मिनिस्टर से प्रायम मिनिस्टर

अगस्त १९५३ में शेख अब्दुल्ला को मुख्य मंत्री पद से हटा दिया गया। ऐसे राजनीतिक संकट में इन्होंने बड़ी कुशाग्र

बुद्धि का परिचय दिया, जिसके फलस्वरूप सदरे रियासत द्वारा इन्हें अपदस्थ शेख साहब के स्थान पर राज्य का मुख्य मंत्री बना दिया गया। नवम्बर १९५४ में हुए नेशनल कान्फ्रेंस के इक्कीसवें अधिवेशन में, इन्हें सर्वसम्मति से नेशनल कान्फ्रेंस का अध्यक्ष चुन लिया गया।

काश्मीर का नया संविधान

बख्शी काल में ही जम्मूँ-काश्मीर राज्य के लिए एक अलग संविधान तैयार किया गया। भारतीय संविधान की धारा ३७० तथा ३०६ ए-स्पेशल आर्टीकल के अनुसार, जम्मूँ-काश्मीर राज्य को अन्य राज्यों की अपेक्षा कुछ विशेष सुविधाएँ प्रदान की गयी हैं। इनके अन्तर्गत राज्य ने, १९४४ में तैयार किये गये "नया काश्मीर मसविदा" के अनुकूल अपना एक अलग संविधान भी बना लिया है। जो १७ नवम्बर, १९५६ को जम्मूँ-काश्मीर विधानसभा द्वारा स्वीकृत हो जाने पर २६ जनवरी, '५७ से समूचे राज्य पर लागू कर दिया गया है। इसके अनुसार काश्मीर भारत का एक अभिन्न अंग है और रहेगा। काश्मीर-भारत विलय का निर्णय वैधानिक और अन्तिम है, अतः भविष्य में भी कोई विधानसभा इस निर्णय को रद्द न कर सकेगी। इसकी १५७ धाराएँ हैं। नये विधान के अनुसार समूचे राज्य के दो सदन विधानसभा (Legislative Assembly) तथा विधान परिषद् (Legislative Council) होंगे। विधान सभा में १०० सदस्य होंगे, जिनमें से २५ स्थान पाकिस्तान अधिकृत काश्मीर के लिए सुरक्षित

रखे गये हैं। विधान परिषद के कुल ३६ सदस्य होंगे। काश्मीर की ओर से भारतीय लोकसभा के लिए ६ सदस्य मनोनीत किये जाएँगे। राज्य के सबसे बड़े प्रशासनिक अधिकारी को सदरे रियासत कहा जाएगा। इन्हें राज्य के लोक प्रतिनिधियों द्वारा निर्वाचित किया जाएगा। प्रत्येक नागरिक को इस पद के लिये चुने जाने का अधिकार है। भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति द्वारा स्वीकृति मिलने पर ही वह अपने कार्यभार को सँभाल सकेगा, अन्यथा नहीं। सदरे रियासत की कार्य-अवधि पाँच वर्ष के लिए होगी और इसके लिए जम्मूँ-काश्मीर राज्य का स्थायी निवासी तथा २५ वर्ष की आयु का होना आवश्यक होगा। राज्य के प्रत्येक नागरिक को सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में उन्नति के समान अवसर प्राप्त होंगे। संविधान की भूमिका में यह बात भली प्रकार स्पष्ट की गयी है कि नया संविधान भारत-काश्मीर विलय के उस अन्तिम निर्णय का पूरा समर्थन करता है जो २६ अक्तूबर, १९४७ को कार्य-रूप में लाया गया था।

काश्मीर प्रगति के पथ पर

बख्शी गुलाम मुहम्मद के मुख्य मन्त्री पद को सँभालने के पश्चात् जम्मूँ-काश्मीर राज्य के शैक्षणिक, आर्थिक, प्रशासनिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में जो सराहनीय परिवर्तन हुए हैं, उनका विवरण इस प्रकार है :

शिक्षा प्रसार

आज समूचे जम्मूँ-काश्मीर राज्य में पहली कक्षा से एम० ए० तक की शिक्षा सार्वजनिक तथा निःशुल्क कर दी गयी है। अब्दुल्ला-काल में जिन प्राईवेट संस्थाओं के अनुदान बन्द कर दिये गये थे, वे पुनः चालू कर दिये गये हैं। प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत राज्य भर में ५ नये कॉलिज, ३ ट्रेनिंग स्कूल, २९ हाईस्कूल, ४८ मिडल स्कूल, ७६ सेन्ट्रल स्कूल, ५९० प्रायमरी स्कूल और ९० मक्तब तथा पाठशालाएँ खोल दी गयी हैं।

जवाहर टनल की तैयारी

राज्य में किया गया दूसरा सबसे बड़ा कारनामा जवाहर टनल की तैयारी है। यह सुरंग ९००० फीट ऊँचे बानिहाल पर्वत के बीचों बीच, सागर तल से ७३५० फीट की बुलन्दी पर करोड़ों रुपये के व्यय से भारतीय तथा जर्मन इंजीनियरों द्वारा तैयार की गयी है। यह एशिया की सबसे बड़ी स्थल मार्गीय सुरंग है। इसके दो मार्ग हैं। एक जम्मूँ से श्रीनगर आने वाली और दूसरा श्रीनगर से जम्मूँ जाने वाली गाड़ियों के लिए होगा। इसके पश्चिमी मार्ग का उद्घाटन भारत के उपराष्ट्रपति श्री राधाकृष्णन् ने दिसम्बर १९५६ में किया था। अब इसका पूर्वी मार्ग भी तैयार हो चुका है और १० दिसम्बर, '५७ से गाड़ियों के लिए खोल दिया गया है। इस सुरंग के बन जाने से जम्मूँ व काश्मीर के दर्मयानी फ़ासले में १८ मील की कमी हो गयी है और अब भारत-काश्मीर

आवागमन वर्षपर्यन्त चालू रहेगा। इससे पूर्व शरद्-ऋतु में वानिहाल पर्वत पर भारी हिमपात होने के कारण, यह मार्ग लगभग ३ मास के लिये अवरुद्ध हो जाया करता था। काश्मीर प्रान्त के शेष भारत से इस प्रकार कट जाने से, पर्यटकों तथा राज्य की जनता के लिए अनेक आर्थिक तथा व्यापारिक कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती थीं। पर अब यह समस्या हमेशा के लिए हल हो गयी है। इसके अतिरिक्त इस से राज्य की आन्तरिक सुरक्षा को भी भारी लाभ पहुँचा है। यह सुरंग आधुनिक इंजीनियरिंग कला के एक अद्‌भुत चमत्कार के अतिरिक्त भारत-काश्मीर मैत्री की एक स्थायी कड़ी भी है। इसे भारत के हृदयसम्राट श्री पंडित नेहरू के नाम पर जवाहर टनल के नाम से सुशोभित किया गया है।

नये मोटर मार्गों का निर्माण तथा भाड़े में कमी

पठानकोट-काश्मीर राजमार्ग को चौड़ा किया जाने के साथ-साथ इस पर कुछ बड़े पुलों का नव-निर्माण भी किया गया है। राज्य के छोटे-बड़े नगरों को मोटर-मार्ग द्वारा आपस में मिलाया जा रहा है। लारी-मोटर का भाड़ा पहले की अपेक्षा आधा कर दिया गया है, जिससे व्यापार तथा आवागमन में पर्याप्त सुविधाएँ प्राप्त हो सकी हैं। कुछ एक नगरों में विद्युत तथा नल-व्यवस्था भी कर दी गयी है। दूसरी पंचवर्षीय योजना में यातायात के साधनों की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। लगभग ३०० मील लम्बे नये मार्गों का निर्माण और पुराने बने हुए ४०६ मील लम्बे मार्गों को चौड़ा तथा पक्का

बनाया जाएगा। आगामी दो वर्षों के अन्दर राज्य में एक नया मोटर-मार्ग तैयार हो जाने की संभावना है। काम आरम्भ हो चुका है। इसका नाम धार-उधमपुर मार्ग होगा और यह मार्ग पठानकोट-काश्मीर राज-मार्ग की अपेक्षा अधिक सुरक्षित होगा। यह मार्ग, पठानकोट-डलहौज़ी मोटर मार्ग पर स्थित धार नामक स्थान से बनाया जा रहा है, जो पठानकोट से केवल १६ मील की दूरी पर है। यह डुग्गर प्रदेश अर्थात् जम्मूँ प्रान्त के मध्यवर्ती उपनगरों बसो-ह्ली, महानपुर, बिलावर, भड्डू, रामकोट, बबोर, जिन्दराह इत्यादि को मिलाता हुआ उधमपुर में पठानकोट-काश्मीर राज मार्ग में आ मिलेगा। इसकी कुल लम्बाई ८४ मील होगी। इस काम के आरम्भ हो जाने से डुग्गर के हज़ारों निर्धन लोगों को काम मिल गया है, जिससे इनकी आर्थिक अवस्था पर अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। इस मार्ग के निर्माण पर लगभग साढ़े तीन करोड़ रुपये के व्यय होने का अनुमान लगाया जा रहा है। जम्मूँ तथा उधमपुर को रेलमार्ग द्वारा पठानकोट से मिलाये जाने का मामला भी केन्द्रीय सरकार के विचाराधीन है।

टूरिस्ट ट्रैफिक या यात्रियों का पर्यटन

यात्रियों (सैलानियों) की काश्मीर यात्रा सरकार तथा जनता की आय का एक मुख्य साधन है। संसार के कोने-कोने से हर वर्ष हज़ारों ही यात्री इसके सुरम्य, सुन्दर तथा पवित्र तीर्थस्थानों की यात्रा के लिए यहाँ आते हैं। इनकी सुख

सुविधा के लिए राज्य सरकार की ओर से एक (Tourist Reception Centre) (यात्री स्वागत केन्द्र) की स्थापना की गयी है। यात्रियों के निवास के लिए स्थान-स्थान पर टूरिस्ट हट्ट और डाक बँगले बनवाये गये हैं। १९५६ में संसार के भिन्न-भिन्न भागों से लगभग ६२००० लोगों ने काश्मीर घाटी की यात्रा की। १९५७ में यहाँ केवल वेष्णु देवी की यात्रा के लिए बाहर से आये यात्रियों की संख्या ही लगभग एक लाख तक जा पहुँची है।

खाद्यान्न समस्या

राज्य को खाद्यान्न सम्बन्धी सामग्री में आत्मनिर्भर बनाने के लिए भी बहुत प्रयत्न किया जा रहा है। किसानों को नये बीजों के प्रयोग तथा नये ढंग से खेती करने के लिये उत्साहित किया जा रहा है। किसानों द्वारा चीनी, तथा रूसी धान की काश्त के कारण, धान की उपज में भारी वृद्धि हुई है। चावल, घी व राजमाश के राज्य से बाहर ले जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत १.८८ करोड़ एकड़ भूमि को खेती के योग्य बनाने और ४९१.४६ लाख रुपया सिंचाई सम्बन्धी सुविधाओं के लिए ख़र्च करने की योजना बनायी गयी है। जिसके परिणामस्वरूप दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में २६ लाख मन अतिरिक्त (फाल्तू) अन्न के उपजाये जाने की आशा की जा रही है।

स्वास्थ्य रक्षा

जनता को रोगों से सुरक्षित रखने के लिए कुछ नये अस्पताल तथा वैद्यक चिकित्सालय (Dispensaries) भी खोले गये हैं। मलेरिया, शीतला (चेचक) टाइफस और गुप्त रोगों के उपचार के लिए चलते-फिरते औषधालय स्थापित किये गये हैं, जिनके द्वारा ग्रामवासियों को भी लाभ पहुँच रहा है। इस सम्बन्ध में ऊड़ी तथा लद्दाख के अग्रिम क्षेत्रों में भारतीय सेना के डाक्टरों द्वारा पीड़ित जनता की प्रशंसनीय सेवा की जा रही है।

वेतन वृद्धि

राज्य के सेवा निवृत्त (Pensioner) तथा अन्य सभी कर्मचारियों का वेतन तथा महँगाई भत्ता बढ़ा दिया गया है। डाक, तार, रेडियो, टेलीफोन इत्यादि विभाग भारत की केन्द्रीय सरकार के अधिकार में दे दिये गये हैं। राज्य का पुलिस विभाग भी एक भारतीय, प्रमुख पुलिस पदाधिकारी के अधीन कर दिया गया है। जिससे इन विभागों की कार्य क्षमता और वेतन वृद्धि से कर्मचारियों का उत्साह बढ़ गया है। रियासती सेना को भारतीय सेना में मिला दिया गया है। काश्मीर मिलिशिया को भारतीय सेना के पदाधिकारियों के अधीन कर राज्य की सुरक्षा तथा प्रतिरक्षा को और भी सुदृढ़ कर दिया गया है।

काश्मीर का भारत के साथ एकीकरण

भारत के गृह मंत्री पं० गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा १७ फ़रवरी, १९५८ को राज्य सभा में की गयी घोषणा से भारत तथा काश्मीर के सभी क्षेत्रों में प्रसन्नता की एक भारी लहर दौड़ गयी है। उन्होंने हर्षध्वनि के बीच घोषणा की, "कि यह बात अब सन्देहरहित हो गयी है कि काश्मीर भारत का भाग है और भारत का भाग ही रहेगा। उन्होंने घोषणा करते हुए कहा कि भारत के नियंत्रक व महालेखा परीक्षक (Auditor General) भविष्य में जम्मूँ-काश्मीर राज्य के लेखे, हिसाब-किताब का भी कार्यभार ग्रहण करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि काश्मीर राज्य की प्रशासन सेवा (Services Administration) का भी शेष भारत की प्रशासन सेवा के साथ एकीकरण कर दिया जाएगा और इस प्रकार सारे देश की एक प्रशासन सेवा होगी।"

ग्राम उन्नति तथा पंचायतें

ग्राम उन्नति के लिए पंचायत प्रणाली को सुव्यवस्थित किया जा रहा है। पंचायतों के अधिकार तथा कर्त्तव्य भी बढ़ा दिये गये हैं। लोगों की सहायता से कम्युनिटी प्रॉजेक्ट योजनाओं को सफल बनाने का भरसक प्रयत्न किया जा रहा है। समूचे राज्य को ५२ ब्लाकों (खंडों) में और हर एक ब्लाक को २० हलकों में बाँटा गया है। हर ब्लाक में एक ब्लाक अफ़सर नियुक्त किया गया है, जो पंचायतों द्वारा किये जा रहे काम-काज की देखभाल करता है। पंचायतों

में आधुनिक ढंग के छोटे-छोटे पंचायतघर बनवाये जा रहे हैं, जिनके साथ रेडियो, पुस्तकालय, खेल-कूद के सामान तथा छोटे औषधालयों का भी प्रवन्ध किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त ग्रामों में तन्खाहदार ग्राम-सेवक भी रखे जाएँगे, जो ग्रामीण लोगों की भलाई के लिए किये जाने वाले कामों में सहायता देंगे।

उद्योगधन्धे तथा कारखाने

रेशम का काम इस राज्य का एक मुख्य उद्योग है। इसके बढ़ाने के लिए काफ़ी प्रयत्न किये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त काश्मीरी कारीगरों द्वारा तैयार की गयी वस्तुओं (शाल दुशाले, गब्भे, कालीन, रेशमी वस्त्र, लकड़ी, पेपर मैशी की वस्तुएँ तथा चाँदी के बर्तन) की अधिकाधिक बिक्री के लिए कई बड़े-बड़े नगरों में एम्पोरियम भी स्थापित किये गये हैं। श्रीनगर, पाम्पुर में ऊनी कपड़े, अनन्तनाग में कालीन वारामूला तथा जम्मूँ में दवाईयाँ, जम्मूँ में साबुन, जुराब, पेन्सिल और बेलचे, पाम्पुर में इमारती लकड़ी से खिड़कियाँ, द्वार बनाने के कारखाने भी स्थापित हो चुके हैं। बारामूला में दियासलाई का एक कारखाना कई वर्षों से स्थापित है। दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत चमड़े की वस्तुओं, ईंटों, चीनी के सामान तथा सीमेंट के उद्योग के लिये १.७८ करोड़ रुपये के ख़र्च का अनुमान लगाया जा रहा है। प्रसिद्ध तीर्थ वैष्णू देवी के यात्रियों के लिए पहले से कुछ अधिक सुविधाओं का प्रबन्ध कर दिया गया है। इस सम्बन्ध में

कटड़ा नगर में एक सुन्दर उद्यान तथा धर्मशाला भी बनवाई जा रही हैं।

इलाक़ा कंढी में जल-व्यवस्था

जम्मूँ के इलाक़ा कंढी में पीने के पानी की बड़ी किल्लत हं। शरीर को झुलसा कर रख देने वाली धूप के अन्दर केवल पानी के लिये ही मीलों तक भागना पड़ता है। अनेक स्थानों पर तो लोगों को तालाब अथवा जोहड़ का गन्दा पानी पीने पर विवश होना पड़ता है, जिस से अधिकतर ग्रामीणों को नार्वा की बीमारी का शिकार होना पड़ता है। कंढी के लोगों की वर्षों से यह प्रबल माँग है कि उनके पीने के लिए शीघ्रातिशीघ्र शुद्ध जल का प्रबन्ध किया जाए। बख्शी-सरकार ने इस समस्या को सुलझाने की ओर भी विशेष ध्यान दिया है, किन्तु इसका उत्तम निदान तो तभी हो सकेगा, जब इस इलाक़ा में नहर की व्यवस्था की जा सके। आज कंढी के कुछ एक नगरों में नल-व्यवस्था कर दी गयी है, तथा कहीं-कहीं पानी के बड़े (Reserviours) जलागार भी बनवाये जा चुके हैं। कई ग्रामों में पंचायत विभाग ने अपनी गाड़ियों द्वारा, पानी पहुँचाने की व्यवस्था भी कर दी है। पर यह सब कुछ होते हुए भी कंढी के लोगों की जल-समस्या अभी तक सुलझ नहीं सकी है। राज्य सरकार को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

शरणार्थी समस्या

जम्मूँ-काश्मीर पर किये गये पाकिस्तानी आक्रमण के कारण राज्य के हज़ारों लोगों को बेघर तथा शरणार्थी बनने

पर विवश होना पड़ा । केवल जम्मूँ प्रान्त में ही तीस हज़ार से अधिक शरणार्थी फटे-पुराने शामियानों (Tents) में अपना दुखद तथा पीड़ित जीवन व्यतीत कर रहे थे । परन्तु अब्दुल्ला सरकार ने इन पीड़ित लोगों के पुनः बसाने की ओर कोई विशेष ध्यान न दिया । भारत सरकार की सहायता से बख़्शी सरकार इस ओर सराहनीय कार्य कर रही है । भूमि, धन तथा वस्त्रों की सहायता के अतिरिक्त जम्मूँ और श्रीनगर के आसपास कुछ शरणार्थी बस्तियाँ बख़्शी नगर इत्यादि भी बसा दी गयी हैं । इस संक्षिप्त विवरण की जानकारी से पाठकों को यह ज्ञात हो गया होगा कि भारत सरकार की तिजोरियों के खुल जाने तथा बख़्शी सरकार की कोशिशों से आज का नया काश्मीर किस प्रकार दिन पर दिन प्रगति की ओर बढ़ता जा रहा है ।

भारत की केन्द्रीय सरकार तथा काश्मीर सरकार के लिए कुछ विचारणीय बातें

आज जम्मूँ-काश्मीर राज्य का प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको उतना ही भारतीय समझता है, जितना कि भारत के किसी भी अन्य भाग में रहने वाला भारतीय । परन्तु खेद केवल इस बात का है कि अभी तक काश्मीर-निवासियों को उनके इन मूल अधिकारों से वंचित रखा जा रहा है, जिनको प्राप्त कर उनसे लाभान्वित होना उनका जन्मसिद्ध अधिकार है ।

१. सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट)

किसी भी लोकतन्त्री सरकार में उचित न्यायप्राप्ति उसके नागरिकों का मुख्य अधिकार है। आज राज्य की हाई-कोर्ट ही वहाँ की सबसे बड़ी न्याय संस्था है। साधारण मामलों में काश्मीर हाईकोर्ट का निर्णय ही अन्तिम माना गया है। काश्मीर हाईकोर्ट द्वारा दिये गये किसी भी निर्णय पर भारतीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा तभी पुनर्विचार हो सकता है, जब वह मामला २५००० या इससे अधिक मूल्य का हो। इन परिस्थितियों में यह एक निश्चित बात है कि राज्य की जनता द्वारा कदाचित ही ऐसा मामला न्याय अर्थात् पुनर्विचार के लिए भारत की सुप्रीम कोर्ट में पेश किया जा सके। ऐसी अवस्था में, क्या जनता की यह माँग न्यायोचित नहीं है कि समूचे जम्मूँ-काश्मीर राज्य को शीघ्रातिशीघ्र भारतीय सुप्रीम कोर्ट के अधिकार क्षेत्र में दे दिया जाए? केवल यही एक उपाय है, जिससे अधिकाधिक न्याय-प्राप्ति की सम्भावना हो सकती है।

२. भारतीय इलेक्शन कमिश्नर या निर्वाचन आयुक्त

प्रजातन्त्र का सबसे बड़ा मूल अधिकार नागरिक का अपनी इच्छा के अनुसार मतदान (वोटिंग) है। अपने मत के उचित प्रयोग से ही वह देश के अन्दर एक सबल और लोकहितैषी सरकार की स्थापना कर सकता है। आज काश्मीर-भारत विलय हुए दस वर्ष की लम्बी अवधि बीत चुकी है, परन्तु अभी तक यह क्षेत्र भारतीय निर्वाचन आयुक्त के अधि-

कार में नहीं लाया गया । जब भारत भर में इसकी देखरेख में निष्पक्ष चुनाव कराए जा सकते हैं तो केवल जम्मू-काश्मीर राज्य इसके अधिकार क्षेत्र से बाहर क्यों हो ? आशा है लोकतन्त्र की मर्यादा का पालन करते हुए जनता की इस अत्यावश्यक वैधानिक माँग को शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण किया जाएगा ।

३. आडीटर जनरल या महालेखा परीक्षक

राज्य के विभिन्न राजनीतिक दलों, प्रजा परिषद, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी, डैमोक्रैटिक नेशनल कान्फ्रेंस की ओर से बख्शी सरकार पर प्रायः भ्रष्टाचार तथा भारत द्वारा दी जा रही आर्थिक सहायता के दुरुपयोग के आरोप लगाये जा रहे हैं । अभी हाल ही में नेशनल कान्फ्रेंस से पृथक् होने वाले प्रसिद्ध कान्फ्रेंसी नेता तथा डी० एन० सी० के अध्यक्ष श्री जी० एम० सादिक की ओर से भी यह बात अनेक बार दोहरायी जा चुकी हैं। भारत सरकार की ओर से काश्मीर सरकार को उसके प्रगति के कामों को सफल बनाने के लिए करोड़ों रुपये की सहायता दी जा रही है। ऐसी अवस्था में न्यायसंगत बात तो यही है कि भारत सरकार को इस बात की जाँच करने का पूर्ण अधिकार भी होना चाहिए कि उनके द्वारा दी जाने वाली इस इतनी बड़ी धन-राशि का सदुपयोग भी हो रहा है अथवा नहीं । यह सब कुछ तभी हो सकता है जब अन्य राज्यों की भाँति समूचे जम्मूँ-काश्मीर राज्य को भारतीय नियन्त्रक तथा महालेखा परीक्षक के

अधिकार में दे दिया जाए। फ़रवरी, ५८ में गृह मंत्री पं० पंत की राज्य सभा में की गयी, एक घोषणा से, अब यह आशा बँध गयी है कि काश्मीरी जनता द्वारा चिरकाल से की जा रही इस माँग को केन्द्र द्वारा मान लिया गया है।

४. राष्ट्र अथवा राजभाषा हिन्दी

काश्मीर के नये संविधान के अनुसार केवल फ़ारसी लिपि में लिखी गयी उर्दू भाषा को काश्मीर राज्य की राज-भाषा मान लिया गया है। राष्ट्र की एकता के लिए एक राज भाषा का होना परमावश्यक है। कुछ लोगों की ओर से यह युक्ति दी जाती है कि जम्मूँ-काश्मीर में मुस्लिम बहुमत होने के कारण ही उर्दू को वहाँ की राज-भाषा मान लिया गया है। ऐसे लोगों की इस युक्ति में कितनी वास्तविकता है, इस तथ्य की न्यायपूर्ण जाँच करना समूचे राष्ट्र के हित की बात है। इस समय चीन, रूस, इंगलैंड, फ्राँस तथा अन्य सभी स्वतन्त्र राष्ट्रों की अपनी अलग-अलग एक राष्ट्र अथवा राज-भाषा है। इन सभी देशों में भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग रहते हैं। वहाँ अनेक छोटी बड़ी प्रादेशिक भाषाएँ भी हैं, परन्तु प्रत्येक देश में राष्ट्रभाषा का स्थान तो केवल एक ही भाषा को दिया गया है। चीन की ६० करोड़ जन संख्या में लगभग सात करोड़ मुस्लिम हैं, परन्तु व्यावहारिक रूप में वे भी केवल एक चीनी भाषा को ही अपनी राष्ट्रभाषा मानते चले आ रहे है। तुर्की एक मुस्लिम राष्ट्र है, परन्तु वहाँ सब लोगों की राष्ट्र भाषा अरबी न हो कर तुर्की ही है। अफगा-

निस्तान भी एक मुस्लिम देश है, परन्तु उसकी राष्ट्रभाषा पश्तो है। भारत में चार करोड़ मुसलमान, लाखों ईसाई तथा अन्य अल्पसंख्यक रह रहे हैं। यदि हिन्दी पढ़ने से उनके धर्म में कोई बाधा नहीं आती तो यह प्रतिबन्ध केवल काश्मीरी मुसलमानों के लिए ही क्यों ? यदि कल को भारत में रहने वाले विभिन्न धर्मावलम्बियों की ओर से अपनी-अपनी भाषा को ही राष्ट्रभाषा का स्थान देने के लिए आग्रह किया जाए तो क्या इससे भारत राष्ट्र की एकता को लाभ पहुँचेगा, अथवा हानि ? साहित्य की दृष्टि से भी हिन्दी एक सम्पन्न भाषा है। काश्मीरियों को हिन्दी की ओर आकृष्ट न करना, उस उत्तम राष्ट्रीय साहित्य से भी दूर रखना है जो इस समय राष्ट्रभाषा में इसके अनेक प्रसिद्ध लेखकों द्वारा लिखा जा चुका है। इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा को एक विशेष सम्प्रदाय से सम्बन्धित करना रहीम, रसखान, ताज बेगम, मलिक मुहम्मद जायसी तथा अन्य ऐसे ही मुस्लिम लेखकों से अन्याय करना है, जिनकी कृतियाँ हिन्दी साहित्य का प्राण मानी गयी हैं। उर्दू को राजभाषा मान लेने से लोग हिन्दी भाषा के सीखने की ओर इतना ध्यान न देंगे। इस प्रकार वे विभिन्न भारतीय विभागों के उच्च पदों पर नियुक्त होने से वंचित रहेंगे, जहाँ हिन्दी भाषा का जानना अनिवार्य कर दिया गया है। ऐसा होने से उन हज़ारों ही प्रगतिशील डोगरों तथा काश्मीरियों के प्रगति मार्ग में बाधा आने की भारी सम्भावना है जो अपने जीवन निर्वाह के लिए भारत की ओर नज़रें लगाये बैठे हैं। आज जम्मूँ-काश्मीर के लाखों लोग सरल हिन्दी को

उसी प्रकार बोल तथा समझ लेते हैं, जिस प्रकार भारत के अन्य प्रान्तों के अधिकाँश लोग। जम्मूँ में डोगरी, काश्मीर में कश्मीरी, तथा लद्दाख में लद्दाखी, भाषाएँ अधिकाँश बोली तथा समझी जाती हैं। ऐसी अवस्था में केवल फ़ारसी लिपि में लिखी गयी उर्दू भाषा को राज भाषा का स्थान देना संकीर्णता तथा साम्प्रदायिकता का द्योतक है।

काश्मीर में राज्य भाषा लिपि सम्बन्धी निर्णय का स्वागत

भारत सरकार केन्द्रीय शिक्षा विभाग के डाक्टर के० एल० श्रीमाली ने अपने हाल ही में दिये गये एक वक्तव्य में कहा है कि जम्मूँ-काश्मीर सरकार ने वहाँ की राजभाषा के लिए फ़ारसी लिपि के साथ देव नागरी लिपि का प्रयोग भी स्वीकार कर लिया है। देश भर में एक लिपि का प्रयोग देश की एकता के लिए एक आवश्यक कड़ी है।

५. Hereditary State Subject Certificate
या
"पुश्तेनी बाशिन्दा रियासत सर्टिफ़िकेट"

पूर्व समय में महाराजाओं द्वारा दीवान, वज़ीर तथा अन्य उच्च पदों पर प्रायः रियासत से बाहर के लोगों की ही नियुक्ति की जाती रही, परन्तु महाराजा हरिसिंह के समय में जम्मूँ-काश्मीर राज्य में एक ऐसा कानून लागू कर दिया गया, जिसके अनुसार रियासत से बाहर का कोई भी व्यक्ति जम्मूँ-काश्मीर रियासत में न तो मुलाज़मत और न भूमि ही हासिल

कर सकता था, जब तक कि उसके पास "पुश्तेनी बाशिन्दा रियासत का" प्रमाण पत्र न हो। इस कानून का यह उद्देश्य था कि रियासती जनता जो कि अधिकाँश अनपढ़ थी, को अधिक से अधिक लाभ पहुँच सके और रियासत से बाहर के पढ़े लिखे या धनाढ्य लोग रियासत की निर्धन जनता के अधिकारों पर छापा न मार सकें। हो सकता है कि उस समय यह नियम राज्य की जनता के लिए हितकर रहा हो, परन्तु आज सुमूचे भारत से रियासती संसार का अस्तित्व ही समाप्त कर दिया गया है तथा भारत की ४९७ अन्य रियासतों की भाँति काश्मीर भी भारत का एक अभिन्न अंग बन चुका है। इसके अतिरिक्त आज जब कि देश के सभी नागरिकों को देश के किसी भी भाग में व्यापार, उद्योग, मुलाज़मत तथा अन्य सभी बातों के समान अवसर तथा अधिकार प्राप्त हो चुके हैं तब काश्मीर राज्य में इस भेद भाव पूर्ण नीति तथा परिस्थितियों जम्मूँको बनाए रखना हर दृष्टि से आपत्ति जनक है। भारतीय जनता काश्मीर राज्य में लगे हुए इस प्रतिबन्ध को अपने मूल नागरिक अधिकारों पर एक अनुचित हस्तक्षेप मानती है।

६. Permit System
या
काश्मीर प्रवेश प्रणाली

जम्मूँ-काश्मीर राज्य से भारत, या भारत से जम्मूँ-काश्मीर में प्रवेश करने पर आज भी परमिट की पाबन्दियाँ उसी प्रकार मौजूद हैं जैसे एक देश से दूसरे देश में प्रवेश

करती बार परमिट या वीज़ा हासिल करना पड़ता हैं। चूँकि रियासत से बाहर जाने के लिए जो फारम पुर करना पड़ता है उसके ऊफर भी मोटे शब्दों में यह शीर्षक लिखा रहता है।" "Application for Permit for entering into India" अर्थात् "भारत प्रवेश का प्रार्थना पत्र" इसके पश्चात् सरकार की ओर से जो परमिट जारी किया जाता है उसके ऊपर भी ये शब्द लिखे होते हैं "Permit for visiting India" अर्थात् "भारत में प्रवेश करने का आज्ञा-पत्र" इन शब्दों को पढ़ कर इस बात की पुष्टि हो जाती है कि काश्मीर, विशाल भारत का अंग न हो कर एक अलग देश है। परमिट की पाबन्दी को बनाए रखने के लिए सरकार की ओर से यह उत्तर दिया जाता है कि यह सब कुछ रियासत की सुरक्षा को ध्यान में रख कर किया जा रहा है, परन्तु क्रियात्मक रूप में जो बातें देखने में आ रही हैं उन से यह साफ़ सिद्ध होता है कि इन पाबन्दियों के होते हुए भी पाकिस्तान से पुंछ, राजोरी व अन्य दूसरे प्रदेशों में हज़ारों लाखों लोग अवैध ढंग से प्रवेश कर आबाद हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त राज्य के विरोधी दलों की ओर से सरकार पर यह आरोप भी लगाया जाता है कि यह सब प्रपंच इस लिए किया जा रहा है कि उनके नेताओं को किसी न किसी बहाने से काश्मीर राज्य में प्रवेश करने से रोका जाए। इन बातों पर गूढ़ विचार करने के पश्चात् हर निष्पक्ष व्यक्ति को यह कटु सत्य स्वीकार करना ही पड़ेगा कि परमिट प्रणाली को जीवित रख कर लाखों करोड़ों

भारतीयों की देश भक्ति और देश की एकता को खुली चुनौती दी जा रही है।

७. तथा कथित आज़ाद काश्मीर और हम

आज भारत के अभिन्न अंग काश्मीर के लगभग ४२००० वर्गमील क्षेत्र पर, पाकिस्तान ने अनाधिकृत तथा बलपूर्वक अधिकार जमा रखा है। जहाँ गत ग्यारह वर्षों से लगभग १४ लाख असहाय काश्मीरी पाकिस्तान की कठ-पुतली सरकार के अमानुषिक अत्याचारों का शिकार बन रहे हैं। जम्मूँ-काश्मीर की विधान सभा में इस क्षेत्र के लिए २५ स्थान रिक्त भी रखे गये हैं, किन्तु खेद इस बात का है कि जनता की ओर से बार-बार माँग किये जाने पर भी, अभी तक इस भू-भाग के पीड़ित लोगों को अत्याचारियों के पंजे से मुक्त कराने के लिए कुछ भी प्रयास नहीं किया गया।

आशा है, पूर्व इसके कि राज्य की विह्वल जनता इस भाग के मुक्ति आन्दोलन को अपने हाथों में ले भारत सरकार अपने कर्त्तव्य का पालन करती हुई शीघ्र ही इस ओर कोई सराहनीय क़दम उठायेगी।

काश्मीर-भारत एकीकरण की अन्तिम कड़ी

अब्दुल्ला द्वारा भारत-काश्मीर एकीकरण में उपस्थित बाधाएँ धीरे-धीरे दूर होती जा रही हैं। काश्मीर के संविधान को भारतीय संविधान के अनुकूल कर दिया गया है। किन्तु इतना कुछ किये जाने के उपरान्त अभी एक काम शेष है, और वह है

समूचे जम्मूँ काश्मीर राज्य को भारत के धर्म निर्पेक्ष तथा प्रगतिशील संविधान के अधिकार क्षेत्र में लाना। यह संविधान भारत के सर्वप्रिय तथा योग्यतम नेताओं राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद, पं० नेहरू, स्वर्गीय सरदार पटेल, डाक्टर अम्बेदकर, गोपाल स्वामी आयंगर, मौलाना आज़ाद तथा अन्य ऐसे ही महा पुरुषों द्वारा तैयार क्रिया गया है। यह भारत का संविधान ही है, जिसकी छत्र छाया में चालीस करोड़ भारत-वासियों को धर्म. जाति, निर्धन, धनवान, भूमिदार. किसान के भेद भाव के बिना सर्वतोमुखी उन्नति के समान अधिकार प्रदान किये गये हैं। जनता उस दिन की प्रतीक्षा में है जिस दिन भारतीय संविधान समूचे जम्मूँ-काश्मीर राज्य पर लागू कर दिया जाएगा और यही होगी काश्मीर भारत एकीकरण की सुदृढ़ तथा अन्तिम कड़ी। आशा है भारत सरकार, बख्शी सरकार तथा जम्मूँ-काश्मीर की जनता के अन्य हितैषी, राष्ट्र की एकता, सौहार्द तथा प्रगति को ध्यान में रखते हुए जम्मूँ-काश्मीर राज्य के लाखों भारतीयों की इन न्यायोचित माँगों पर ठंडे दिल से विचार करेंगे।

जम्मूँ-काश्मीर दर्शन दूसरा भाग

"भारत के युवकों का सिंहनाद"

लद्दाख जम्मूँ पूरा ही गिलगित्त भी सारा,
भारत के सिर का ताज है कश्मीर हमारा।
जिसके सपूत हैं डोगरे फर्ज़न्द कश्मीरी,
इक आँख है इसकी, तो है इक आँख का तारा।

फल-फूल प्यारे-प्यारे कितने हुसीं नज़ारे,
गोया ज़मीन पर ही जन्नत हो ला उतारा।
इसकी फिज़ाओं में कुछ मस्ती भरी है ऐसी,
मानो कि इतर का ही हो चल रहा फव्वारा।

पर्वत की चोटियों पर चाँदी सफ़ेद बिखरी,
नदियाँ बहा रही हैं अमृत की ठंडी धारा।
ज़ालिम के हाथों जब कि मज़लूम लुट रहा था,
फौजों ने अपनी आ कर इसको दिया सहारा।

रक्षा करेंगे इसकी जब तक कि दम में दम है,
यह अहद कर लिया है यही अज़म है हमारा।
जिसके लिए हैं लाखों निर्भीक सिर कटाये,
कश्मीर वह हमारा और सारे का सारा।

"कश्मीर तेरी ख़ातिर"

घर-बार लुटा देंगे कश्मीर तेरी ख़ातिर,
सर्वस्व चढ़ा देंगे कश्मीर तेरी खातिर।

तू हुसन की मलिका है, सुन रानी बहारों की,
कुर्बान फरिश्ते हों, कश्मीर तेरी ख़ातिर।

रणभूमि तू वीरों की, जननी है शहीदों की,
जो जान पे ख़ेल गये, कश्मीर तेरी ख़ातिर।

रणवीर राजिन्दर[१] सिंह और उनके वीर सैनिक,
किस शान से प्राण दिये, कश्मीर तेरी ख़ातिर।

रंजीत[२] लाल तेरे थे सोमनाथ[३] शर्मा,
निज सीस कटा डाले कश्मीर तेरी खातिर।

उस्मान[४] ने हँस-हँस कर थी वीर गति पायी,
मकबूल[५] हुआ सदक़े, कश्मीर तेरी ख़ातिर।

वह शफ़क की लाली में है ख़ून मुकर[६] जी का,
पिये जामे शहादत जो कश्मीर तेरी ख़ातिर।

भारत का अंग प्यारा सरताज हमारा तू,
हम कमर बस्ता बैठे कश्मीर तेरी ख़ातिर।

जो नज़रे बद से देखे वह आँख निकल जाए,
यह अज़्म हैं कर बैठे कश्मीर तेरी खातिर।

हम तेरे पसीने पर ख़ूं अपना बहा देंगे,
चूमेंगे मौत को भी, कश्मीर तेरी ख़ातिर।

निर्भीक के दिल में बस, इक शौके शहादत है,
तय्यार सरबकफ़ हैं कश्मीर तेरी ख़ातिर।

१. ब्रि० राजिन्दर सिंह

जम्मूँ-काश्मीर राज्य की सेना के प्रधान ब्रिगेडियर, डुग्गर धरती के वीर सपूत स्वर्गीय श्री राजिन्दर सिंह, जम्मूँ के निकट स्थित बगूना ग्राम के रहने वाले थे। इनका जन्म १८९८ ई० में सूबेदार लक्खा सिंह के यहाँ हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा जम्मूँ में प्राप्त करने के पश्चात् आपने प्रिन्स ऑव वेल्ज़ कॉलिज जम्मूँ (अब गाँधी मैमोरियल कॉलिज) से बी० ए० की उपाधि हासिल की। १९२१ ई० में आप रियासती सेना में लेफ्टिनेन्ट चुन लिये गये, तदुपरान्त उन्नति करते-करते ब्रिगेडियर के उच्च पद तक जा पहुँचे। अक्तूबर, ४७ के पाकिस्तानी आक्रमण के समय उन्होंने राज्य की ओर से रक्षा कार्य के लिए नियत किये गये अपने १५० सैनिकों की सहायता से पाँच हज़ार से भी अधिक आक्रमणकारियों को ऊड़ी-श्रीनगर मार्ग पर दो दिन तक चट्टान की भाँति रोके रखा। वह २२ अक्तूबर, की शाम को बारामूला और रात के १२ बजे ऊड़ी जा पहुँचे। २३ अक्तूबर, ४७ की प्रातः डोगरा सैनिक दुमेल से आगे बढ़े। महाराजा की मुट्ठी भर सेना राज्य की सुरक्षा के लिए स्थान-स्थान पर बिखरी पड़ी थी। फलतः ब्रिगेडियर साहब को कोई सहायता न मिल सकी। मातृ-भूमि की आन की रक्षा के लिए ब्रिगेडियर साहब तथा उनके रणबाँकुरे, शत्रु के उमड़ते हुए तूफ़ान के आगे लोहे की अटूट दीवार बन कर खड़े हो गये थे। एक-एक वीर सैंकड़ों पठानों से लोहा ले रहा था। घोर युद्ध को देख हल्दीघाटी की याद ताज़ा हो रही थी। अन्ततः शत्रु को भारी क्षति पहुँचाने के पश्चात् उन्होंने ऊड़ी में ही

अपने १५० सूरमाओं के साथ देश सेवा, कर्त्तव्य पालन और मातृ-भूमि की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त की। इस अमर बलिदान के परिणाम स्वरूप श्रीनगर शत्रु के हाथों में पड़ने से सुरक्षित हो गया।

२. रंजीत

काश्मीर में भारतीय सफलता का भवन जिन वीरों की समाधि पर खड़ा किया गया है उनमें स्वर्गीय कर्नल दीवान रंजीत-राय का नाम भी प्रथम पंक्ति में आता है। काश्मीर पर कबायली आक्रमण के समय सर्वप्रथम जो सैनिक वायुवाही दस्ता श्रीनगर भेजा गया था, उसके संचालक भारतीय सेना के कर्नल दीवान रंजीतराय ही थे। जिस समय हज़ारों कबायली बारामूला श्रीनगर मार्ग पर बाढ़ की नाँई आगे ही आगे बढ़ते जा रहे थे, ऐसे संकट के समय भारत माता का यह लाल, अपने २०० सैनिकों की सहायता से शत्रु के मार्ग को अवरुद्ध कर, दिन भर उस से लोहा लेता रहा और वहीं अमर गति पायी। इस बीच भारतीय सेना के अनेक दस्ते श्रीनगर में आ उतरे और उन्होंने रातोंरात शत्रु पर हमला कर के उसे श्रीनगर से लग-भग २३ मील पीछे धकेल दिया। यहाँ यह बात याद रखने योग्य है कि २७ अक्तूबर को शत्रु श्रीनगर से केवल साढ़े तीन मील की दूरी पर अपना ताण्डव नृत्य व नरसंहार कर रहा था।

३. सोमनाथ शर्मा

भारत माता को वीर जननी भी कहा गया है। इसकी गोद में एक नहीं अनेक ऐसे परम वीर हुए हैं, जिन्होंने भारत का

मस्तक स्वदेश में ही नहीं अपितु देश देशान्तरों में भी ऊँचा किया है। ऐसे ही वीरों में डुग्गर धरती के एक रत्न, स्वर्गीय मेजर सोमनाथ शर्मा भी थे। इनका जन्म जम्मूँ प्रान्त के एक ग्राम में ३१ जनवरी, सन् १९२३ को एक उच्च ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपके दादा काश्मीर राज्य के एक उच्च पदाधिकारी थे। आपके पूज्य पिता मेजर जनरल अमरनाथ शर्मा भारतीय सेना के डायरेक्टर जनरल मैडिकल सर्विसिज़ थे। प्रारम्भिक शिक्षा मसूरी तथा नैनीताल में पाने के पश्चात् वे भारत के सुप्रसिद्ध रायल इंडियन मिलिट्री कॉलिज़ देहरादून में भरती हो गये। यहाँ से सफलतापूर्वक शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् १९४२ में केवल २० वर्ष की अवस्था में उन्हें कमीशन मिल गया। बाद में वह एक कुमाऊँ यूनिट में अफ़सर नियुक्त किये गये। १९४७ में वे अपनी यूनिट के साथ दिल्ली की आन्तरिक रक्षा पर नियत किये गये थे। उन्हीं दिनों काश्मीर की सुन्दर घाटी पर कबायली आक्रमण हो गया। महाराजा की प्रार्थना पर, भारत सरकार ने असहाय काश्मीरियों की रक्षा के लिए अपनी सेना भेज दी। इसी सम्बन्ध में मेजर सोमनाथ शर्मा भी श्रीनगर जा पहुँचे। आक्रमणकारी बड़ी तेज़ी से श्रीनगर के हवाई अड्डे की ओर बढ़ रहे थे। ऐसी नाज़ुक स्थिति में सब से महत्वपूर्ण काम श्रीनगर के हवाई अड्डे की रक्षा थी। मेजर शर्मा अपने दो सौ जवानों को ले कर आगे बढ़े और बडगाम नामक स्थान पर शत्रु को जा रोका। शत्रु की संख्या कई हज़ार तक थी। मेजर साहब अपने जवानों के उत्साह को बढ़ाते हुए अन्तिम श्वास तक

लड़ते रहे। उन्होंने इसी प्रकार शत्रु को ६ घंटे तक दृढ़ता से रोके रखा। इसी मध्य शत्रु द्वारा फेंका गया एक बम उनके ऊपर आ गिरा और श्री सोमनाथ हमेशा के लिए भारतीय इतिहास की गौरव गाथा बन गये। वीरों का सदा से मान होता आया है इसलिए अपने प्राणों की आहुति दे कर श्रीनगर की रक्षा करने वाले इस परमवीर की देश भर में भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी।

भारत सरकार ने उनकी इस वीरता के उपलक्ष में भारतीय गणराज्य का सबसे उच्च सैनिक पदक (मैडल) परमवीरचक्र, उनको मरने के उपरान्त प्रदान किया। मेजर साहब ने साहस, वीरता और देशभक्ति का एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है जो देश के बच्चे-बच्चे के लिए एक आदर्श बना रहेगा।

४ उस्मान

भारतीय सेना द्वारा काश्मीर रक्षा के लिए भेंट किये गये परम वीरों में, ब्रिगेडियर उस्मान का नाम भी अपने इतिहास में हमेशा के लिए अमर रहेगा। इनका जन्म १९१३ में उत्तरप्रदेश के आज़मगढ़ ज़िले के एक ग्राम मऊ में हुआ था। बनारस और इलाहाबाद में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वे सेना में भरती हो गये और उन्नति करते-करते ब्रिगेडियर के उच्च पद तक जा पहुँचे। ६ फ़रवरी, १९४८ में नौशहरा (जम्मूँ) पर किये गये पाकिस्तानी आक्रमण के समय उन्होंने अपूर्व वीरता तथा पराक्रम का परिचय दिया। लगभग तीन हज़ार सैनिकों की सहायता से वह शत्रु के चौदह हज़ार से भी अधिक

आक्रमणकारियों से ९ घंटे तक लोहा लेते रहे और अन्त में शत्रु को मुँह की खानी पड़ी। इस घोर युद्ध में पाकिस्तानी अपने बारह सौ से भी अधिक मृत सैनिकों को युद्ध स्थल में छोड़ भाग खड़े हुए। उनकी इस वीरता के कारण उन्हें "नौशहरा का वीर" भी कहा जाता है। पराजित तथा क्षुब्ध पाकिस्तानियों ने ३-४ जुलाई की रात को झंगड़ पर अकस्मात धुआँधार गोलाबारी की। ब्रिगेडियर साहब तथा उनके रण बाँकुरे स्वदेश रक्षा के लिए अपने-अपने मोर्चों में जमे खड़े थे। वे एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे में निर्भय हो कर जा रहे थे कि इतने में ही शत्रु का एक गोला उनके ऊपर आ गिरा। इस प्रकार कर्त्तव्य पालन करते हुए भारतीय सेना के उस अमर सपूत ने उसी स्थान पर वीर गति प्राप्त की।

५ मक़बूल शेरवानी

२४ वर्षीय मकबूल शेरवानी नेशनल कान्फ्रेंस के एक उत्साही कार्यकर्त्ता थे। काश्मीर पर आक्रमण के समय उन्होंने अपने साथियों की सहायता से पाकिस्तानी अत्याचारियों का डट कर मुकाबला किया। वे शत्रु की गतिविधि तथा बहुत-सी गुप्त बातों के विषय में भारतीय सेना तथा नेशनल कान्फ्रेंस की केन्द्रीय शाखा (श्रीनगर) को सूचित करते रहे। उनकी इस गतिविधि पर शत्रु को सन्देह उत्पन्न हो गया और वह पकड़ लिये गये। उन से भारतीय सेना तथा अन्य गुप्त भेदों की जानकारी का भारी प्रयत्न किया गया। परन्तु शेरवानी ने अपना कोई भी भेद शत्रु को न बताया। इससे चिढ़ कर

उन्हें बारामूला में काष्ठ से बाँध कर उनके शरीर में कई लम्बे-लम्बे लोहे के कील गाड़ दिये गये। बाद में एकाएक उन पर कई गोलियाँ दाग दी गयीं। इस प्रकार काश्मीर के इस वीर पुत्र ने अपना जीवन मातृभूमि की रक्षा के लिए अर्पण कर दिया। जब भारतीय सेना बारामूला में पहुँची तो शहीद शेरवानी का मृत-शरीर बाँधा हुआ पाया गया, जिस पर गोलियों के १२ निशान लगे हुए थे।

६ मुकर्जी

वह कौन-सा ऐसा भारतीय होगा जो अमर शहीद डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी के शुभ नाम से परिचित न हो। डाक्टर साहब का जन्म जुलाई १९०१ में कलकत्ता के सर आशुतोष मुकर्जी के यहाँ हुआ। एक धनी पिता के योग्य पुत्र होने के कारण इन्होंने एम०ए०,बी०एल०,डी०लिट०, बार०एट०ला० की उच्च उपाधियाँ प्राप्त कर लीं। उसके पश्चात् १९२४ से कलकत्ता विश्वविद्यालय के संरक्षक के रूप में काम करते रहे। १९२९ से ले कर १९३७ तक बंगाल लैजिस्लेटिव कौंसिल, और तत्पश्चात् १९३७ से १९४७ तक बंगाल विधान सभा के विधायक पद पर काम करते रहे। इसी बीच अर्थात् १९३४ से १९३८ तक कलकत्ता विश्वविद्यालय के उप कुलपति तथा भारतीय हिन्दू महा सभा के प्रधान भी रहे। १९४३ से १९४६ तक रायल एशियाटिक सोसायटी के प्रधान पद पर बड़ी योग्यता से काम किया। १९४१–४२ में बंगाल सरकार के वित्त मंत्री का दायित्व सम्भाले रहे। भारत की स्वतन्त्रता

प्राप्ति पर केन्द्रीय सरकार में १९४७ से १९५० तक उद्योग तथा सप्लाई मन्त्री के नाते काम करते रहे पर केन्द्रीय सरकार में कुछ नीतियों पर मतभेद होने के कारण मन्त्रिमंडल से पृथक हो गये। इसके पश्चात् भारतीय जन संघ नाम से एक नये राजनीतिक दल की स्थापना की और उसके प्रथम अध्यक्ष चुन लिए गये। १९५३ में काश्मीर में चल रहे प्रजा परिषद आन्दोलन के कारणों की जाँच करने के लिए जम्मूँ-काश्मीर राज्य में प्रवेश किया। इसके पश्चात् जो कुछ हुआ उसका वर्णन पीछे कर दिया गया है।

काश्मीर के बारे में डाक्टर साहब का स्पष्ट दृष्टिकोण

डाक्टर मुकर्जी ने पं० प्रेमनाथ जी डोगरा के साथ मिलने और रियासत के वास्तविक हालात से परिचित होने के बाद २६ जून, '५२ को भारत की लोक सभा में एक हंगामा खेज़ भाषण दिया। जिसमें आपने रियासत के लिए अलग संविधान, अलग निशान, अलग प्रधान के विषय में सविस्तार प्रकाश डाला। ७ अगस्त, १९५२ के अपने दूसरे भाषण में उन्होंने काश्मीर के प्रश्न पर प्रधान मन्त्री श्री नेहरू को इन शब्दों में चुनौती दी—"मैं जानना चाहता हूँ कि जब भारत का विधान बन रहा था तो शेख अब्दुल्ला और उसके हुक्मरान साथियों ने इसकी तशकील में हिस्सा नहीं लिया था। लेकिन आज रियासत के लिए खास पोज़ीशन का प्रश्न उत्पन्न करना क्या एक मुज़हिका खेज़ बात नहीं है? यदि एक संविधान भारत

की दूसरी ४९७ रियासतों के लिए अच्छा हो सकता है तो यह आईन काश्मीर के लिए अच्छा क्यों नहीं ?"

पटियाला के एक भाषण में डाक्टर साहब की सिंह गर्जना

१६ अप्रैल, १९५३ को पटियाला में भाषण करते हुए डाक्टर साहब ने काश्मीर के विषय में जो उद्गार पेश किये, वह स्वर्ण अक्षरों में अंकित किये जाने के योग्य हैं । "भारत की एक-एक इञ्च भूमि पर भारत की पैंतीस करोड़ जनता का अधिकार है । किसी खास हलके में रहने वाली किसी खास जमाअत का नहीं । काश्मीर भारत में था, है और रहेगा । वह लोग जो भारत में नहीं रहना चाहते, जहाँ दिल चाहे जा सकते हैं, परन्तु अपने साथ भारत की एक इंच भूमि को भी नहीं ले जा सकते ।

एक काश्मीरी मित्र का पत्र अपने भारतीय मित्र के नाम

काश्मीरी लाल श्री नगर के एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण परिवार से सम्बन्ध रखते हैं । उधर भारत भूषण भी दिल्ली के सुन्दरतम भाग चाँदनी चौक में, एक सुप्रसिद्ध जनसेवी डाक्टर के नाते दूर-दूर तक प्रख्यात हैं । हज़ारों रोग पीड़ित जीवन से निराश हो, इनकी शरण में आये और जीवन आशा ले कर वापस लौटे । इनके चेहरे पर मुसकराहट, बात-चीत में मिठास और हाथ में एक विशेष चमत्कार है । यही कारण है कि उनकी दुकान पर हर समय रोगियों का एक ताँता-सा बँधा

रहता है। पं० काश्मीरी लाल वर्षों से उदर रोग से पीड़ित थे। वह डाक्टर भारतभूषण की ख्याति सुन कर अपने इलाज के लिए श्री नगर से दिल्ली पहुँचे। डाक्टर साहब से परिचय हुआ और उनके परामर्श के अनुसार यह उनके चिकित्सालय में प्रविष्ट हुए। डाक्टर साहब की चिकित्सा तथा उत्तम व्यवहार के कारण काश्मीरीलाल को दिन पर दिन स्वास्थ्य लाभ होता गया। धीरे-धीरे उनके व डाक्टर साहब के मध्य घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित होते गये। काश्मीरीलाल को दिल्ली में रहते लगभग चार मास बीत चुके थे और अब आषाढ-सावन की गरमियाँ भी निकट आ रही थीं। इसलिए अब हर पल उन्हें अपने घर तथा परिवार की याद सताने लग पड़ी। अब वह पूर्ण स्वस्थ थे, आखिर एक दिन डाक्टर साहब का हार्दिक धन्यवाद करने के पश्चात् उन से घर जाने की आज्ञा ले ली गयी। लौटती बार उन्होंने डाक्टर साहब को बड़े ही विनम्र तथा प्रेम-भाव से काश्मीर यात्रा का निमन्त्रण दिया। मित्र द्वारा किये गये इस अनुरोध को डाक्टर साहब ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। आज इस घटना को बीते कई वर्ष हो चुके हैं। यद्यपि डाक्टर साहब का जीवन एक व्यस्त जीवन है तथापि वह पत्र व्यवहार द्वारा पं० काश्मीरी लाल से सम्पर्क बनाये ही रखते हैं। उधर काश्मीरीलाल की भी हार्दिक इच्छा थी कि वह अपने मित्र को एक बार अवश्य ही प्रकृति के क्रीड़ा-स्थल श्रीनगर के दर्शन करा, उनकी सेवा का सुअवसर प्राप्त करें। उन्होंने डाक्टर साहब को गरमियों में काश्मीर आने के लिए अनेक बार आमंत्रित किया। "ज़ौक जाए कौन पर दिल्ली की

गलियाँ छोड़ कर'' के कथनानुसार वर्षों बीत गये, पर मन में काश्मीर दर्शन की प्रबल इच्छा होते हुए भी डाक्टर साहब मित्र के साथ किये गये वचन को पूरा न कर सके। अब की बार दिल्ली में गरमी का विशेष प्रकोप है। दिन भर आग की नाईं चलने वाली लू शरीर को झुलसा के रख देती है। पसीने से बदन तर है, प्यास से बार-बार कंठ सूख रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो चहुँ ओर नरक अग्नि भड़क उठी हो, न दिन को सुख है न रात को चैन। सायँकाल लगभग सात का समय होगा, डाक्टर साहब अपनी दुकान पर गम्भीर मुद्रा में बैठे कुछ विचार-मग्न दिखाई दे रहे हैं। कभी शिमला जाने की सोच रहे हैं तो कभी राजरानी मसूरी के मनोहर दृश्य उनको आँखों के सामने घूम रहे हैं। इसी उधेड़ बुन में व्यस्त थे कि सहसा, डाकिये की आवाज़ ने, "डाक्टर साहब आपका एक पत्र है'' उनका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। अलसायी-सी आँखों को शोख करते हुए उन्होंने डाकिये पर एक मुसकान भरी दृष्टि डाली। पत्र लिया, उस पर श्रीनगर पत्रालय की मुहर देख, बड़े उतावलेपन से लिफाफे में से पत्र निकाला और पढ़ना आरम्भ किया। पत्र क्या था एक अच्छा खासा इतिहास था, जिसमें काश्मीरी लाल ने जम्मूँ-काश्मीर के दर्शनीय स्थानों का चित्र बड़े ही सुन्दर ढंग से खींचा था। तथा अन्त में डा० साहब से ज़ोरदार शब्दों में काश्मीर आने का अनुरोध किया गया था। पत्र पढ़ कर काश्मीर सुषमा के कल्पित दृश्य ने उनके मस्तिष्क में प्रत्यक्ष रूप धारण कर लिया। पुरानी स्मृतियाँ जाग उठीं। वे दौड़े-दौड़े

परिवार में पहुँचे और उन्हें अपने मित्र का पत्र पढ़ सुनाया। घर में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। विचार विमर्श हुआ और तार द्वारा पं० काश्मीरी लाल को सूचित किया गया कि हम सात जुलाई की शाम को सपरिवार श्रीनगर पहुँच रहे हैं। अगले ही दिन डा० साहब सपरिवार, काश्मीर मेल द्वारा पठानकोट की ओर चल पड़े। पठानकोट से जम्मूँ तक की यात्रा मोटर द्वारा तय हुई। जम्मूँ से टूरिस्ट बस में बैठ, कई हज़ार फिट ऊँची पर्वत मालाओं के बीचों-बीच, मोड़दार मार्ग से गुज़रते हुए वह एक अपरिचित स्थान पर आ पहुँचे और, वह था श्रीनगर। उधर श्रीनगर मोटरस्टैंड पर दोपहर से खड़े पं०काश्मीरी लाल अपने मित्र परिवार की प्रतीक्षा बड़ी बेताबी से कर रहे थे। मुश्किल से रात के आठ बजे होंगे कि एक गाड़ी हार्न बजाती हुई स्टैंड पर आ पहुँची। स्टैंड पर खड़े लोगों में से एक व्यक्ति तेज़ी से गाड़ी की ओर लपका और आँखें फाड़-फाड़ कर यात्रियों की ओर देखने लगा। डा० साहब को उसी 'बस' में सपरिवार बैठे देख कर काश्मीरी लाल को असीम प्रसन्नता हुई। प्रेमपूर्वक स्वागत के पश्चात् वह अपने अतिथियों को सादर अपने घर पर ले आए। थोड़े .विश्राम के के पश्चात् कड़म के साग, भात तथा अन्य स्वादिष्ट पकवानों के साथ अतिथि वर्ग का खूब स्वागत किया गया। रात अधिक बीत चुकी थी इसलिए भोजनोपरान्त, थोड़ी बात-चीत के बाद सब लोग सोने वाले कमरे में चले गये और गहरी नींद सो गये। रात की काली चादर उठी; सूर्य के सुनहले प्रकाश से पर्वत शिखर चमक उठे। ठंडी-ठंडी

सुगन्धित हवाओं व अलौकिक दृश्यों ने अतिथि वर्ग को मन्त्रमुग्ध कर रखा था। आज दोनों मित्रों की चिर अभिलाषा पूर्ण हुई। काश्मीरी लाल तथा उनके परिवार की प्रसन्नता का लेखनी द्वारा वर्णन किया जाना तो एक असम्भव-सी बात है। आईये अब आप पत्र-विषय से जानकारी करते हुए भारत के स्विटज़रलैंड काश्मीर की एक झाँकी कविता रूप में देखिये। सम्भवतः पत्र पढ़ कर आपका दिल भी काश्मीर दर्शन के लिये मचल उठे।

जल रहा था तन बदन, और प्यास लगती बार-बार,
हर तरफ लू चल रही थी, उड़ रहा गर्दो गुबार।
नींद आँखों में न थी, दिल हो रहा था बे करार,
गरमी से दम घुट रहा, आता पसीना बार-बार।
हाड़ की गरमी से जब, दिल हो रहा बेज़ार था,
दोस्त की चिट्ठी मिली, जिसमें यह समाचार था।

'पत्र समाचार'

आवो भाई देख लो इस, जन्नते कश्मीर को,
अपने हाथों से गढ़ा, कुदरत ने जिस तस्वीर को।
जिसके ज़र्रे-ज़र्रे में, कुदरत की हैं गुलकारियाँ,
जिसके फूलों की महक से, दूर हों बीमारियाँ।
मखमली चादर बिछी हैं, सर सब्ज सब वादियाँ,
जैसे हों सिंगार सोलह, कर रहीं शहज़ादियाँ।
दूर से कैसी सुहाती, पर्वतों की चोटियाँ,
चश्मों व झरनों की झर-झर, बाँध देती इक समाँ।

जम्मूँ-काश्मीर राज्य की सीमा में प्रवेश करने से पहले

दाखिला कश्मीर का इक याद रख लेना उसूल,
लेनी परमिट राहदारी[१] यह कभी जाना न भूल।
लखनपुर[२] में होना चाहिए, हाथ में परमिट मजूद,
हैं शुरु होती यहीं से सूबा जम्मूँ की हदूद।
रणवीर बाँके मनचले योद्धा धनी तलवार के,
दिन रात पहरा कर रहे इसका बहादुर डोगरे।
राह में कठूआ, हीरानगर, साम्बा[३] आएगा,
मन्दिरों का शहर जम्मूँ[४] फिर झलक दिखलाएगा।
डोगरों का केसरी ध्वज जिस पे फहराता कभी,
तवि दरया[५] के किनारे, है किला बाहू[६] अभी।
शौक से हैं देखते बाहर के सब ही यात्री,
गाँधी कॉलिज़[७] का भवन, मन्दिर श्री रघुनाथ जी[८]।
देखने के योग्य हैं, मंडी मुबारक[९] के महल,
राज्य की सरकार के दफ्तर हैं जिनमें आजकल।
मेला झिड़ी[१०] बाबा जित्तो की अमर है यादगार,
हो गया सरमायादारी के जो हाथों का शिकार।
गाँव जगटी और बिजयपुर, अब भी हैं मौजूद याँ,
मियाँ डीडो[११], वीर ज़ोरावर[१२] जनम पाए जहाँ।
कटड़ा देवी वेष्णु[१३] का मशहूर तीरथ है यहाँ,
भक्त दर्शन के लिए आते हज़ारों ही जहाँ।
वह शुद्ध महाँदेव[१४], पुरमंडल[१५] के खंडहर देख कर,

कौन होगा संगदिल आँखें न जिसकी आएँ भर।
जम्मूँ से आगे उधमपुर[१६], कुद[१७], बटोत[१८] आ जाएगा,
फिर वहाँ से दाएँ रस्ता भद्रवाह[१९] को जाएगा।
इसके पानी और हवा में इक अजब तासीर है,
वादिये कश्मीर की यह हू बहू तस्वीर है।
मेवे व फलफूल इसके रसो रंगत से भरे,
नाश्पाती, सेब, खुरमानी शहद ही हैं निरे।
ठंडी-ठंडी चील, पड़तल, देवदारों की हवा,
गर मुयस्सर न हुई तो ज़िन्दगी का क्या मज़ा।
लाल द्रम्मन[२०], स्योज,[२१], जाई[२२] है यहीं कैलाशकुंड[२३]
सैर करने हर बरस जाते जहाँ झुंडों के झुंड।
आसमाँ से बातें करते देख लो इसके पहाड़,
इस से आगे फिर शुरु होता इलाक़ा किश्तवाड़[२४]।
महक कर केसर की क्यारी डाल देती जान है,
और यहीं पाडर की[२५] वह मशहूर नीलम खान है।
हम चले कश्मीर को थे पर भटक कर रह गये,
देख कर सुन्दर नज़ारे दिल अटक कर रह गये।
ठाठरी[२६] से बैठ मोटर में चलो आगे बढ़ें,
रामबन के रास्ते बनिहाल[२७] की चोटी चढ़ें।
जम्मूँ व कश्मीर में हायल यही दीवार है,
वादिये कश्मीर तो बनिहाल के उस पार है।
इसके बीचों बीच से जाती है इक लम्बी सुरंग,
काम जिसका देख कर यह अक्ल रह जाती है दंग।
पार करते ही सुरंग वादी सुहानी आ गयी,

हार फूलों के पहन कश्मीर रानी आ गयी।
नज़र भर के देख लो फूलों भरे यह सब्ज़ाज़ार,
हैं खड़े किस शान से इसके सफ़ेदे और चिनार।
श्रीनगर[२८], भारत का सुन्दर नगर वेनिस[२९] है यही,
इसकी महिमा किस तरह जाए भला मुझ से कही।
रहने को मन्दिर, सराएँ और होटल[३०] हैं यहाँ,
सस्ते दामों अच्छा खाना सबको मिल जाता जहाँ।
लूट लो दरियाए[३१] जेहलम की भी थोड़ी-सी बहार,
आपकी खातिर खड़ी है हाऊसबोटों[३२] की कतार।
लो सुनो अब देखने होंगे तुम्हें यह सब मुकाम,
बारामूला[३३], गुलमरग[३४] फूलों की बस्ती पहलगाम[३५]।
हैं बहुत मशहूर शालीमार[३६] और बागे निशात[३७],
हारी पर्वत[३८], चश्माशाही[३९], झील डल[४०] की कौन बात।
शंकराचारज पहाड़ी[४१], मटन[४२], चश्मा-वेरीनाग[४३],
अमर कॉलिज़[४४], रेनावाड़ी[४५], सातपुल[४६], बादामी बाग[४७]।
है यहीं मशहूर तीरथ हिन्दुओं का अमरनाथ[४८],
यात्रा हर वर्ष आती सैंकड़ों भक्तों के साथ।
जामामस्जिद[४९] है यहाँ की इक पुरानी यादगार,
छोटे-छोटे मकबरे,[५०] मन्दिर बने हैं बे शुमार।
है यहाँ की दस्तकारी लकड़ी व रेशम का काम,
शाल दुशालों ने तो रोशन किया दुनिया में नाम।
सर्दी में जिसके बिना कटती नहीं इक रात है,
काँगड़ी[५१] कश्मीरियों की इक बड़ी सौगात है।

घूमना ठंडी हवाओं में यहाँ हो बे-फिकर,
बग्गूगोशा, नाश्पाती, सेब खाना पेट भर ।
कर दिया निर्भीक ने कुछ हाल थोड़ा-सा बयाँ,
बाकी सब कुछ देखना तुम अपनी आँखों से यहाँ ।
आवो अब की गरमियों में कर रहे हैं इन्तज़ार,
पत्र मत इसको समझना, है बुलावे का यह तार ।

पत्र पढ़ चुकने के पश्चात्

पढ़ के चिट्ठी दोस्त की मैं दौड़ा-दौड़ा घर गया,
सुन के यह इतिहास सब का दिल खुशी से भर गया ।
चिलचिलाती धूप से बचने की खातिर एक बार,
बाँध बिस्तर हम हुए कश्मीर जाने को तय्यार ।

१. परमिट राहदारी

भारत सरकार की ओर से जम्मूँ-काश्मीर राज्य की आन्तरिक सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, काश्मीर से भारत, या भारत से काश्मीर में प्रवेश करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमिट, प्रवेश पत्र लेना, आवश्यक रखा गया है । ऐसे परमिट दिल्ली, अमृतसर, पठानकोट, जम्मूँ आदि नगरों से बनवाये जा सकते हैं ।

२. लखनपुर

यह पठानकोट-जम्मूँ, राज मार्ग पर स्थित एक पुलिस चौकी है, जहाँ भारत से काश्मीर तथा काश्मीर से बाहर जाने

वाले सभी व्यक्तियों के परमिटों की जाँच की जाती है। यह स्थान जम्मूँ प्रान्त की सीमा से लगभग दो मील अन्दर की ओर स्थित है।

३. कठूआ, हीरा नगर, साम्बा

पठानकोट-जम्मूँ राज-मार्ग के समीपवर्ती प्रसिद्ध उप-नगर - साम्बा को "छींटों वाला शहर" भी कहते हैं। किसी समय छींट व खेस की तय्यारी, यहाँ का प्रसिद्ध घरेलू उद्योग था।

४. जम्मूँ

पठानकोट से मोटर मार्ग द्वारा ६५ मील दूर स्थित जम्मूँ का प्रसिद्ध, प्राचीन नगर है। इस नगर को रघुवंशी राजा जाम्बूलोचन ने बसाया और उन्हीं के नाम पर इसका नाम ज़म्बू या जम्मूँ पड़ गया। यहाँ बाहर से आये यात्रियों के ठहरने के लिए ब्राह्मण सभा, महाजन सभा, विनायक धर्मशाला, गुरुद्वारा सिंघ सभा, तथा रघुनाथ मन्दिर की प्रसिद्ध धर्मशालाएँ बनी हुई हैं। इनके अतिरिक्त रघुनाथ बाज़ार व रेज़ीडेन्सी रोड पर बड़े-बड़े होटल तथा रेस्टोरेन्ट भी बने हुए हैं, जहाँ भोजन तथा निवास का अच्छा प्रबन्ध है। यहाँ सरकार की ओर से एक एम्पोरियम भी बनाया गया है, जिसमें काश्मीरी कलाकारों द्वारा बनायी गयी सुन्दर वस्तुएँ निश्चित मूल्य पर मिलती हैं। यहाँ से श्रीगर के लिए टूरिस्ट बसें भी चलती हैं। इसके अतिरिक्त राज्य के अन्य प्रसिद्धउपनगरों नवाँशहर, अखनूर, पुंछ, बसोह्ली, ऊधमपुर,

भद्रवाह इत्यादि के लिए भी यहीं से गाड़ियाँ चलती हैं। इसके सुन्दर मन्दिरों के कारण इसे City of Temples या मन्दिरों का नगर भी कहा जाता है।

५. दरियाए तवि

तहसील भद्रवाह की प्रसिद्ध झील कैलाश कुँड से निकलने वाली एक नदी है, जिसके किनारे वाली पहाड़ी पर जम्मूँ का प्रसिद्ध नगर बसा हुआ है।

६. किला बाहू

दरियाए तवि के किनारे, एक छोटी-सी पहाड़ी पर बना हुआ यह जम्मूँ प्रान्त का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक किला है, जिसे राजा जाम्बूलोचन के बड़े भाई राजा बाहूलोचन ने बनवाया था। इसमें एक छोटा-सा महाकाली का मन्दिर भी है। चैत्र मास के प्रारम्भ में यहाँ एक भारी मेला आयोजित किया जाता है।

७. गाँधी मैमोरियल कॉलिज

रणबीर नहर के किनारे बनी हुई जम्मूँ प्रान्त की सबसे प्राचीन शैक्षणिक संस्था है। पहले यह "प्रिंस आव वेल्ज़ कॉलिज" के नाम से प्रसिद्ध थी।

८. रघुनाथ मन्दिर

जम्मूँ नगर के रघुनाथ बाज़ार में निर्मित प्रसिद्ध धर्म-स्थान जिसे स्वर्गीय महाराजा रणबीरसिंह जी ने लाखों रुपये

की लागत से बनवाया था। इसमें संस्कृत पाठशाला के साथ-साथ यात्रियों के ठहरने के लिए एक धर्मशाला भी बनी हुई है।

९. मंडी मुबारक

जम्मूँ नगर में बने हुए महाराजगान जम्मूँ-काश्मीर के पुराने भवनों को कहा जाता है। आजकल इन में काश्मीर सरकार के विविध कार्यालय हैं।

१०. मेला झिड़ी

जम्मूँ से लगभग १६ मील दूर, अखनूर रोड के निकट कान्हा चक नाम का एक प्रसिद्ध गाँव है। इसी गाँव के निकट, झिड़ी नामक स्थान पर प्रति वर्ष कार्तिक पूर्णिमा वाले दिन एक ऐतिहासिक मेला बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। जिसमें हज़ारों दर्शक इकट्ठे हो कर किसान शहीद बाबा जित्तो के प्रति अपनी श्रद्धाँजली अर्पित करते हैं। बाबा जित्तो अघार के रहने वाले एक निर्धन ब्राह्मण किसान थे। वह गाँव जम्मूँ से उत्तर की ओर, वेष्णु देवी के तिकोने पर्वत की ढाल पर बसा हुआ है। अपनी चच्ची जोजाँ व चचेरे भाई बुद्धा के दुर्व्यवहार से तंग आ कर उन्होंने अपना गाँव छोड़ दिया और रोज़गार की तलाश में झिड़ी की ओर आ निकले। गाँव छोड़ती बार उनकी लड़की कौड़ी, व तिस्सू नाम का एक हरिजन सेवक भी उनके साथ हो लिये थे। झिड़ी पहुँच कर उन्होंने मेहता वीरसिंह रुकवाल, जागीरदार से झिड़ी की बंजर भूमि तथा जंगल इस शर्त पर ले लिया कि पहले वर्ष

की फ़सल में से पूरा अनाज जित्तो को ही दे दिया जाएगा। किसान ने खून पसीने को एक कर पूरा जंगल साफ कर दिया, और उस भूमि में गेहूँ बो दिये। जित्तो और उसके सेवक दोनों ने भूमि की खूब परिश्रम से जुताई व देख भाल की। वर्षा भी समय पर होती रही, फलतः उस वर्ष नवतोड़ भूमि में गेहूँ की भारी फ़सल हुई। जागीरदार को जब इस बात का पता चला तो उसका विचार बदल गया। उधर जित्तो फ़सल को देख कर फूला न समाता था। फ़सल की कटाई हुई। अभी मुश्किल से दानों से भुस अलग ही किया गया था, कि जागीरदार खेत में आ धमका, और अपने कारिन्दों की सहायता से बलपूर्वक अनाज इकट्ठा करने लग पड़ा। बिचारे किसान ने जागीरदार की बड़ी मिन्नत समाजत की पर उसकी एक न सुनी गयी। वह जागीरदार के अत्याचार व अन्याय से दुखी हो कर गेहूँ के ढेर पर धरना मार कर बैठ गया। जिस पर उसे घसीटा गया और खूब मार पीट भी की गयी। जब बाबा जित्तो ने देखा कि उसकी विनम्र प्रार्थना का जागीरदार के कठोर हृदय पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ रहा, तो उसने इस अन्याय के विरुद्ध सिर धड़ की बाज़ी लगा दी और वहीं एक तेज़ कटार अपने पेट में घोंप अपना प्राणान्त कर लिया। इस प्रकार गेहूँ का समूचा ढेर रक्त रंजित हो गया। पिता की मृत्यु के पश्चात् उसकी अविवाहित लड़की, कौड़ी भी वहीं चिता बना कर जल मरी। बाबा जित्तो की इस दुखद मृत्यु के पश्चात् मूसलाधार वर्षा हुई और खेत में पड़ा सारा अनाज इधर उधर बह गया। जिन-जिन लोगों

या जीव जन्तुओं ने वह गेहूँ खाया वे सब पागलों की तरह जोश में नाचने लग पड़े। शहीद का खून रंग लाया, मेहता वीरसिंह का तो पूरा वंश ही समाप्त हो गया। कुछ उस गाँव को छोड़ इधर उधर भाग निकले। बाद में बचे खचे कुछ लोगों ने उसी स्थान पर बाबा जित्तो की समाधि बनवाई और पश्चाताप करते हुए मिन्नत के तौर पर मेला लगाया। इस ऐतिहासिक घटना को बीते ५२० वर्ष हो चुके हैं और तभी से उस किसान शहीद की पुण्य स्मृति में यह 'झिड़ी का मेला' चला आ रहा है।

११. मियाँ डीडो

जम्मूँ प्रान्त में सिक्खों की राजसत्ता को न मानने वाले यह एक प्रसिद्ध डोगरा शूरवीर हो गुज़रे हैं। इनका जन्म जम्मूँ के जगटी नामक गाँव में मियाँ हज़ारी के घर हुआ था।

१२. ज़ोरावर सिंह

भारत तथा जम्मूँ-काश्मीर के इतिहास में प्रसिद्ध डोगरा सेनापति मियाँ ज़ोरावर सिंह का एक विशेष स्थान है। कुछ समय से भारत के विविध समाचार पत्रों में उनके विषय में अनेक खोजपूर्ण लेख प्रकाशित किये जा रहे हैं। सर्वप्रथम उन्होंने ही भद्रवाह, किश्तवाड़, लद्दाख़ तथा गिलगित्त के दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्रों को जम्मूँ-काश्मीर राज्य में मिला कर, इसकी सीमा का चारों ओर विस्तार किया। यह ठाकुर हरजी सिंह, ग्राम अनसरा, तहसील हमीरपुर, ज़िला कांगड़ा के दूसरे बेटे

थे। युवावस्था में ही खालसा सेना में भरती हो गये। डोगरा सिपाही खालसा सैनिक पदाधिकारियों द्वारा उनसे किये जाने वाले अपमानजनक व्यवहार की प्राय: चर्चा और शिकायत किया करते थे। एक दिन ज़ोरावर सिंह को तम्बाकू नोशी करते देख दो पदाधिकारियों ने गालीगलौज़ से काम लिया।

ज़ोरावर सिंह इसे सहन न कर सके और दोनों का बध करने के पश्चात् वहाँ से भाग खड़े हुए। कुछ समय तक थाने-दार धर्म सिंह सौंगलिया की सहायता से लौंगटा के जंगलों में छिपे रहे और फिर राजा संसार चन्द कटोच वालिये लम्बा ग्राँ के पास मुलाज़िम हो गये। सिक्खों को जब यह पता चला तो उन्होंने राजा संसार चन्द पर आक्रमण कर दिया। ज़ोरा-वर सिंह क़िला गोपीपुर बरलब दरयाए ब्यास बन्दी बना लिये गये। एक दिन उन्हें किला के बुर्ज पर चढ़ने का अवसर मिला। उन्होंने बुर्ज से दरियाए ब्यास में छलाँग लगा दी और अपने पहले स्थान लौंगटा के जंगलों में पहुँच गये। इस स्थान को सुरक्षित न समझ कर अब उन्होंने अपनी जन्म भूमि के परित्याग का दृढ़ संकल्प कर लिया। उस समय जम्मूँ प्रदेश के दो वीर मियाँ डीडो जगटी वाले, व मियाँ दीवानूँ रायपुर वाले सिक्खों के कट्टर विरोधी होने के कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध थे। आखिर उनके साथ मिल कर काम करने के विचार से थानेदार धर्म सिंह, थानेदार भीखम सिंह और एक अन्य आदमी के साथ इन्होंने जम्मूँ का रुख किया। वहाँ

पहुँचने पर इत्तफाक से इस टोला की भेंट धौन्थली ढक्की पर महाराजा गुलाब सिंह से हो गयी । महाराजा ने उन्हें अपनी सेना में ले कर रियासी दुर्ग के रक्षा कार्य पर नियुक्त कर दिया । पश्चात् वह तहसील रियासी के विजयपुर नामक ग्राम में ही आबाद हो गये । सेना में भरती होने के कुछ ही समय पश्चात्, अपनी वीरता तथा अतुल साहस के कारण, वह महाराजा गुलाब सिंह के विशेष प्रेमपात्र बन गये । भद्रवाह और किश्तवाड़ के पर्वतीय क्षेत्र को जीत लेने के पश्चात् उनके लिये लद्दाख विजय का मार्ग खुल गया। १८४० ई० के लगभग, वीर ज़ोरावर सिंह के नेतृत्व में बहादुर डोगरों ने दुर्गम, हिमाच्छादित पर्वतमालाओं को लाँघते हुए लद्दाख पर आक्रमण कर दिया । केवल दो चढ़ाइयों के पश्चात् यह क्षेत्र भी उनके अधिकार में आ गया । लद्दाख विजय के कुछ वर्ष पश्चात्, उन्होंने बलतिस्तान पर आक्रमण कर, स्कर्दू के राजा को बन्दी बना उसके राज्य पर भी अधिकार कर लिया । सितम्बर १८४१ में, तिब्बत के पश्चिमी भाग पर आक्रमण कर उसे भी जीत लिया । इस विजय के पश्चात्, उन्होंने पश्चिमी तिब्बत के ज़िला पूरंग, के तकलाकोट नामक उपनगर के दुर्ग में, मेहता बस्तीराम की कमान में एक सुदृढ़ सैनिक दल रक्षा कार्य के लिए नियत कर दिया । अक्तूबर १८४१, के अन्तिम सप्ताह में वह अपनी शेष डोगरा सेना सहित लद्दाख की ओर वापिस लौटे । अभी वह मार्ग में ही थे कि ७ नवम्बर, १८४१ को उन्हें यह सूचना मिली कि तिब्बती सेना ने पूरंग पर पुनः अधिकार कर लिया है । इस

समाचार के मिलते ही उन्होंने अपनी दोनों धर्म पत्नियों बैन्ती देवो और आसादेवी को एक छोटे से सैनिक दस्ते की सुरक्षा में लेह (लद्दाख) के दुर्ग में भेज दिया। तत्पश्चात् वह अपनी सेना को ले कर तकलाकोट से सात मील पूर्व की ओर टोजो नाम के एक छोटे से गाँव की ओर बढ़े, जहाँ उनका सामना तिब्बती सेना से हुआ। इस प्रकार शत्रु से लोहा लेते हुए वह १२ दिसम्बर, १८४१ को अपने अधिकांश सैनिकों सहित, उसी स्यान पर वीर गति को प्राप्त हुए भारी हिमपात तथा अन्न्य कठिनाइयों के कारण सात हज़ार सेना में से लगभग सभी सैनिक उसी (मानसरोवर झील, रूप कुंड) स्थल के निकटवर्तीय स्थल पर मारे गये। कुछ एक वचे हुए संनिकों ने तकलाकोट दुर्ग में पहुँच कर मेहता वस्तीराम को इस दुखद घटना की सूचना दी। १२, १३ दिसम्बर को अपने बचे हुए सैनिकों के साथ मेहता बस्तीराम ने, लूछेला और लीपूलेख दर्रों (१६००० फिट) को पार कर अंग्रेज़ी शासित क्षेत्र अलमोड़ा में प्रवेश किया। वहाँ से ईस्ट इंडिया कम्पनी की सहायता से वे लाहौर में महाराजा शेर सिंह के दर्बार में पहुँचाए गये।

जब इस दुखद समाचार की सूचना जम्मूँ पहुँची, तो समूचा डुग्गर शोकातुर हो उठा। स्वर्गवासी वीर के परिवार को लेह से उनके गाँव बिजयपुर रियासी में लाये जाने का, जम्मूँ दर्बार की ओर से तुरन्त ही प्रबन्ध कर दिया गया। कुछ सप्ताह के पश्चात् स्वर्गीय सेनापति का परिवार सुरक्षित

घर पहुँच गया। यहाँ पहुँचने पर उनकी छोटी धर्मपत्नी आसा देवी सती हो गयीं।

१३. कटड़ा देवी वेष्णु

जम्मूं से ३६ मील की दूरी पर कटड़ा नामक एक छोटा-सा नगर है, जो मोटर मार्ग द्वारा जम्मूँ तथा रियासी से मिला हुआ है, यहाँ से सात मील दूर, त्रिक्टा पहाड़ी की गोद में, ५३०० फिट की बुलन्दी पर वेष्णु देवी का भारत प्रसिद्ध तीर्थ है। जिसके दर्शनों के लिए भारत के कोने-कोने से प्रतिवर्ष हज़ारों ही यात्री आते हैं। यात्रा क्वार मास, पहले नवरात्रे से आरम्भ हो कर लगभग तीन मास तक चालू रहती है।

१४. शुद्ध महाँदेव

जम्मूँ प्रान्त में चन्हैनी नाम की एक छोटी-सी रियासत थी, जो अब जम्मूँ प्रान्त में ही शामिल कर दी गयी है। इसी क्षेत्र में शुद्ध महाँदेव जी का प्रसिद्ध तीर्थ है। यहाँ प्रति वर्ष एक धार्मिक मेला लगता है, जिसमें हज़ारों लोग सम्मिलित होते हैं। पौराणिक गाथाओं के अनुसार यही वह शुभस्थान है, जहाँ पर शिवजी महाराज का पार्वती जी से विवाह सम्पन्न हुआ था। कुद्ध से शुद्ध महाँदेव को एक पैदल मार्ग द्वारा मिलाया गया है।

१५. पुरमण्डल

महाराजा रणवीर सिंह जी की यह हार्दिक अभिलाषा थी कि जम्मूँ-काश्मीर राज्य में तीर्थराज काशी जी की भाँति

मन्दिरों का एक प्रसिद्ध नगर बसाया जाए, जहाँ धर्म-प्रचार तथा संस्कृत विद्या के पठन-पाठन की भी समुचित व्यवस्था हो। इस योजना को कार्य रूप देने के लिए उन्होंने जम्मूँ से १८ मील पूर्व में पुरमंडल नामक तीर्थस्थान को चुना। हज़ारों रुपये के व्यय से देवक नदी के किनारे अनेक मन्दिर व धर्मशालाएँ बनवायी गयीं, परन्तु अभी यह काम अपूर्ण ही था कि महाराजा साहब का स्वर्गवास हो गया। अब भी दिसम्बर मास में प्रति वर्ष चैत्र की चौदश के दिन यहाँ एक बहुत बड़ा मेला लगता है, जिसमें हज़ारों लोग एकत्र हो कर देवक नदी में स्नान करते हैं। आजकल यहाँ के मन्दिर तथा अन्य धार्मिक स्थान टूटी-फूटी अवस्था में पड़े, काल-गति पर रक्ताश्रु बहा रहे हैं।

१६. ऊधमपुर

जम्मूँ-श्रीनगर राजमार्ग के मध्य, राजा ऊधम सिंह के नाम पर बसाया गया, एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर है। यह नगर जम्मूँ से लगभग ४२ मील की दूरी पर स्थित है। यात्रियों के ठहरने के लिए यहाँ एक विशाल धर्मशाला भी बनी हुई है। घी, अनारदाना, शहद व केशर की प्रसिद्ध मंडी है।

१७. कुद्ध

उधमपुर से आगे लगभग २५ मील दूर, जम्मूँ-काश्मीर राजमार्ग पर स्थित, यह एक छोटा-सा अत्यन्त सुन्दर, स्वास्थ्य-वर्द्धक स्थान है। गरमियों में इसके चश्मे का ठंडा जल पीने, तथा मुँह पर छींटे मारने से रोगियों को भी नवजीवन प्राप्त

होता है। शेख अब्दुल्ला को यहीं एक बंगले में नज़रबन्द रखा गया था।

१८ बटोत

कुद्ध से मिलते हुए दो अन्य स्थान सन्नासर तथा बटोत प्राकृतिक सौन्दर्य में अपना विशेष महत्व रखते हैं। बटोत, जम्मूँ से ७८ मील की दूरी पर, काश्मीर राजमार्ग पर स्थित है। यहाँ एक छोटा-सा टी० बी० सेनिटोरियम भी है। यहाँ से भद्रवाह, किश्तवाड़ को एक मोटर मार्ग भी जाता है। यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिए एक विशाल धर्मशाला बनी हुई है।

१९ भद्रवाह

यह जम्मूँ प्रान्त के ज़िला डोडा की एक पर्वतीय तहसील है। मोटर मार्ग द्वारा जम्मूँ से १२८ मील और बटोत से ५० मील की दूरी पर स्थित, चारों ओर पर्वत मालाओं से घिरा हुआ भद्रवाह का सुन्दर नगर है। इसका प्राचीन नाम भद्र-काशी भी कहा गया है। इसके प्राकृतिक सौन्दर्य, चील, देवदार की मनमुग्धकारी, जीवनदायिनी मस्त हवाओं, कलकल करती नदियों तथा स्वादिष्ट फलों के कारण ही इस प्रदेश को छोटा काश्मीर भी कहा जाता है। एक ओर से इसकी सीमाएँ हिमाचल प्रदेश के चम्बा क्षेत्र से जा मिलती हैं। यद्यपि काश्मीर सरकार की ओर से इस तहसील के दर्शनीय स्थानों की उन्नति की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया तो भी गत कुछ वर्षों से भारतीय पर्यटकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हो रहा

है। वास्तव में इसकी सुरम्यता भारतीय सैलानियों को आमंत्रित कर रही है कि वे अवश्य ही एक बार इस अत्यन्त सुन्दर तथा स्वास्थ्यवर्द्धक स्थान के दर्शनार्थ, यहाँ आ प्रकृति के सौन्दर्य का आनन्द उठाएँ। भद्रवाह का वर्णन करते हुए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि इन पन्नों में इस नगर से सम्बन्धित एक ऐतिहासिक घटना "मेला पट" की भी कुछ जानकारी दी जाए।

मेला पट

यह मेला भद्रवाह का एक ऐतिहासिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक मेला है। इसकी ऐतिहासिक कथा इस प्रकार कही जाती है कि सोलहवीं शताब्दी में, जब कि मुगल सम्राट अकबर भारत पर राज्य कर रहा था, उस समय जम्मूँ-काश्मीर राज्य के भद्रवाह क्षेत्र में नागवंशी राजा धरीपाल के वंशज राजा नागपाल का शासन था। यह राजा बड़े ही धर्मात्मा तथा प्रजापालक थे। इस कारण इनकी प्रजा इनसे बड़ी प्रसन्न थी। पर कुछ एक पहाड़ी राजा ऐसे भी थे, जो इनसे द्वेषभाव तथा शत्रुता रखते थे। उन दिनों दिल्ली के मुगल सम्राट, समय-समय पर दरबार आयोजित किया करते थे, जिसमें अधीन राजाओं की ओर से उनको अनेक सुन्दर तथा बहु मूल्य उपहार भेंट किये जाते थे। इसी प्रकार के एक दरबार के लिए, दिल्ली दरबार की ओर से राजा नागपाल को भी बुलावा भेजा गया। विचार विमर्श के पश्चात् राजा अपने विश्वस्त मन्त्रियों के साथ दिल्ली की ओर चल पड़े। चलती बार उन्होंने भी अपने राज्य में पैदा होने

वाले फल तथा अन्य वस्तुएँ मुगल सम्राट को उपहार रूप में भेंट करने के लिए साथ बाँध लीं । उन दिनों इस पर्वतीय प्रदेश में न तो आवागमन की सुख सुविधाएँ ही उपलब्ध थीं और न ही अच्छे मार्ग । आखिर कई सप्ताह की लम्बी यात्रा के पश्चात् राजा साहब दिल्ली पहुँचे । वहाँ पहुँचने पर एक निश्चित दिन जब वह शाही दरबार में सम्मिलित हुए तो उन्होंने राज भक्ति की प्रतिज्ञा लेने के पश्चात् अन्य राजाओं की भाँति सम्राट को अपना मस्तक न झुकाया । हाँ, उपहार रूप में लायी गयी वस्तुएँ बड़े विनम्र भाव से बादशाह के सामने रख दीं । इस पर इनसे द्वेष रखने वाले राजाओं की ओर से इनकी खूब खिल्ली उड़ायी गयी । किसी ने कहा राजा साहब, दिल्ली दरबार को क्या मज़ाक समझ रखा है, जो सम्राट को यथोचित ढंग से मस्तक तक न झुकाया । कोई कहता क्या दिल्लीपति का अपमान करने के लिए ही यह घास-फूस साथ बाँध लाये । संक्षेपतः जितने मुँह उतनी ही बातें हो रही थीं । सम्राट भी राजा साहब से बड़ा अप्रसन्न हुआ और उसने भी इन पर ऐसे ही अपमान जनक शब्दों से कटाक्ष किये । उनसे यह भी पूछा गया कि उन्होंने सम्राट को सीस न झुका कर दरबार के नियमों का उल्लंघन करने का दुःसाहस कैसे किया ? इस महान् अपराध का दोषी होने पर उन्हें कड़े से कड़ा दंड क्यों न दिया जाए । राजा नागपाल, जो अब तक इन सब बातों को शान्तिपूर्वक सुन रहे थे, एकाएक आवेश में आ गये और उन्होंने सम्राट अकबर को स्पष्ट शब्दों में उत्तर दिया कि

उनका सिर उनके इष्ट देव वास्कि नाग के अतिरिक्त अन्य किसी भी शक्ति के आगे नहीं झुक सकता। (काश्मीर के इतिहास को देखने से पता चलता है कि किसी समय यहाँ नागपूजा का बड़ा प्रचार था। अनेक नगरों व स्थानों के नामों में भी नाग शब्द का प्रयोग किया जाता था, जैसे अनन्तनाग, कुक्कड़ नाग, शीश्रमनाग, कौंसर नाग, वेरीनाग इत्यादि। लकड़ी तथा पत्थर से बनाये गये प्राचीन मन्दिरों में तो आज भी नाग देवताओं की मूर्तियाँ देखने में आती हैं। तहसील भद्रवाह में भी वास्कि नाग, सुपार नाग, कप्पर नाग, मैल्ह नाग तथा बुड्ढू नाग की पूजा शताब्दियों से होती आ रही है।) एक अधीन राजा से इस प्रकार का स्पष्ट उत्तर सुन कर सम्राट आग बबूला हो गया और राजा से इस बात का प्रमाण, शीघ्र किसी चमत्कार रूप में दिखाने को कहा गया। साथ ही यह धमकी भी दी गयी कि ऐसा न कर सकने पर उन्हें आजीवन कारागार में बन्द रहना पड़ेगा। राजा साहब ने कुछ सोच विचार के पश्चात्, सम्राट से एक दिन का अवसर माँगा, जो उन्हें दे दिया गया। दरबार का पहला दिन तो शोर-शराबे में ही समाप्त हुआ। भरे दरबार में इस प्रकार अपमानित हो, राजा नागपाल लहू के घूँट पी कर रह गये। रात भर करवटें बदलते-बदलते उन्हें नींद न आयी, अब रात की काली चादर उठने को ही थी कि इसी सोच विचार में, चिन्ता-मग्न राजा साहब की आँख लग गयीं। वह स्वप्न देख रहे थे और उस अवस्था में भी भगवान् से यही प्रार्थना कर रहे थे कि अगले दिन दरबार में उनकी लाज रखी जाए। स्वप्नावस्था

में ही उन्हें एक वृद्ध ऋषि दिखाई दिए, जिन्होंने राजा को धैर्य बँधाया और कहा कि कल के होने वाले दरबार में वे एक सातरंगी पगड़ी बाँध कर चले जाएँ । भोर हुई, राजा साहब ने स्नान आदि नित्य कर्म कर अपने इष्ट देव वास्कि नाग की वन्दना की और नियत समय पर दरबार में पहुँच गये । सम्राट अकबर के दरबार में आने पर वह भी अन्य दरबारियों की भाँति उनके सम्मान के लिए खड़े हो गये, परन्तु पहले दिन की भाँति आज भी उन्होंने दिल्लीपति के सामने अपना मस्तक न झुकाया । आज राजा नागपाल के बैठने के लिए सब से पीछे वाली पंक्तियों में स्थान-व्यवस्था की गयी थी । दरबार में बैठे प्रायः सभी पहाड़ी राजा, राजा नागपाल के इस अपमान पर मन ही मन में बड़े प्रसन्न हो रहे थे । कुछ उनकी सतरंगी पगड़ी तथा सरल वेश-भूषा का उपहास करते हुए एक दूसरे को कनखियों से देख रहे थे । सम्राट ने राजा की ओर त्योरी चढ़ा कर देखते हुए अपने इष्ट देव का चमत्कार दिखाने को कहा । सारे दरबार में एक सन्नाटा-सा छा गया । राजा नागपाल अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए अपने स्थान से उठ कर सम्राट की ओर बढ़े । सब दरबारियों की नज़रें उनके चेहरे पर गड़ गईं । अभी वह मुश्किल से सम्राट के निकट पहुँच ही पाये थे कि उनकी पगड़ी के अन्दर से एक सात फन वाला भयंकर नाग सम्राट की ओर लपकने लग पड़ा । उपस्थित दरबारी बगलें झाँक रहे थे । कुछ एक जो अधिक दलेर थे, घबरा कर भाग खड़े हुए । सम्राट अकबर का मुख विवर्ण हो गया । आखिर वह अपनी भूल के लिए

गिड़गिड़ा कर राजा साहब से क्षमा याचना करने लगा। सन्ध्या हो गयी और उस दिन का दरबार भी अफरातफरी में ही समाप्त हो गया। आज घटी घटना की चर्चा दिल्ली के प्रायः प्रत्येक घर में हो रही थी। रात को एक और चमत्कार हुआ कि शयनागार में सोये हुए सम्राट अपने पलंग पर से बार-बार चौंक कर नीचे गिर पड़ते थे। बादशाह अपनी इस भूल पर बड़े लज्जित थे। अगले दिन प्रातःकाल होते ही राजा नागपाल को बड़े आदर सत्कार के साथ राज भवन में बुलाया गया और गत दिन उनसे किये गये दुर्व्यवहार के लिए बड़ा खेद प्रकट किया गया। इसके अतिरिक्त राज भवन में बजने वाली नौबत (नक्कारा) एक स्वर्ण छत्र, कलश (जिसे भद्रवाही में झारी कहते हैं) तथा अनेक रेशमी पट राजा नागपाल के इष्टदेव श्री वास्कि नाग जी के लिए भेंट किये गये। कुछ दिनों के पश्चात् राजा साहब ने सम्राट से बिदाई ले कर भद्रवाह के लिए प्रस्थान किया। कई सप्ताह की दुर्गम यात्रा के पश्चात् उन्होंने एक विजयी वीर की भाँति अपने राज्य में प्रवेश किया। दिल्ली में घटी घटना उनकी प्रजा के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँच चुकी थी। राजा नागपाल ने अपनी इस विजय पर, भद्रवाह पहुँचते ही अपने राज भवन के आँगन में एक विजय-उत्सव का आयोजन किया। इसमें राजा साहब, उनके मन्त्रिमंडल तथा प्रजा ने सहर्ष भाग लिया। वे रागरंग करते हुए ढोल, बाँसुरियों तथा शहनाइयों की मधुर धुन के साथ श्री वास्कि नाग के मंदिर में पहुँचे और उनके चरणों में श्रद्धा के पुष्प अर्पित करते हुए भगवान् का बार-बार धन्यवाद

किया। इसके पश्चात् सम्राट अकबर की ओर से भेंट की गयीं सभी वस्तुओं की प्रदर्शनी की गयी। लोग प्रत्येक वस्तु को ध्यान से देखते और खुशी के मारे जामे में फूले न समाते थे। शब्दकोश में पट का शाब्दिक अर्थ रेशम या वस्त्र दिया गया है। इसीलिए इस उत्सव को मेला पट ही कहा जाता है। सवा चार सौ वर्ष बीत जाने पर, आज भी प्रति वर्ष, भद्रवाह के मुहल्ला खक्खल में नागपंचमी के शुभ पर्व पर यह उत्सव निरन्तर तीन दिन तक (१७-१८-१९ भादों) सितम्बर मास में बड़े समारोह से मनाया जाता है। महाराजा-शासन में सरकार की ओर से ही सब प्रबन्ध होता था और तहसील के प्रमुख प्रशासन अधिकारी इसमें सोत्साह भाग लेते थे। लकड़ी की एक चौकी, जिसके ऊपर स्वर्ण छत्र सहित पीतल का एक भारी कलश लगा रहता है, को एक पूर्व निश्चित व्यक्ति अपने सिर पर रख लेता है। कलश के चारों ओर बीसियों लम्बी-लम्बी रेशमी चद्दरें लटकी रहती हैं। यह सब तैयारी उसी मुहल्ला के एक निश्चित स्थान पर की जाती है। इसके पश्चात् उस व्यक्ति को ढोल, शहनाइयों तथा पुष्प-वर्षा के साथ उस स्थान पर लाया जाता है, जहाँ राजा नागपाल ने दिल्लीपति द्वारा भेंट की गयी वस्तुओं की प्रदर्शनी रखी थी। वहाँ पहुँच कर वह व्यक्ति चारों ओर घूमने लग पड़ता है, जिस से एक चक्कर-सा बँध जाता है। साँचे दरबार की जय, नागे वासक की जय, के जयघोष से नभ मंडल गूँज उठता है। इस सुन्दर दृश्य के देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि मानो छत्र, कलश सहित, विविध रंग के रेशमी

वस्त्रों का एक मन्दिर ही नाच रहा हो। रंगारंग की वेश-भूषा में सुशोभित सैंकड़ों नर नारी इस ऐतिहासिक विजय उत्सव में प्रसन्नतापूर्वक भाग लेते हैं। जम्मूँ-काश्मीर सरकार की ओर से इस तारीखी मेले पर, तहसील भद्रवाह के लिए तीन दिन की छुट्टी घोषित की गयी है। मुगल सम्राट अकबर तथा भद्रवाह नरेश राजा नागपाल दोनों ही आज इस संसार में नहीं हैं, परन्तु उनके बीच, सैंकड़ों वर्ष पूर्व घटी यह घटना आज भी जम्मूँ प्रान्त, विशेषत: तहसील भद्रवाह के प्रत्येक निवासी को कंठस्थ है। किसी कवि के यह शब्द कितने सुन्दर हैं :—

रुस्तम रहा ज़मीं पर न कोई साम रह गया,
मर्दों का तले आस्माँ के नाम रह गया।

२० लाल द्रम्मन

डोडा नगर से केवल ८ मील की दूरी पर यह एक रमणीक, हराभरा मैदान है। यहाँ का जल बड़ा शीतल तथा पाचक है। वन विभाग की ओर से यहाँ एक रेस्ट हाऊस भी बना हुआ है।

२१ स्योज धार

तहसील भद्रवाह की एक पर्वत माला का नाम है जो भद्रवाह नगर से ११½ मील की दूरी पर स्थित है। इसकी ऊँचाई ९½ हज़ार फीट है। इसके विशाल मैदानों की हरीभरी घास और रंगारंग के फल देखते ही बनते हैं। यहाँ बहुत-सी जड़ी बूटियाँ भी पायी ज़ाती हैं।

२२. जाई

भद्रवाह से केवल चार मील दूर यह एक स्वास्थ्यवर्द्धक स्थान है।

२३. कैलाशकुंड

सागर तल से १४२४१ फिट की ऊँचाई पर, चारों ओर गगन चुम्बी पर्वतों से घिरी हुई, कैलाश की प्रसिद्ध झील है, जिसमें बड़े-बड़े हिम खंड तैरते रहते हैं। यह स्थान भद्रवाह नगर से १४ मील की दूरी पर स्थित है। इस झील से भद्रवाह का नाला नीरू और जम्मूँ प्रान्त का प्रसिद्ध दरया तवि निकलते हैं। कैलाश यात्रा, जिसमें सैंकड़ों लोग सम्मिलित होते हैं, सितम्बर के पहले सप्ताह में आरम्भ होती है। यात्री झील के निर्मल ठंडे जल में स्नान करने में बड़ा पुण्य मानते हैं।

२४. किश्तवाड़

तहसील भद्रवाह से मिलती हुई, जम्मूँ प्रान्त के ज़िला डोडा की एक पर्वतीय तहसील तथा छोटा-सा सुन्दर नगर है। इसका जलवायु बड़ा ही स्वास्थ्यवर्द्धक है। घी और कम्बलों के व्यापार के अतिरिक्त यहाँ का जीरा तथा केसर भी बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ से एक मार्ग (पद-यात्रियों के लिए) सिंगपुर होता हुआ काश्मीर घाटी में जा मिलता है।

२५. पाडर

किश्तवाड़ से लगभग ४२ मील आगे पाडर का पिछड़ा हुआ पर्वतीय क्षेत्र आरम्भ होता है। यहाँ मचेल नाम के गाँव

के पास ही 'नीलम' की प्रसिद्ध खान है। यहाँ उबलते हुए गंधक मिश्रित गरम जल का एक चश्मा भी है, जिसमें नहाने से गठिया के रोगियों को पर्याप्त लाभ पहुँचता है।

२६. ठाठरी

किश्तवाड़ मोटर मार्ग के मध्य, पुल डोडा से १९ मील दूर एक छोटा-सा व्यापारिक स्थान है।

२७. बानिहाल

पीर पंजाल पर्वत माला का एक नौ हज़ार फिट ऊँचाई वाला पर्वत है, जिसको पार करते ही काश्मीर की सुन्दर घाटी आ जाती है। यह पर्वत जम्मूँ व काश्मीर प्रान्त के बीच एक दीवार की भाँति खड़ा है।

लम्बी सुरंग

(जवाहर टनल) इसका वर्णन पूर्व आ चुका है।

२८. श्रीनगर

सागरतल से ५२०० फिट की बुलन्दी पर जेहलम नदी के दोनों किनारों पर बसा हुआ सुन्दर नगर तथा जम्मूँ-काश्मीर राज्य की ग्रीष्म-कालीन राजधानी है। अपने प्राकृतिक सौन्दर्य, स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु तथा मीठे फलों के लिए यह एक विश्व-विख्यात स्थान है। श्रीनगर की जनसंख्या २०७८०० है। इसे भारत का वेनिस या स्विटज़रलैंड भी कहा जाता है। प्राचीन काल में भी बेरूनी आक्रमणकारियों ने इस नगर को कई बार

नष्ट-भ्रष्ट किया, परन्तु इसे फिर बसाया जाता रहा। इसकी प्राचीनता का केवल इसी एक बात से अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्यूनसांग ने अपने भारत-यात्रा सम्बन्धी लेखों में श्रीनगर को हज़ारों घरों वाला एक सुन्दर तथा भव्य नगर लिखा है।

२९ वेनिस

इटली का एक अत्यन्त सुन्दर नगर।

३० मन्दिर, सराएँ और होटल

मन्दिर तथा धर्मशालाओं के अतिरिक्त इस समय श्रीनगर में बाहर से आने वाले यात्रियों के भोजन तथा निवास की सुख-सुविधाओं के लिए अनेक छोटे-बड़े होटलों की व्यवस्था है। इनमें हिन्द-काश्मीर होटल, नीडो होटल, क्राऊन होटल, पंजाब मुस्लिम होटल तथा विज़िटर्ज़ रेस्टोरेंट विशेष प्रसिद्ध हैं।

३१. दरयाए जेहलम

श्रीनगर के बीचोंबीच नागिन की भाँति बल खाती हुई, चश्मा वेरी नाग से निकलने वाली एक सुन्दर नदी है। इसकी गणना पंजाब के पाँच बड़े दरयाओं में होती है। श्रीनगर के आसपास इसमें कई मीलों तक नौका विहार भी किया जाता है। प्राचीन ग्रन्थों में इसका नाम वितस्ता नदी लिखा गया है।

३२. हाऊस बोट

दरयाए जेहलम में चलते फिरते, तैरते हुए नाव की शकल वाले लकड़ी के सुन्दर मकान जिनमें धनी यात्री अपनी

काश्मीर यात्रा के समय आ कर ठहरते हैं। आज से साठ, सत्तर वर्ष पूर्व श्रीनगर में हाऊस बोट का कोई नाम तक न जानता था, परन्तु आज जेहलम नदी में छोटे बड़े सैंकड़ों हाऊस बोट इधर उधर तैरते दिखाई पड़ते हैं, जिनमें यात्रियों के लिए सब प्रकार की सुख सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यह ६० रुपया से ले कर ४०० रुपया तक किराया पर उपलब्ध हो सकते हैं। काश्मीर में हाऊस बोट के आविष्कारक (मूजद) ए० टी० कनाड़ड साहब हुए हैं।

३३. बारहमूला

श्रीनगर से केवल ३५ मील दूर स्थित यह एक सुन्दर नगर है जो मोटर मार्ग द्वारा श्रीनगर से मिला हुआ है। यहाँ दियासलाई, सैन्टोनीन (दवाई) व लकड़ी चीरने के कारखाने भी हैं।

३४. गुलमर्ग

श्रीनगर से ३० मील पश्चिम की ओर तथा सागर तल से ८७०० फिट की ऊँचाई पर स्थित, यह एक अत्यन्त सुन्दर स्थान है। यहाँ घुड़दौड़ और पोलो खेलने का मैदान भी है। प्राचीनकाल में इसको गौरी मार्ग कहा जाता था। सोलहवीं शताब्दी में शाह यूसफ ने इसका नाम बदल कर गुलमर्ग रख दिया। जैसा कि इसके नाम से ही ज्ञात होता है, यह सचमुच ही एक ऐसी पुष्प वाटिका है जो बाहर से आने वाले हज़ारों ही यात्रियों को काश्मीर देखने के लिए आकर्षित करती है। इसकी तलहटी में टनमर्ग स्थित है, यहाँ का जलवायु फेफड़ों

के रोगग्रस्त रोगियों के लिए बहुत ही लाभदायक है। यहाँ यक्ष्मा रोग वालों के लिए एक स्वास्थ्यगृह भी बनाया गया है।

३५. पहलगाम

लीदर और तानिन नदियों के संगम पर स्थित सुहावनी जलवायु वाला यह एक प्रसिद्ध स्वास्थ्य वर्द्धक स्थान है। समुद्र-तल से ७०९० फिट की ऊँचाई पर स्थित यह स्थान श्रीनगर से मोटर मार्ग द्वारा ६० मील की दूरी पर है।

३६. शालीमार बाग

श्रीनगर से लगभग ९ मील दूर, झील डल के तट पर मुगल सम्राट् जहाँगीर द्वारा लगवाया गया अति सुन्दर उद्यान है। इसमें भाँति-भाँति के सुन्दर, सुगन्धित पुष्पों, व फलदार वृक्षों की पंक्तियाँ दर्शकों को आनन्द मग्न कर देती हैं। कहा जाता है कि किसी समय इसके चारों ओर संगमरमर (श्वेत पत्थर) का एक सुन्दर प्राचीर बना हुआ था।

३७. निशात बाग

शालीमार से २ मील दूर यह भी एक उसी प्रकार का सुन्दर उद्यान है। कहा जाता है कि यह उद्यान, जहाँगीर के प्रधान मंत्री आसफ खाँ ने लगवाया था।

३८. हारी पर्वत

श्रीनगर के पास ही हारी पर्वत की पहाड़ी है। कहा जाता है कि सम्राट् अकबर के समय में काश्मीर में भारी अकाल पड़ा था। उस समय लोगों की आर्थिक सहायता करने के लिए

सम्राट ने एक करोड़ दस लाख की लागत से हारी पर्वत की तल्हटी में एक सुदृढ़ किला बनवाया था। इसमें एक छोटा-सा मन्दिर भी है।

३९. चश्माशाही

यह श्रीनगर से लगभग पाँच मील दूर मीठे जल का एक सुन्दर स्रोत है। इसका जल अत्यन्त शीतल तथा पाचक है। इसके पास ही मुगल सम्राट शाहजहाँ द्वारा लगाया गया एक सुन्दर उद्यान भी है।

४०. झील डल

५ मील लम्बी और २½ मील चौड़ी, निर्मल जल वाली, यह काश्मीर घाटी की एक अत्यन्त सुन्दर झील है। इसमें खिले गुलाबी रंग के कमल, दर्शकों को बरबस ही अपनी ओर खींच लेते हैं। यहाँ पर गगरी बल में बना हुआ फूलों का एक मनोहर पार्क है जो नेहरू पार्क कहलाता है। सायंकाल को यहाँ सैकड़ों ही लोग हाऊस बोटों तथा शिकारों में जल विहार करते दीख पड़ते हैं।

४१. शंकराचार्ज पहाड़ी

श्रीनगर से मिलती हुई एक छोटी-सी पहाड़ी है। मुसलमान इसे तख्ते सुलेमान के नाम से पुकारते हैं। इस पर एक प्राचीन मन्दिर भी बना हुआ है। यहाँ से जेहलम नदी और श्रीनगर का पूरा मानचित्र हथेली पर दिखाई पड़ता है।

४२. मटन

यह भी काश्मीर घाटी का एक प्रसिद्ध तीर्थ है। यहाँ ठंडे जल का एक सुन्दर स्रोत है, जिसमें भिन्न-भिन्न रंगों की मछलियाँ रखी गयी हैं। यह हिन्दू, सिख तथा मुसलमानों का साँझा तीर्थ है। कहा जाता है कि अपनी तिब्बत यात्रा के समय श्री गुरूनानक देव काश्मीर आये थे। आज भी मटन में उनका एक गुरुद्वारा मौजूद है।

४३. चश्मा वेरीनाग

श्रीनगर से ५० मील की दूरी पर, पीर पंजाल पर्वत के ठीक नीचे बनिहाल दर्रे में एक विशाल स्रोत है। काश्मीर की प्रसिद्ध नदी जेहलम भी इस स्रोत से निकलती है। लोगों का विश्वास है कि काश्मीर की सब से प्राचीन पुस्तक नील-मत पुराण यहीं लिखी गयी थी।

४४. अमर कॉलिज

यह काश्मीर की एक प्राचीन शिक्षण संस्था है।

४५. रेनावाड़ी

यह श्रीनगर का ही एक मुहल्ला है। यहाँ पर महिला मिशन हास्पिटल, तथा मिशन कॉलिज दो प्रसिद्ध संस्थाएँ हैं। यहाँ पर एक बड़ी सब्ज़ीमंडी भी है।

४६. सात पुल

जेहलम नदी श्रीनगर को दो भागों में बाँटती है और यह दोनों भाग सात पुलों द्वारा आपस में मिले हुए हैं। इनके

नाम अमीरां कदल, हब्बा कदल, गाव कदल, ज़ैन कदल, फतह कदल, नया कदल व भूरी कदल हैं । 'कदल' काश्मीरी भाषा में पुल को कहते हैं ।

४७. बादामी बाग

श्रीनगर से मिली हुई एक छोटी-सी पहाड़ी पर स्थित है । आजकल भारतीय सेना का एक बड़ा केन्द्र है ।

४८. अमरनाथ

समुद्र तल से लगभग १३ हज़ार फिट की ऊँचाई पर स्थित, श्रीनगर से ९७ मील दूर श्री अमरनाथ जी का भारत प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ है । ५० फिट ऊँची तथा ५० फिट गहरी श्री अमरनाथ जी की गुफा के अन्दर हिम (बर्फ़) से बनी शिव लिंग की एक मूर्ति है जो चन्द्रमाँ के साथ घटती बढ़ती रहती है । श्रावण मास (जुलाई, अगस्त) में पूर्णमासी के दिन इसकी यात्रा आरम्भ होती है, जिसमें भारत के प्रत्येक भाग से हज़ारों हिन्दू यात्री, श्री अमरनाथ जी के दर्शनों के लिए यहाँ एकत्र होते हैं । पहलगाम तक मोटर मार्ग है और इस से आगे भी बनाये जाने का प्रयत्न किया जा रहा है । मार्ग में चन्दन वाड़ी, शेष नाग, पंचतरणी के तीन बड़े पड़ाव पड़ते हैं । यहाँ एक बात विशेष उल्लेखनीय है कि श्री अमरनाथ जी की देखभाल का कार्य कुछ मुसलमान अमीरों के हाथ में है । उनकी इन सेवाओं के फल स्वरूप, भक्तों द्वारा अर्पित चढ़ावे का कुछ भाग उन्हें भी दिया जाता है ।

४९. जामा मस्जिद

यह श्रीनगर की एक प्रसिद्ध प्राचीन मस्जिद है। कहा जाता है कि यह चौदहवीं शताब्दी में सिकन्दर मूर्ति भंजक द्वारा बनवाई गयी थी।

५०. मकबरे-मन्दिर (कुछ प्रसिद्ध तीर्थस्थान)

मखदूम शाह का मकबरा

हारी पर्वत की तलहटी में बना हुआ मुसलमानों का एक अत्याधिक प्रिय तीर्थ (ज़ियारत) है।

चरार शरीफ

श्रीनगर से लगभग २० मील दक्षिण पश्चिम में मुसलमानों का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है, जिसके दर्शनों के लिए हर वर्ष हज़ारों यात्री यहाँ एकत्र होते हैं।

क्षीर भवानी का मन्दिर

श्रीनगर से १४ मील उत्तर की ओर क्षीर भवानी का प्रसिद्ध मन्दिर है। इस मन्दिर में एक झरना है, जिसका पानी कई रंग बदलता रहता है। यहाँ भी प्रति वर्ष जून महीने में एक मेला लगता है।

ज्वालामुखी मन्दिर

श्रीनगर से १४ मील दूर, एक छोटी-सी पहाड़ी पर यह सुन्दर तथा प्रसिद्ध मन्दिर बना हुआ है। इसमें अग्नि की

देवी की मूर्ति स्थापित है। यहाँ भी प्रति वर्ष जुलाई महीने में एक मेले का आयोजन किया जाता है।

कपालमोचन

शोपियाँ के समीप, श्रीनगर से लगभग २४ मील दूर, यह भी एक प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ है, जहाँ मृत बच्चों का श्राद्ध करने के लिए हर वर्ष हज़ारों हिन्दू एकत्र होते हैं। अगस्त मास में यहाँ भी एक भारी मेला लगता है।

९१. काँगड़ी

सर्दी के दिनों में प्रत्येक काश्मीरी घराने में, अतिथि सत्कार करते समय जो चीज़ सर्व प्रथम पेश की जाती है, वह काँगड़ी है। यह बेंत से बनाई हुई एक अंगीठी-सी होती है, जिसमें मिट्टी के एक बड़े से प्याले में सुलगते अंगारे भर कर ऊपर से थोड़ी-सी गरम राख डाल दी जाती है, जिससे कि वे अंगारे बुझ नहीं पाते। यह छः आने से ले कर सवा रुपये तक मूल्य की होती है। यह कहना भूल न होगी कि कड़ाके के जाड़े में निर्धन काश्मीरियों का सब से प्रिय मित्र उनकी काँगड़ी ही हुआ करती है।

"कश्मीर हमारा हम लेंगे"

भारत सरदार पुकारा है, अब गूँज उठा जयकारा है,
ऐलान हुआ नर-नारि सुनें, कश्मीर हमारा हम लेंगे।
यह कश्यप ऋषि की है धरती, मन मोहित दुनिया का करती,
वन, उपवन कर शृंगार खड़े, कश्मीर हमारा हम लेंगे।

वह मुकुट तेरा भारत माता, है शीश पे क्या शोभा पाता,
हम उसके पहरेदार खड़े, कश्मीर हमारा हम लेंगे।
क्यों वीर डोगरे, कश्मीरी, निकलें न रक्षा को तेरी,
देना जीवन घर बार पड़े, कश्मीर हमारा हम लेंगे।

करने न देंगे मनमानी, क्यों अकड़ रहा पाकिस्तानी,
लड़ना चाहे सौ बार पड़े, कश्मीर हमारा हम लेंगे।
लाखों सैनिक तय्यार खड़े, नौबत पर ज्यों ही मार पड़े,
हर कान में यह ललकार पड़े, कश्मीर हमारा हम लेंगे।

न छेड़ हमें पछतायेगा, जो पाप किये फल पाएगा,
अब भारत की सरकार बढ़े, कश्मीर हमारा हम लेंगे।
है प्रतिज्ञा यह वीरों की, निर्भीक सभी रणधीरों की,
बस थामे हैं तलवार खड़े, कश्मीर हमारा हम लेंगे।

काश्मीर के शत्रु को भारत की वारनिंग

गाँधी जी की सत्य-अहिंसा का जो लिये सहारा है,
सदियों से जो देता आया, हरदम साथ हमारा है,
अंग अटूट है अपना, जननी की आँख का तारा है,
प्रकृति ने अपने हाथों से जिसको खूब सँवारा है,
भारत के कण-कण से गूंजे आज यही जयकारा है,
मातृभूमि का शिरोमुकुट जम्मूं-कश्मीर हमारा है ।।

लद्दाखी, कश्मीरी कह दें, क्या इसकी सन्तान नहीं,
वीर डोगरे लुटने देंगे, क्या माता की आन कहीं,

युद्ध क्षेत्र में जिन रणवीरों की शमशीरें चमक रहीं,
इसको टेढ़ी आँख जो देखे खींच लेंगे बस प्राण वहीं,
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सब का इक ही नारा है,
मातृभूमि का शिरोमुकुट जम्मूँ-कश्मीर हमारा है ॥

अमरीका के हथियारों से, किसे डराता दीवाने,
तेरी गीदड़ भभकी से अब, कौन लगा है घबराने,
कूद पड़े जब समराँगण में झूम झूम रण मस्ताने,
प्रलय मचेगी, धरती यह आकाश लगेगा थर्राने,
लाखों वीरों ने हँस हँस कर जिस पर जीवन वारा है,
मातृ भूमि का शिरोमुकुट जम्मूँ कश्मीर हमारा है ॥

गाज़ी तेरे देख लिये हैं, उनका डर मत दिखलाना,
यहाँ खड़े हैं साँगा, बन्दा, श्री गोविन्द, शिवा, ताना,
पहन चूड़ियाँ नहीं हैं बैठे, पहना केसरिया बाना,
बच्चा-बच्चा तेग बहादुर, छत्रसाल, नलुवा, राणा,
समय है अब भी होश में आ जा, वीरों ने ललकारा है,
मातृ भूमि का शिरोमुकुट जम्मूँ-कश्मीर हमारा है ॥

तरकश के सब तीर तुम्हारे, तुम पर ही होंगे खाली,
बैठे हैं तय्यार पंजाबी, राजस्थानी, बंगाली,
गुजराती, सिन्धी,आसामी, वीर बिहारी, नेपाली,
पूरबिये, उड़िया, मरहट्टे, तामल, तिलगू, मलयाली,
मूरख किस बलबूते पर तू, नाहक का हठ धारा है,
मातृ भूमि का शिरोमुकुट जम्मूँ-कश्मीर हमारा है ॥

शान्ति भंग करना चाहो जो, कर के अपनी मनमानी,
हमला इस पर करने की गर तुमने हो मन में ठानी,
देते हैं निर्भीक चुनौती, मत करना यह नादानी,
दूध पिला देंगे छट्टी का, रो-रो याद करे नानी,
भारत के बच्चे-बच्चे ने यही वीर व्रत धारा है,
मातृभूमि का शिरोमुकुट जम्मूँ-कश्मीर हमारा है ॥

शुद्धि-पत्र

पृ.-सं.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१९	वाटिकाओं में व अन्य	वाटिकाओं में कमलों व अन्य
७	१४	लद्दाख प्रान्त	नोट :–अब यह पृथक् प्रान्त न रह कर काश्मीर प्रान्त का ही एक ज़िला बना दिया गया है।
१६	११	(भद्रवाही) हंत्थ	हत्थ
१६	१४	(काश्मीरी) मोल्लू	मोल्ल्
१६	१५	(डोगरी) शट्ठ	सट्ठ
२२	१५	बठोत	बटोत
२४	२२-२३	कहा है	कहा जाता है
३०	४-५	रणवीर सिंह दंड-विधि	रणवीर दंड-विधि
४६	२३	घोषण	घोषणा
४६	२४	बना कर अनेक प्रकार	बना कर राज्य में अनेक प्रकार
५१	१	उनके इन	इन
५४	६	सत्याग्राहियों	सत्याग्रहियों
५७	३	काश्मीर लिए	काश्मीर के लिए
५९	१	न्यायोजित	न्यायोचित
७८	१	राज्य, नाम	राज्य के नाम
७८	१	साहब के का जन्म	साहब का जन्म
९६	१५	जम्मूँ को बनाए रखना	को बनाए रखना
११८	२१	श्रीगर	श्रीनगर
१२५	८	स्यान	स्थान
१२५	९	अन्न्य	अन्य

प्रकाशक के अतिरिक्त पुस्तक यहाँ से भी प्राप्त की जा सकती है :—

श्री कोतवाल कृपाराम

जनरल मर्चन्ट्स. एण्ड न्यूज़पेपर एजेंट

सेरी बाज़ार भद्रवाह

डाकघर—भद्रवाह

(जम्मूँ-काश्मीर राज्य)